क्रमशः कम होती जा रही है। मेरी एन इवेन्स का उपनाम जॉर्ज इलियट था और इसी उपनाम से वे साहित्य रचना करती रहीं। उन्होंने पहले पहल स्ट्रॉस लिखित 'लिवेन जेसू' का अनुवाद किया और 'वेस्ट मिन्स्टर रिव्यू' पत्रिका की सहायक संपादिका बहुत काल तक रहीं। उनका विवाह जी० एच० लुई से हुआ था और लुई के ही उत्साहित करने से उन्होंने उपन्यास रचना आरम्भ किया था। जॉर्ज इलियट की रुचि दर्शन शास्त्र में अधिक थी परन्तु उपन्यास रचना में वे इसका समुचित प्रयोग न कर पाईं।

१८५७ ईस्वी में इलियट की पहली रचना 'सीन्स ऑव क्लेरिकल लाइफ़' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के प्रकाशित होते ही उनकी ख्याति बढ़ने लगी और 'एडम बीड' (१८५६) लिखने के बाद उनकी गणना श्रेष्ठ कलाकारों में होने लगी। इस पुस्तक में इंगलिस्तान के ग्रामीण जीवन की सरल कथा है। इसके पात्र यथार्थ जीवन से लिए गए हैं और भावनाओं के द्वन्द्व में लेखिका ने मधुर हास्य का प्रयोग किया है। एडम बीड, हेटी सॉरेल, डीना, सभी पात्र यथार्थ ही नहीं वरन हृदय ग्राही भी हैं। 'मिल ऑन दि फ़्लॉस' (१८६०) में उन्होंने एक घर के भाई बहिन की बड़ी सरल कथा का वर्णन किया और 'साइलस मार्नर' (१८६१) में भी ग्रामीण जीवन के वातावरण का प्रयोग किया जिसमें प्रेम और लोभ के अनेक संघर्षमय चित्र मिलते हैं। जॉर्ज इलियट ने भी 'रोमोला' (१८६३) नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का असफल प्रयत्न किया था। इस पुस्तक में इटली के पुनर्जागृति के चित्रण का प्रयास है। सामाजिक उपन्यासों में 'फेलिक्स होल्ट' (१८६६) की गणना है परन्तु इसमें लेखिका की स्वच्छन्दता अवरुद्ध हो गई है। उनकी सबसे सफल कृति 'मिडिल मार्च' (१८७२) ई० में प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने समकालीन वंशों के संघर्ष की सुरुचिपूर्ण अभिव्यक्ति की है। जॉर्ज इलियट ने उपन्यास के कथानक-स्थलों को विस्तृत किया और पात्र चित्रण में विश्लेषण शक्ति को अधिक महत्व दिया।

ऐन्थनी ट्रॉलप—इलियट के समकालीन ऐन्थनी ट्रॉलप (१८१५-८२) ने यद्यपि उपन्यास कला में कोई विशेष प्रगति न की तिस पर भी उनकी कला में वर्णन शक्ति, कल्पना तथा चरित्र चित्रण प्रचुर मात्रा में है। ईसाई धर्म के पादरियों के जीवन का उन्हें पूर्ण अनुभव था और इसी

प्रकाशकीय

श्रीमान बड़ौदा नरेश सर सयाजीराव गायकवाड़ महोदय ने बम्बई के अधिवेशन में स्वयं उपस्थित होकर जो पाँच सहस्र रुपए की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी उसी से सम्मेलन इस उपयोगी सुलभ-साहित्य-माला के प्रकाशन का कार्य कर रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक 'अँग्रेज़ी साहित्य का इतिहास' इसी 'माला' के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है। इसके लेखक डॉक्टर एस० पी० खत्री प्रयाग विश्वविद्यालय में अँग्रेज़ी के अध्यापक हैं। अँग्रेज़ी साहित्य के इतिहास में प्रविष्ट होकर उन्होंने इस ग्रन्थ में उसकी प्रवृत्तियों को सुबोध तथा संक्षिप्त रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया है। आशा है, हिन्दी जगत् डॉक्टर खत्री की इस अध्ययनपूर्ण कृति का समादर करेगा।

साहित्य-मंत्री

२६ कार्तिक, २००४

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
७	६	इनके	उनके
६	१२	व्हिट्‌न	व्हिट्नी
११	२०	यर्णन	वर्णन
१४	१६	थिस्वी	थिस्नी
१४	१६	फ़ाइलोंमीला	फ़ाइलोमीला
१५	११	लल्दन	लन्दन
१६	२६	लिगनेट	लिडगेट
१८	२३	परन्तु	भविष्य में
२५	२४	देश प्रेम	देश प्रेम तथा
२८	१६	लिए	लिए भी
२८	२१	उनके	वॉलर के
३६	१६	संरत्तकों	संरत्तकों
४२	१४	दिव्य	दिव्य
४४	१४	पाँचवाँ	चौथा
४६	१०	कपना	कल्पना
४८	१०	शताव्दी	शताब्दी
४६	२४	फ़िट्‌ज़ेरेन्ड	फ़िट्ज़ेरेल्ड
५१	२४	प्रॉसरपीन	प्रॉसरपीन
५४	२१	निर्देर्श	निर्देस
६५	२८	रहीं	रहीं
६६	६	इन्टरलूड्स	इन्टरलूड्स
६७	१६	सबसे पहले यहीं हुए	यहां
७५	७	माग	भाग
१०३	२	नाटक	उपन्यास
१०७	१६	पुत्सक	पुस्तक
१०७	३१	उत्तर्रार्थ	उत्तरार्थ
१०८	२४	स्थलो	स्थलों
१०८	२८	बनियन में	ने
१०८	३१	लेखकों	लेखकों

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
१०६	३१	फ़ैर्नेनडज़	फ़र्नेन्डज
११३	१८	राजनीतिक	राजनीतिज्ञ
११४	१४	श्रष्ठ	श्रेष्ठ
१३५	८	उपत्यास	उपन्यास
१३७	२४	मेकियावे ली	मेकियावे ली
१४०	५	फ्रॉर्सटर	फ़ॉर्सटर
१५६	८	फ्रेविल्स	फ़ेविल्स
१५७	१७	उत्तरार्घ	उत्तरार्ध
१५८	१६	ब्रुवरा	बुवस
१६०	१२	एतिहासिक	ऐतिहासिक
१६१	२६	निर्भयता पर्वक	निर्भयतापूर्वक
१६२	८	के	को
१६२	३१	नर्क	नर्क
१६६	२६	फ्रैंमिस	फ्रैंसिस
१६६	३०	कवियाँ	कवियों के
१६७	२१	डाविन	डार्विन
१७०	२०	दार्शनिक	दार्शनिक
१७०	२२	वार्नर्ड	बर्नर्ड

अपने भाई

डी० पी० खत्री

की

स्मृति

में

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

दूसरा खण्ड—नाटक

तीसरा-खण्ड—उपन्यास

चौथा खण्ड—गद्य

वॉलपोल—लार्ड चेस्टरफ़ील्ड—जेम्स मैक्फ़र्सन—‘ऑसियन’—कोलरिज—‘बायोग्रेफ़िया लिटरेरिया’—लॉर्ड बायरन—लैम्ब—विलियम हैज़लिट—टॉमस डि क्विन्सी—विलियम कॉबेट—वॉल्टर सैवेज लैन्डॉर—‘कानवर्सेशन्स’—सामयिक पत्र—चार्ल्स डार्विन—मेकॉले—हेनरी न्यूमन जॉन रस्किन—मैथ्यू आरनल्ड—वॉल्टर पेटर—जी० के० चेस्टरटन—लिटन स्ट्रैची।

दो शब्द

यूरोप के साहित्यिक इतिहास में अँग्रेज़ी भाषा तथा अँग्रेज़ी साहित्य का विशिष्ट स्थान है। इस साहित्य ने अपने निर्माण में, यद्यपि अपने आस-पास के देशों का ऐतिहासिक तथा साहित्यिक प्रभाव ग्रहण किया परन्तु फिर भी अपना निजी व्यक्तित्व न छोड़ा। फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस, अमेरिका तथा अन्यान्य देशों के राजनीतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय भावनाओं तथा विचार-शैली को अँग्रेज़ी साहित्य ने अपने में इतना घुला मिला लिया है कि अब कठिनता से भी इन्हें पृथक कर सकेंगे।

यूरोप के साहित्यिक महारथियों ने अँग्रेज़ी साहित्य की इस विशेषता की भूरि भूरि प्रशंसा की है। जर्मन लेखक गटे ने तो यहाँ तक कहा था कि 'अँग्रेज़ी साहित्य तथा अँग्रेज़ी भाषा में अथाह विचार-सागर लहराता है; उसके ही प्रभाव से जर्मन साहित्य ने अपनी रूपरेखा बनाई है।' पूर्व में, भारतीय हिन्दी साहित्य पर, संस्कृत की छाया बहुत दिनों तक रही। इसी छाया में हिन्दी-साहित्य फूला फला परन्तु आधुनिक काल में संस्कृत का स्थान हिन्दी-साहित्य निर्माण के लिये बदला गया और अन्य भाषाओं ने उसका स्थान ले लिया। अँग्रेज़ी साहित्य ही इस नव विधान की मूल धारा प्रतीत होती है। इस साहित्य के प्रभाव का प्रथम दर्शन बंगला साहित्य में मिलता है। शायद यह अत्युक्ति न होगी कि कवि-सम्राट् रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा बंकिमचन्द्र चटर्जी जैसे महान लेखकों की लेखन-शैली में अँग्रेज़ी साहित्य की स्पष्ट छाया दिखलाई देती है। बंगला साहित्य के साथ-साथ मराठी तथा गुजराती साहित्य ने भी अँग्रेज़ी साहित्य के प्रभावों को व्यक्त और अव्यक्त रूप से ग्रहण कर अपना साहित्य निर्मित किया है। आजकल हिन्दी साहित्य-जगत भी अँग्रेज़ी साहित्य की विचार-शैली, लेखन-शैली तथा शब्द-भण्डार से अपना अमर कोष भर रहा है। दिन पर दिन वह कोष भरा पूरा हो रहा है।

भारतीय साहित्य के सभी अंगों पर अँग्रेज़ी साहित्य-सूर्य की प्रखर किरणें पड़ी हैं। दर्शन तथा राजनीति, समाज-शास्त्र तथा अर्थ-शास्त्र, सभी ने कुछ न कुछ मात्रा में अँग्रेज़ी आदर्शों को या तो सराहा है या अपनाया है। हमारी साहित्यिक विचार-धारा तो वास्तव में अँग्रेज़ी साहित्यिक आदर्शों की पूर्ण अनुयायी हो रही है। उपन्यास और नाटक, कहानी और एकांकी, काव्य और गद्य, गीत तथा लेख, आलोचना तथा शैली, दिन प्रतिदिन अंग्रेज़ी साहित्य की ही बहुमुखी प्रतिभा के सहारे अपना मार्ग ढूंढ़ रहे हैं।

भारतीय जीवन पर अंग्रेज़ी आचार-विचार, भाव-विनिमय तथा रहन-सहन ने गहरा प्रभाव डाला है। राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में तो यह प्रभाव सर्वत्र ही विदित है। आधुनिक शिक्षा में यद्यपि अंग्रेज़ी भाषा का महत्व बहुत कुछ घट रहा है और घटेगा परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अंग्रेज़ी साहित्य का प्रभाव बहुत दिनों तक स्थायी रहेगा। इसका कारण यह है कि शिक्षा-माध्यम से अंग्रेज़ी भाषा हटकर हिन्दी को स्थान तो एक दिन अवश्य ही देगी, परन्तु वह विद्यार्थियों और साहित्य मर्मज्ञों और अन्वेषकों की उत्सुकता इतनी अधिक बढ़ाती रहेगी कि कदाचित् उसका प्रभाव और भी गहरा होता जायगा। विदेशों से विचार विनिमय और आदान-प्रदान में भाषा फिर भी उपयोगी सिद्ध होगी और शायद साहित्य निर्माण में उसका विशिष्ट स्थान रहेगा। परन्तु यह कहना कि अंग्रेज़ी भाषा और अंग्रेज़ी साहित्य ही संसार में सर्वश्रेष्ठ है भारी भूल होगी। प्रत्येक देश को अपनी भाषा और अपना साहित्य ही श्रेष्ठ जंचेगा: और यह ठीक भी है, क्योंकि बिना इस भावना के न तो भाषा प्रगति कर सकती है और न साहित्य ही उन्नत हो सकेगा। रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन, अँग्रेज़ सभी अपने अपने साहित्य की आराधना और सराहना करते हैं, मगर साहित्य मर्मज्ञ अथवा आलोचक को तो ऐसी असाहित्यिक विचारा धारा से अलग रह कर उनकी श्रेष्ठता की परख करनी चाहिये।

यदि इस दृष्टि से देखा जाय तो सभी देशों के साहित्य में कुछ न कुछ अपूर्व श्रेष्ठता मिलेगी। जर्मन साहित्य में दर्शन उच्च कोटि का है: शायद अन्य साहित्यों में संस्कृत दर्शन-साहित्य ही उसकी समता कर सके;

फ्रांसीसी साहित्य में उच्च कोटि की सुखान्तकी[1] तथा उत्कृष्ट प्रहसनों का दिग्दर्शन है; रूसी साहित्य में उपन्यास तथा कहानी कला की पराकाष्ठा पहुँच रही है, परन्तु साहित्य के अन्य अंगों की श्रेष्ठता हम यदि जर्मन, फ्रांसीसी तथा रूसी साहित्य में पाना चाहें तो यह सम्भव नहीं। अंग्रेजी साहित्य में ही सम्भवतः साहित्य के सभी अंगों की समुन्नत छटा हम देख पायेंगे। हम इस साहित्यिक प्रासाद में यथा स्थान दर्शन, इतिहास, काव्य, नाटक, उपन्यास, गद्य, आलोचना सभी का यथार्थ दर्शन पायेंगे। मिल तथा लॉक; बर्क, गिबन, कार्लाइल; चॉसर, मिल्टन, वर्ड्सवर्थ; शेक्सपियर शेरिडन, शॉ; फील्डिंग, स्कॉट, डिकेन्स; बेकन, जॉनसन, गैरिक, ड्राइडेन, आर्नल्ड, पेटर, इस साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं।

अंग्रेजी साहित्य की इस बहुमुखी प्रतिभा में ही उसके अमरत्व के बीज हैं। इस साहित्य के प्रवाह को उचित रीति से समझने के लिए बिना देशाटन और अध्ययन के कोई और साधन नहीं। अध्ययन ही शायद सबसे सरल युक्ति है जिसके द्वारा हम घर बैठे ही संसार के अनेक देशों का सम्पूर्ण दर्शन कर सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी इसी विचार से लिखी गई है और इसी ध्येय की पूर्ति, ऐसा विश्वास है, करेगी।

हिन्दी भाषा में भारत के अन्य साहित्यों बंगला, मराठी, गुजराती का इतिहास प्रस्तुत है, किन्तु अब तक अंग्रेजी साहित्य का इतिहास कदाचित् नहीं लिखा गया। उन विद्यार्थियों तथा साहित्य-सेवियों को यह पुस्तक प्रिय हो सकेगी जो अंग्रेजी साहित्य की विचार धाराओं और अंग्रेजी कलाकारों का परिचय मातृ-भाषा के द्वारा ही प्राप्त करना चाहेंगे। पाठकों को साहित्य के चार प्रमुख अंगों—काव्य, नाटक, उपन्यास तथा गद्य का सम्पूर्ण तथा पृथक्-पृथक् परिचय देने के लिए इसके चार भाग कर दिए गए हैं। अंग्रेजी साहित्य के श्रेष्ठ इतिहासकारों—लेग्वी, सेन्ट्सबरी, इवन्स, स्ट्रॉग तथा लॉग सबसे पूरी सहायता ली गई है और केवल थोड़े पृष्ठों में ही यथासाध्य साहित्यिक धाराओं और उनके पोषक और प्रवर्तक कलाकारों का परिचय देने की चेष्टा की गई है।

आशा है इस पुस्तक से हिन्दी साहित्य जगत की एक कमी कदाचित् पूरी होगी। जब तक श्रेष्ठ विद्वान हिन्दी का माध्यम चुन कर अंग्रेजी

१—कॉमेडी।

साहित्य के एक विशाल और सम्पूर्ण इतिहास की रचना कर उसका भण्डार भर देंगे।

मैं अपने मित्र डॉक्टर लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समयानुकूल अनेक रूप से इस पुस्तक के लिखने में सहायता दी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, के ही सौजन्य से यह पुस्तक पाठकों के सम्मुख है।

इलाहाबाद युनिवर्सिटी, एस० पी० खत्री
अक्टूबर १९४७

पहला खण्ड

कविता

पहला अध्याय

इंगलिस्तान का प्राचीन समाज

साहित्य और समाज—समाज और साहित्य का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज ही के साहित्य का रूप रेखा बनता है और समाज के सभी अंगों का पूर्ण चित्र साहित्य में प्रतिबिम्बित रहता है। यदि हम किसी देश के साहित्य को पूर्ण रूप से समझना चाहें तो हमें उस देश के समाज का सर्वांगीण अध्ययन करना पड़ेगा क्योंकि समाज के ही आचार विचार, रीति-रिवाज और रहन-सहन, साहित्य में अंकित रहते हैं।

इंगलिस्तान का आदि समाज—इंगलिस्तान के आदि निवासियों का समाज भी अन्य पुराने देशों के समान असभ्य तथा बर्बर था। देश की आदि जाति का नाम 'केल्ट' था और इसी की दो उपजातियों ने पश्चिमी यूरोप पर अपना अधिकार जमा रखा था। 'केल्ट' जाति की यों तो अनेक उपजातियाँ थीं परन्तु मुख्य केवल 'गेल' तथा 'सिमरी' थीं। 'गेल' प्रकृति-पूजक थे उन्हें ज्योतिष से भी प्रेम था और ऐतिहासिक दृष्टि से ये कुछ निम्न श्रेणी के जर्मन जाति के वंशज प्रतीत होते हैं। इन्होंने उत्तर की अन्य उपजातियों से युद्ध कर उन्हें हराया परन्तु धीरे-धीरे वे भी उन्हीं में घुल-मिल गए।

'सिमरी' जाति का उत्थान 'गेल' जाति के बाद हुआ। ये लोग सामाजिक दृष्टि से अधिक असभ्य थे और इनकी सभ्यता निकृष्ट कोटि की थी। ये भ्रमण करते, शरीर पर गोदने बनाते और मांसाहार करते थे और ये खेती से अनभिज्ञ थे। कदाचित् फिनीशिया की प्राचीन व्यापारी जाति से इनका सम्पर्क हुआ होगा क्योंकि ये व्यापारी कॉर्नलैन्ड के टीन की खदानों के पास ही व्यापार करते थे। यदि किसी विदेशी जाति से इनका सम्बन्ध प्रमाणित है तो वह रोमन जाति से है।

रोमन जाति का प्रभाव—रोमन लोगों ने ५५ पूर्व ईसा में इंगलिस्तान पर आक्रमण किया। रोमन सेनापति जूलियस सीज़र ने गेल जाति को फ्रांस में पूर्णतया पराजित कर वहाँ अपनी विजय पताका फहराई। फ्रांस के पश्चिमी भाग से उन्होंने इंगलिश चैनेल के पार जब दृष्टि डाली तो इंगलिस्तान के कुछ ऊँचे पर्वत शिखर उन्हें दिखलाई पड़े। उन्होंने सोचा शायद पृथ्वी के विस्तार का अन्त वहीं हो और इंगलिस्तान पर धावा बोल दिया। रोमन सेनापति की विजय हुई और उन्होंने सारा देश अपने आधीन कर लिया।

इस समय इंगलिस्तान का राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन 'गेल' जाति के ही समान था। रहन-सहन, रीत-रिवाज भी उन्हीं के समान थे। दोनों की बोलियों में भी विशेष समानता थी।

रोमन लोगों ने यद्यपि इंगलिस्तान पर अधिकार तो कर लिया परन्तु वहाँ के निवासियों पर पूर्ण अधिकार जमाने में एक शताब्दी का समय लग गया। अन्त में रोमन सेना की श्रेष्ठता तथा उसके विशाल संगठन की जीत हुई। इंगलिस्तान रोमन साम्राज्य का एक प्रदेश बना लिया गया। इस साम्राज्य का विस्तार स्कॉटलैन्ड के नीचे मैदानों और डोवर स्ट्रेट से लेकर फ़र्थ ऑव फ़ोर्थ तक था। परन्तु वेल्स की कुछ पहाड़ियाँ पराजित न हो पाई थीं। ४८० वर्षों तक इंगलिस्तान की यही दशा रही।

रोमन लोगों ने इस समय के अनन्तर बहुत सी सड़कें बनाईं और बहुत से नगर बसाए। ये सड़कें अब भी हैं परन्तु इनके पुराने नाम बदल दिए गए हैं। इस समय की सबसे लम्बी सड़क अरमाइन स्ट्रीट अब ओल्डनॉर्थ रोड के नाम से विख्यात है। इन सड़कों के कारण नगरों में सम्पर्क बढ़ा और इस सम्पर्क के कारण सारे देश में रोमन जाति की लैटिन भाषा का भी प्रयोग बढ़ा। फ्रांस में तो लैटिन ने देश भाषा का स्थान ले लिया था। अब इंगलिस्तान में भी उसका प्रचार बढ़ने लगा। इस प्रचार के कारण लैटिन ही सभ्य भाषा मान ली गई परन्तु दूसरी ओर वेल्स और कम्ब्रिया की 'केल्ट' जाति और स्कॉटलैन्ड की 'पिक्ट' जाति के लोग दुर्भेद्य पर्वत-श्रेणियों के पीछे अपना स्वतंत्र शासन कर रहे थे। रोम के सैनिक इनको परास्त न कर पाए। फलतः इन जातियों ने अपनी विशेषताएँ न छोड़ीं। जब-जब उन्हें

तक सिलना से निकट के प्रदेशों तक भाषा फैली। परन्तु इन जंगली जातियों की भाषा भी लैटिन के प्रभाव से मुक्त न रह सकी। अनेक स्थानों के रोमन नाम इन्होंने अपनाए। आधुनिक वेल्स की बोली में अनेक लैटिन शब्द भग्न-रूप में हैं। लैटिन भाषा की इन पर पूर्ण छाप है।

इन जंगली जातियों ने अपनी एक अलग टोली बना ली थी और रोमन सभ्यता से अपने को पृथक रखने का प्रयत्न करते थे। अपने उन सब देशवासियों को भी इन्होंने अलग ही रखा जो रोमन प्रदेशों में रहते थे। इनकी लूट मार इतनी बढ़ी कि रोमन लोगों को अनेक फ़ौजी अड्डे बनाने पड़े और 'नार्थम्ब्रियन वॉल' बनानी पड़ी। परन्तु इन रोमन प्रदेशों के रहने वालों को शान्ति न मिली। वे रोम से सहायता की प्रतीक्षा करते थे और स्वयं अपनी रक्षा जंगली जातियों के विरुद्ध नहीं कर सकते थे और जब जब रोमन सेनाएँ उनकी रक्षा के लिए आतीं तब तब वे जंगली जातियाँ घोर युद्ध करतीं जिसमें जनता को बड़ा कष्ट होता था। रोमन प्रदेशों के रहने वाले, इतने दिनों तक आधीन रहने के कारण साहसहीन हो गए थे। दासत्व ने उन्हें कायर बना दिया था और उनकी स्वाभाविक निर्भीकता खो गई थी। कुछ समय तक तो रोम की सरकार ने इन प्रदेशों की सहायता की परन्तु कुछ दिनों बाद वे अपने प्रदेशों को न संभाल सके। रोमन साम्राज्य एक कठपुतली के समान हो रहा था और सभी साहसी सेनानायक उस पर अधिकार पाने के स्वप्न देखते थे। रोमन स्वयं पतित तथा दुर्बल हो गए थे और ऐसे समय में इंगलिस्तान की जंगली जातियों को प्रतिशोध लेने का सुनहरा अवसर मिला।

ये जातियाँ रोमन प्रदेशों से बहुत क्रुद्ध थीं क्योंकि उन्होंने रोमनों की दासता ग्रहण कर ली थी। इससे भी अधिक वे इस बात पर क्रोधित थीं कि इन प्रदेशों ने जंगली जातियों को परास्त करने में रोमनों का सहर्ष हाथ बटाया था। 'पिक्ट' और 'स्कॉट' जाति के लुटेरे नीची घाटियों में अवसर पाकर उतर आते और अपने देश-वासियों के घात का पूरा प्रतिशोध लेते थे। अपनी लूटमार तथा आक्रमणों से इन्होंने प्रदेश के प्रदेश उजाड़ दिए और रोमन सभ्यता का एक भी स्मारक नहीं खड़ा रहने दिया। इस लूटमार और रक्तपात

भय, कभी हास्य, कभी आशा, कभी निराशा के भाव उदय तथा अस्त होते रहते थे।

इस समय वेल्स के निवासियों में धार्मिक भावनाओं का स्रोत उमड़ पड़ा। जिसमें ग्लानि तथा विषाद दोनों की स्पष्ट मात्रा था। पहाड़ियों के अन्य निवासियों ने वेदना पूर्ण करुण स्वर से आधुनिक साहित्य को जन्म दिया।

केल्ट, तथा अन्य स्कॉटिश बोलियों ने अंग्रेजी को लैटिन के प्रभाव से यथासम्भव दूर रखा। उन्हीं बोलियों में आधुनिक ग्रामीणों का बीज था जिसे सौन्दर्य भावना के लेखकों ने संशोधित तथा परिमार्जित करके साहित्य रचना की।

—:o:—

दूसरा अध्याय

ऐंग्लो-सैक्सन-साहित्य

जन्म-काल— अंग्रेजी साहित्य का प्रारम्भ इतिहास-वेत्ता प्रायः महाकवि चॉसर से मानते हैं। वैसे तो चॉसर से पहिले कदाचित छः शताब्दियों तक का साहित्य प्राप्त है किन्तु इस साहित्य से हम अब तक कुछ अनभिज्ञ हैं। इसका कारण यह है कि इस साहित्य का पठन-पाठन दुष्कर है और इसकी भाषा नितान्त विदेशी जान पड़ती है। आधुनिक विद्यार्थी चॉसर की रचनाएं सरलता से पढ़कर उनका अर्थ लगा लेता है परन्तु चॉसर के पूर्व की साहित्यिक रचनाएं केवल अनुवाद-रूप में ही प्राप्त हैं।

ऐंग्लो-सैक्सनगाथा-काल—नॉरमन आक्रमण के पूर्व इंगलिस्तान के इतिहास में दो विशेष घटनायें घटित हुईं, जिनके कारण देश के साहित्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। पहली घटना थी, ऐंगिल्स, सैक्सन तथा जूट जातियों पर नॉरमन जाति का आक्रमण, जिसने अंगरेजी इतिहास की नींव डाली। ये जातियाँ अधिक सभ्य न थीं और जब ये लूट-मार और आक्रमण पर प्रस्तुत होतीं तो घोर बर्बरता प्रदर्शित करतीं। ये बर्बर जातियाँ ईसाई धर्म से अनभिज्ञ थीं। दूसरी घटना ५९७ ई० में हुई जब सि. सन्त ऑगस्टाइन ने ईसाई धर्म की पताका फहराई और अंग्रेज जाति को ईसाई-मतावलम्बी बनाया। केन्ट प्रदेश की जूट जाति ने सबसे पह

नामक काव्य के दो स्फुट खंड जो मूलरूप में 'बियोवुल्फ' के समान रहे होंगे १८६० ईसवी में कोपेनहेगन के राज-पुस्तकालय में मिले।

'बियोवुल्फ' का वातावरण—'बियोवुल्फ' अंग्रेजी साहित्य का प्रथम ग्रन्थ है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान से कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है। यद्यपि एंग्लिस ने इस कथानक को इंगलिस्तान में प्रचलित किया फिर भी यह इनके जीवन से सम्बन्धित नहीं। यह कथानक स्कैन्डिनेविया देश का है। इसका एक कारण यह था कि यद्यपि जर्मनों की अनेक उपजातियाँ आपस में लड़ा करती थीं फिर भी ये लोग एक दूसरे की काव्य-गाथाओं और कथानकों से अरुचि प्रकट नहीं करते थे वरन् उन्हें शीघ्र अपना लेते थे। उनके कवि महान् जर्मन जाति के स्वप्न देखते और उसके गीत गाते थे।

'बियोवुल्फ' का कथानक—'बियोवुल्फ' की कहानी रोचक है। डेन जाति के न्यायप्रिय नरेश ह्रॉथगार को ग्रेंडेल नामक दैत्य अत्यन्त कष्ट दे रहा था। वीर बियोवुल्फ अपने चुने हुए सहायकों के साथ, नगर में आकर ग्रेंडेल को परास्त करता है और ग्रेंडेल की माता को भी जो समुद्र की गुफा में रहती है मौत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है। कथानक के दूसरे खण्ड में, 'बियोवुल्फ' राज्य-शासन करता है, परन्तु वह अत्यन्त वृद्ध है। उसे राज्य-रक्षा में अग्नि-वर्षा करते हुए दैत्य से युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो विलाप करती है। यहीं कहानी समाप्त हो जाती है। कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्त्वहीन है परन्तु 'बियोवुल्फ' में उस समय की वीरता, कर्त्तव्य-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, सुरापान, वीर-गाथा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है।

'बियोवुल्फ' का छन्द—समस्त एंग्लो-सैक्सन कविताओं के समान 'बियोवुल्फ' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है। पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छटा है। कवि का भाषा-कोष विस्तृत है और उसमें विशेष शब्दावली है। चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है। "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "अस्थि-प्रासाद"। यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अदीक्षित जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

नामक काव्य के दो स्फुट खंड जो मूलरूप में 'बियोवुल्फ' के समान रहे होंगे १८६० ईसवी में कोपेनहेगन के राज-पुस्तकालय में मिले।

'बियोवुल्फ' का वातावरण—'बियोवुल्फ' अंग्रेजी साहित्य का प्रथम काव्य है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान से कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है। यद्यपि ऐंग्लिस ने इस कथानक को इंगलिस्तान में प्रचलित किया फिर भी वह उनके जीवन से सम्बन्धित नहीं। यह कथानक स्कैन्डिनेविया देश का है। इसका एक कारण यह था कि यद्यपि जर्मनों की अनेक उपजातियाँ आपस में लड़ा करती थीं फिर भी वे लोग एक दूसरे की काव्य-गाथाओं और कथानकों से अरुचि प्रकट नहीं करते थे वरन् उन्हें शीघ्र अपना लेते थे। उनके कवि महान् जर्मन जाति के स्वप्न देखते और उसके गीत गाते थे।

'बियोवुल्फ' का कथानक—'बियोवुल्फ' की कहानी रोचक है। डेन जाति के न्यायप्रिय नरेश ह्रॉथगार को ग्रेंडल नामक दैत्य अत्यन्त कष्ट दे रहा था। वीर बियोवुल्फ अपने चुने हुए सहायकों के साथ, नगर में आकर ग्रेन्डेल को परास्त करता है और ग्रेन्डेल की माता को भी जो समुद्र में रहती है मौत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है। कथानक के दूसरे खण्ड में, 'बियोवुल्फ' राज्य-शासन करता है, परन्तु वह अत्यन्त वृद्ध है। उसे राज्य-रक्षा में अग्नि-वर्षा करते हुए दैत्य से युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो विलाप करती है। यहीं कहानी समाप्त हो जाती है। कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्वहीन है परन्तु 'बियोवुल्फ' में उस समय की वीरता, कर्त्तव्य-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, सुरापान, वीर-गाथा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है।

'बियोवुल्फ' का छन्द—समस्त ऐंग्लो-सैक्सन कविताओं के समान 'बियोवुल्फ' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है। पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छटा है। कवि का भाषा-कोष विस्तृत है और उसमें विशेष शब्दावली है। चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है। "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "अस्थि-प्रासाद"। यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म से अदीक्षित जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

नामक काव्य के दो स्फुट खंड जो मूलरूप में 'बियोवुल्फ' के समान ही होंगे १८६० ईसवी में कोपेनहेगन के राज-पुस्तकालय में मिले।

'बियोवुल्फ' का वातावरण—'बियोवुल्फ' अंग्रेजी साहित्य का प्रथम ग्रन्थ है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान से कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है। यद्यपि ऐंग्लिज्स ने इस कथानक को इंगलिस्तान में प्रचलित किया फिर भी वह इनके जीवन से सम्बन्धित नहीं। यह कथानक स्कैन्डिनेविया देश का है। इसका एक कारण यह था कि यद्यपि जर्मनों की अनेक उपजातियाँ आपस में लड़ा करती थीं फिर भी ये लोग एक दूसरे की काव्य-गाथाओं और कथानकों से अरुचि प्रकट नहीं करते थे वरन् उन्हें शीघ्र अपना लेते थे। उनके कवि महान् जर्मन जाति के स्वप्न देखते और उसी के गीत गाते थे।

'बियोवुल्फ' का कथानक—'बियोवुल्फ' की कहानी रोचक है। डेन जाति के न्यायप्रिय नरेश ह्रॉथगार को ग्रैन्डल नामक दैत्य अत्यन्त कष्ट दे रहा था। वीर बियोवुल्फ अपने चुने हुए सहायकों के साथ, नगर में आकर ग्रैन्डेल को परास्त करता है और ग्रैन्डल की माता को भी जो समुद्र की गुफा में है मौत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है। कथानक के दूसरे खण्ड में, 'बियोवुल्फ' राज्य-शासन करता है, परन्तु वह अत्यन्त वृद्ध है। उसे राज्य-रक्षा में अग्नि-वर्षा करते हुए दैत्य से युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो विलाप करती है। यहीं कहानी समाप्त हो जाती है। कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्वहीन है परन्तु 'बियोवुल्फ' में उस समय की वीरता, स्वामि-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, सुरापान, वीर-गाथा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है।

'बियोवुल्फ' का छन्द—समस्त ऐंग्लो-सैक्सन कविताओं के समान 'बियोवुल्फ' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है। पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छटा है। कवि का भाषा-कोष विस्तृत है और उसमें विशेष शब्दावली है। चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है। "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "अस्थि-प्रासाद"। यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अदीक्षित जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

नामक काव्य के दो स्फुट खंड जो मूलरूप में 'बियोवुल्फ' के समान ही होंगे १८६० ईसवी में कोपनहेगन के राज-पुस्तकालय में मिले।

'बियोवुल्फ' का वातावरण—'बियोवुल्फ' अंग्रेजी साहित्य का प्रथम ग्रन्थ है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान से कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है। यद्यपि एंग्लिस ने इस कथानक को इंगलिस्तान में प्रचलित किया फिर भी वह इनके जीवन से सम्बन्धित नहीं। यह कथानक स्कैन्डिनेविया देश का है। इसका एक कारण यह था कि यद्यपि जर्मनों की अनेक उपजातियाँ आपस में लड़ा करती थीं फिर भी वे लोग एक दूसरे की काव्य-गाथाओं और कथानकों से अरुचि प्रकट नहीं करते थे वरन् उन्हें शीघ्र अपना लेते थे। उनके कवि महान् जर्मन जाति के स्वप्न देखते और उसके गीत गाते थे।

'बियोवुल्फ' का कथानक—'बियोवुल्फ' की कहानी रोचक है। डेन जाति के न्यायप्रिय नरेश ह्रथगार को ग्रेंडल नामक दैत्य अत्यन्त कष्ट दे रहा था। वीर बियोवुल्फ अपने चुने हुए सहायकों के साथ, नगर में आकर ग्रेंडेल को परास्त करता है और ग्रेंडल की माता को भी जो समुद्र की गुफा में है मौत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है। कथानक के दूसरे खण्ड में, 'बियोवुल्फ' राज्य-शासन करता है, परन्तु वह अत्यन्त वृद्ध है। उसे राज्य-रक्षा में अग्नि-वर्षा करते हुए दैत्य से युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो विलाप करती है। यहीं कहानी समाप्त हो जाती है। कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्त्वहीन है परन्तु 'बियोवुल्फ' में उस समय की वीरता, कर्म-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, सुरापान, वीर-गाथा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है।

'बियोवुल्फ' का छन्द—समस्त एंग्लो-सैक्सन कविताओं के समान 'बियोवुल्फ' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है। पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छटा है। कवि का भाषा-कोष विस्तृत है और उसमें विशेष शब्दावली है। चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है। "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "अस्थि-प्रासाद"। यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अदीक्षित जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

कौशल तथा विद्याध्ययन में दक्षता प्राप्त की। उनका वंश मध्यम वर्ग का था तिस पर भी उन्होंने दरबारी जीवन का विशेष-रूप से अध्ययन किया था और साधारण मानव-समाज को बहुत सूक्ष्म दृष्टि से देखा था। कदाचित् ही कोई साहित्यिक पुस्तक हो जिसका उन्होंने पूर्ण अध्ययन न किया हो। उन्होंने यात्रायें भी बहुत कीं, फ्रांस तथा इटली में भ्रमण कर उन्होंने सम्पूर्ण महाद्वीप के काव्यों का अनुसन्धान किया। लैटिन भाषा ज्ञान में वे दक्ष थे और लैटिन के कवि ओविड तथा वर्जिल के काव्यों में इनकी अत्यन्त रुचि थी। चॉसर ने अपनी चमत्कार-पूर्ण प्रतिभा से ही प्रेरित हो काव्य-रचना प्रारम्भ की। इतने विद्वान लेखक को ग्रहण करने की क्षमता उस समय के थोड़े ही मनुष्यों में थी और इसी कारण चॉसर की कविता का प्रचार कुछ सहस्र पाठकों तक ही सीमित रहा। ये पाठक दरबारी तथा समृद्ध व्यापारी वर्ग के थे। मध्य-कालीन साहित्य के विशेषतः फ्रांसीसी लेखकों के काव्यों तथा काव्य-धाराओं से चॉसर अत्यन्त प्रभावित हुए थे। साहित्य में रूपक का माध्यम उन्हें प्रिय था और दरबारी जीवन के प्रेम-प्रणय के आदान-प्रदानों में उन्हें सुरुचि थी। ऐतिहासिक दृष्टि से कदाचित् ही उन्होंने फ्रांसीसी लेखक गिलाम दि लॉरिस की पुस्तक "रोमान्स ऑव दि रोज़" का अनुवाद किया हो। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने गिलाम तथा उनके सहकारी लेखक जीन दि म्यूंग की कविताओं का समुचित अध्ययन किया था। गिलाम ने नारी को देवी रूप से देखा और उसकी आराधना की। जीन ने नारी जाति को वास्तविक रूप में देखा और व्यंग-बाण बरसाये। परन्तु चॉसर ने आराधना और व्यंग दोनों शैलियों का मिश्रित व्यवहार अपनी रचनाओं में किया।

रचनाएँ—'बुक ऑव दि डचेज़', दि हाउस ऑव फेम—चॉसर लिखित मध्यकालीन जीवन का समुचित प्रदर्शन करने वाली पुस्तक 'बुक ऑव दि डचेज़' है। यह भी रूपक है। इसमें जॉन ऑव गान्ट की स्त्री ब्लैन्के के मरण का वर्णन है। इस श्रेणी की दूसरी रचना 'दि हाउस ऑव फेम' है जहाँ कवि स्वप्न-देश में विचर कर काव्य-स्मृति से आविर्भूत हो मध्य कालीन लोक गाथाओं का वर्णन करता है। कवि ने अनेक गीत लिखे परन्तु साहित्यिक दृष्टि से उनकी केवल

तीन कृतियाँ महत्व-पूर्ण हैं—'ट्रायलस ऐन्ड क्रेसिड', 'दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन', और 'कैन्टरबेरी टेल्स' जो अपूर्ण है।

'ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड'—चॉसर ने 'ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड' की गाथा इटली के प्रसिद्ध कहानी लेखक बोकाचिओ लिखित 'इल फ़िलास्ट्रेटो' से ली है। यह कहानी ट्राय देश के युद्ध गाथाओं में सम्मिलित कर ली गई थी और इसी कहानी को महाकवि शेक्सपियर ने नाटक रूप में परिवर्तित किया था। ट्रायलस के अचल प्रेम और क्रेसिड के प्रपंचपूर्ण प्रेम की कहानी को चॉसर ने काव्य-रूप दिया। वास्तव में कवि ने एक छन्दो-बद्ध उपन्यास की रचना की, जिसमें चरित्र-चित्रण की मात्रा विशेष है। नायक तथा नायिका का चरित्र-चित्रण और नायिका के चाचा पैन्डेरेस के चरित्र का विवेचन कवि ने उत्साह तथा वास्तविकता के साथ किया है। कदाचित् पैन्डेरेस का चरित्र-चित्रण अंग्रेज़ी नाट्य तथा उपन्यास साहित्य में प्रथम और सम्पूर्ण है।

'दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन'—'दि लिजेन्ट ऑव गुड विमेन' 'ट्रायलस एण्ड क्रेसिड' से कम महत्व-पूर्ण है। कवि वियोगिनी प्रेमिकाओं का वर्णन करता है। इनमें क्लियोपाट्रा, थिस्बी तथा फाइलोमीला प्रमुख हैं। इस कविता के प्राक्कथन में कवि पुनः रूपक का आश्रय लेकर [illegible] स्वप्न प्रदेश में विचरण करता है।

की मृत्यु १४०० ईसवी में हुई और उनकी उच्चकोटि के विद्वत्ता के कारण उस युग के अन्य कवियों को ख्याति न मिल सकी।

अन्य कवि-गॉवर—इन कवियों में सर्व प्रथम गॉवर हैं। गॉवर चॉसर के समान फ्रेंच तथा लैटिन भाषा के विद्वान थे। वे दोनों भाषाओं में काव्य-रचना सरलता से करते थे। सामाजिक तथा राजनीतिक अनुभव भी उनमें यथेष्ठ थे और कदाचित् चॉसर का जन्म यदि न हुआ होता तो गॉवर निश्चय ही उनका स्थान लेते। गॉवर का जन्म १३२५ ईसवी में हुआ था और उनकी मृत्यु १४०८ ई० में हुई।

लैंगलैन्ड–'दि विज़न ऑव पियर्स प्लाउमन'—चॉसर तथा गॉवर के समय में अंग्रेज़ी भाषा अनेक बोलियों में विभाजित थी। यद्यपि लन्दन निवासी पूर्वीय मिडलैंड की बोली को विशेष रूप से अपना रहे थे फिर भी पश्चिमी नगरों में अन्य बोलियाँ अपना अस्तित्व रखती थीं। चॉसर इन पश्चिमी अपभ्रंशों से घृणा करते और स्पष्ट रूप से उनकी अवहेलना कर पूर्वी बोली में ही काव्य-रचना करते थे। परन्तु यह अपभ्रंश सजीव रहा और इसमें विलियम लैंगलैंड ने काव्य रचना की। लैंगलैण्ड कदाचित् ईसाई गिर्जे में पुरोहित थे और अपने समाज के लिये ही उन्होंने लेखनी उठाई थी। विलियम लैंगलैण्ड की मुख्यकृति 'दि विजन ऑव पियर्स प्लाउमन है। 'दि विज़न ऑव पियर्स प्लाउमन' के तीन संस्करण स्वयं कवि ने प्रकाशित किये। पहला १३६२ का 'ए संस्करण' था, दूसरा "बी" १३७७ में और तीसरा १३९५ में प्रकाशित हुआ था। कवि के स्वप्न-देश विचरण से कविता प्रारम्भ होती है। कवि मैलवर्न पहाड़ी का स्वप्न देखता है जहाँ जन-समूह उपस्थित है। इसी स्वप्न-देश में कवि समाज, शासन विधान तथा अन्यान्य वर्गों की तीव्र निन्दा करता है। इस रचना में चौदहवीं शताब्दी के सम्पूर्ण समाज का चित्रण है। धन-लिप्सा, अनौचित्य तथा राजनीतिक दलबंदी की निन्दनीयता प्रदर्शित कर, ईसा के चरणों तक पहुँचने का मार्ग कवि निर्देशित करता है। उनका निश्चय है कि सत्कार्य से ही यह मार्ग मिल सकता है। यदि लैङ्गलैण्ड दार्शनिक कवि न होते तो निश्चय ही वे क्रांतिकारी होते। उनकी भाषा कर्कश तथा शुष्क और कविता नीरस है, परन्तु अंग्रेज़ी साहित्य में ईसाई जीवन विधान पर दूसरी पुस्तक इनके समान नहीं है।

तीन कृतियाँ महत्व-पूर्ण हैं—'ट्रायलस ऐन्ड क्रेसिड', 'दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन', और 'कैन्टरबरी टेल्स' जो अपूर्ण है।

'ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड'—चॉसर ने 'ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड' की गाथा इटली के प्रसिद्ध कहानी लेखक बोकाचिओ लिखित 'इल फ़िलास्ट्रेटो' से ली है। यह कहानी ट्राय देश के युद्ध गाथाओं में सम्मिलित कर ली गई थी और इसी कहानी को महाकवि शेक्सपियर ने नाटक रूप में परिवर्तित किया था। ट्रायलस के अचल प्रेम और क्रेसिड के प्रपञ्चपूर्ण प्रेम की कहानी को चॉसर ने काव्य-रूप दिया। वास्तव में कवि ने एक छन्दो-बद्ध उपन्यास की रचना की, जिसमें चरित्र-चित्रण की मात्रा विशेष है। नायक तथा नायिका का चरित्र-चित्रण और नायिका के चाचा पेन्डेरस के चरित्र का विवेचन कवि ने उत्साह तथा मार्मिकता के साथ किया है। कदाचित् पैन्डेरेस का चरित्र-चित्रण अंग्रेज़ी नाट्य तथा उपन्यास साहित्य में प्रथम और सम्पूर्ण है।

'दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन'—'दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन' [illegible] महत्व-पूर्ण है। कवि वियोगिनी प्रेमिकाओं [illegible] करता है। इनमें [illegible] क्लियोपाट्रा, थिस्बी तथा फाइलोमीला प्रमुख [illegible] के आदि [illegible] में कवि पुनः रूपक का आश्रय लेकर [illegible] प्रवेश से [illegible] करता है।

की मृत्यु १४०० ईस्वी में हुई और उनकी कृतियों की विलक्षणता के कारण इस युग के अन्य कवियों को ख्याति न मिल सकी।

अन्य कवि गॉवर—इस युग में सर्व प्रथम गॉवर हैं। गॉवर चॉसर के समकालीन मित्र तथा गहन ज्ञान के विद्वान थे, वे तीनों भाषाओं में काव्य-रचना समान अवस्था से करते थे। सामाजिक तथा राजनैतिक अनुभव भी इनमें अधिक थे और यदि चॉसर जैसे कवि का जन्म नहीं हुआ होता तो गॉवर निश्चय ही उच्च स्थान लेते। गॉवर का जन्म १३२५ ईस्वी में हुआ था और उनकी मृत्यु १४०८ ई० में हुई।

लैंगलैण्ड—'दि विज़न ऑफ़ पियर्स प्लाउमन'—चॉसर तथा गॉवर के समय में अंग्रेज़ जाति अनेक श्रेणियों में विभाजित थी। यद्यपि लन्दन निवासी, पूर्वी मिडलैण्ड की बोली को विशेष रूप से अपना रहे थे फिर भी पश्चिमी नगरों में अन्य बोलियाँ अपना अधिकार रखती थीं, लोग इन पश्चिमी उपप्रदेशों से घृणा करते और स्पष्ट रूप से उनकी अवहेलना कर पूर्वी बोली में ही काव्य-रचना करते थे। परन्तु यह उपप्रदेश सजीव रहा और इसने विलियम लैंगलैण्ड को जन्म दिया था। लैंगलैण्ड कदाचित् ईसाई गिर्जे में पुरोहित थे और उनके समाज के लिये ही कल्याण भावना उठाई थी। विलियम लैंगलैण्ड की मुख्य कृति 'द विज़न ऑफ़ पियर्स प्लाउमन' है। 'दि विज़न ऑफ़ पियर्स प्लाउमन' के तीन संस्करण स्वयं कवि ने प्रकाशित किये। पहला १३६२ का 'ए संस्करण' था, दूसरा 'बी' १३७७ में और तीसरा १३९५ में प्रकाशित हुआ था। (कवि के स्वप्न-देश विवरण से कविता आरम्भ होती है।) कवि, हरी-भरी पहाड़ी का स्वप्न देखता है जहाँ जन-समूह उपस्थित है। इसी स्वप्नदेश में कवि समाज, शासन विधान तथा अन्यान्य वर्गों की तीव्र निन्दा करता है। इस रचना में चौदहवीं शताब्दी के सम्पूर्ण समाज का चित्रण है। धन-लिप्सा, अनौचित्य तथा राजनीतिक दलबंदी की निन्दनीयता प्रदर्शित कर, ईसा के चरणों तक पहुँचने का मार्ग कवि निर्देशित करता है। उनका निश्चय है कि सत्कार्य से ही यह मार्ग मिल सकता है। यदि लैंगलैण्ड दार्शनिक कवि न होते तो निश्चय ही वे क्रान्तिकारी होते। इनकी भाषा कर्कश तथा शुष्क और कविता नीरस है, परन्तु अंग्रेज़ी साहित्य में ईसाई जीवन विधान पर दूसरी पुस्तक इसके समान नहीं है।

के दूसरे तथा चौथे खण्ड को मुक्तक छन्द में अनुवाद करने के पश्चात् ही उन्हें अधिक ख्याति मिली। उस समय सरे अपने नवीन मुक्तक छन्द-चयन की महत्ता को कदाचित न समझ सके होंगे क्योंकि इसी मुक्तक छन्द में भविष्य के महान कवियों ने नाटक तथा व्यंग-काव्य रचे। इसी छन्द में शेक्सपियर ने नाटक, मिल्टन ने महाकाव्य और कीट्स तथा टेनिसन ने अनेक कविताएँ लिखीं। आधुनिक समय के लेखक भी इसी मुक्तक छन्द शैली का प्रयोग कर रहे हैं।

सॉनेट छन्द का महत्व—सॉनेट छन्द की उपादेयता का दोनों कवियों ने शायद ही अनुमान किया हो। उन्होंने लैटिन के कवि पीट्रार्क का स्वयं अनुकरण किया था और उनके छन्द ही नहीं वरन् विषयाधार भी ग्रहण किये थे। पीट्रार्क ने मुख्यतः प्रेम विषयक आधार लिये थे। प्रेमी की कर्तव्य-निष्ठा, श्रद्धा, प्रेमोद्रेक, असमंजस तथा नैराश्य और प्रेमिका की सुन्दरता, मन मोहकता, गर्व तथा तिरस्कार पीट्रार्क के काव्य के मूलाधार थे।

एलिज़बेथ के युग के समस्त कवियों ने पीट्रार्क के छन्द और विषयाधारों का अनुकरण कर प्रेम-गीत रचे। कुछ थोड़े से कवि ऐसे भी थे जिन्होंने इस छन्द विधान तथा प्रेम-विषयाधार रचनाओं की अस्वाभाविकता प्रकट की परन्तु वे युग-शैली को बदल न सके। ये थे सर फ़िलिप सिड्नी तथा विलियम शेक्सपियर। ये दोनों कवि सॉनेट लेखक थे, परन्तु वे उसकी अस्वाभाविकता से भी परिचित थे। उन्होंने रूढ़िवादी विषय में परिवर्तन करने की चेष्टा की, भावों को उद्दात्त किया, तथा इस छन्द के दोनों भागों सेस्टेट तथा ऑक्टेव[1] दोनों में मनोवैज्ञानिक सामंजस्य लाने का प्रयास किया। परन्तु सॉनेट छन्द की प्रियता बढ़ती ही गई। प्रत्येक युग के कवियों ने इसे प्रयुक्त किया और इस छन्द विशेष में एक पूर्णता अनुभव की जो अन्य छन्दों में विद्यमान न थी। मिल्टन ने इसका विषयाधार पूर्णतया परिवर्तित किया। उन्होंने अपनी जीवनी विषयक गाथाओं का आधार लिया, धार्मिक तथा सामाजिक विचारों को स्थान दिया और जन-समाज को प्रेरित करने वाले विषय भी अपनाये।

१—पहले भाग की ६ पंक्तियाँ सेस्टेट तथा दूसरे की आठ पंक्तियाँ ऑक्टेव कहलाती हैं। दोनों मिलाकर कविता में १४ पंक्तियाँ होती हैं।

अर्ल सरे ने इसी छन्द में शाहीर कल्पनाओं का प्रसार किया, नाथ के शत्रुओं के अनेक ... प्रकृति सम्बन्ध के आकर्षणों को निश्चित किया। वॉट्स ने भी आर्केडिया ... परिणाम पर ... सॉनेट रचे और उत्तरवर्ती कवियों के अन्तिम काल में लॉर्ड सर्रे ने इसी छन्द में आरम्भ ... नाम लेखकों ने प्रेमानन्द की व्याख्या की।

एडमण्ड स्पेन्सर—इस युग को सम्यक् स्थापित करने की महत्ता यद्यपि चॉसर तथा मोर को है किन्तु फिर भी स्वयं उनकी कविता विशेष महत्वपूर्ण नहीं है। इसके विपरीत बाद्य महत्ता मिली एडमण्ड स्पेन्सर को। इनका जन्म १५५२ ईसवी में हुआ था। उनकी जीवनी का पूर्ण विवरण नहीं मिलता परन्तु इन्होंने कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी और अनेक मित्रों तथा प्रशंसकों की संगति में काव्य-रचना आरम्भ की। उनकी प्रबल इच्छा राज-दरबार में सम्मिलित होने की थी। अन्त में अर्ल ऑफ लेस्टर ने उन्हें अपनी सेवा में लिया और स्पेन्सर आयरलैण्ड में उन्हीं के साथ रहे। उनकी मृत्यु भी आयरलैण्ड में ही हुई।

रचनाएं—'दि शेपर्ड्स कैलेण्डर', 'दि फेयरी क्वीन'—स्पेन्सर की ख्याति प्रधानतः उनकी दो रचनाओं से है : १५७९ ई० में रचित 'दि शेपर्ड्स कैलेण्डर' तथा 'दि फेयरी क्वीन' जिसका प्रकाशन १५९० ईसवी से आरम्भ हुआ। महान् रचनाकारों के समान स्पेन्सर की भी इच्छा मातृभाषा को संवारने, शब्दावलियों का सृजन करने तथा ऐसे ग्रन्थों की रचना करने की थी जो यूनानी तथा लैटिन भाषा के महाकाव्यों की समानता कर सकें। उन्होंने होमर तथा वर्जिल का अध्ययन किया था और उनके आदर्शों से वे प्रेरित भी हुए थे। यही नहीं वरन् एरिऑस्टो तथा टैसो कवियित्रियों की कल्पनातीत कविताओं का भी उन्होंने रसास्वादन किया था। मध्य-युग की अद्भुत कथाओं, देवगाथाओं, आर्थर नरेश-सम्बन्धी कथानकों तथा दानवों और राक्षसों की कहानियों से उनका पूर्ण परिचय था। प्राचीन काल के सर्वोत्तम ग्रन्थों के वीरों और वीर कथाओं से प्रभावित होकर वे इन सम्पूर्ण काव्याशयों से मिश्रित एक महाकाव्य रचना चाहते थे। उनका ध्येय अपनी काव्य-वाणी को राज्य महिषी तक पहुँचाना और उनके दर्बार में अपनी कविता गुंजरित करना था। अनेक काव्या-दर्श उनके सम्मुख उपस्थित हुए—युग परिचय, समाज सुधार, नैतिकता-

प्रसार तथा राज्य-सम्मान आकांक्षा। स्पेन्सर की प्रतिभा में प्राचीन तथा मध्ययुग के आदर्शों का सुरुचि पूर्ण सामंजस्य भी स्थापित हुआ था। स्पेन्सर का काव्यादर्श चाहे कुछ भी रहा हो वे अन्त तक एक सफल कलाकार रहे। शब्द उन्हें प्रिय थे। उनका रूप, उनकी ध्वनि, उनका लय, उन्हें मोहित करते रहे। उनकी प्रथम रचना 'शेपर्ड्स कैलेन्डर' की मोहकता समय ने किंचित कम कर दी हो परन्तु १५७९ ईसवी में उसकी लोक प्रियता प्रमाणित है। शब्द-सामंजस्य तथा ध्वनि लालित्य उनकी विरचित 'एपिथलैमियम' तथा 'प्रोथलैमियम' में पराकाष्ठा पर है। 'शेपर्ड्स कैलेन्डर' प्रत्येक मास के लिए एक ग्राम्य गीत देता है जिसमें ग्राम्य जीवन के चित्र, प्रेमाभिनय, व्यंग्योक्ति और राज्य-स्तुति प्रधान विषय हैं।

परन्तु 'फ़ेयरी क्वीन' में स्पेन्सर की सम्पूर्ण काव्य-शक्ति निहित है। कथानक के लिए कवि ने अनेक प्राचीन वीर गाथाओं और रूपकों का सम्मिश्रण कर वर्णनात्मक शैली ग्रहण की है। तत्कालीन पाठकों के लिए उसमें पात्र तथा दृश्य संकेत स्पष्ट रहे होंगे परन्तु ये संकेत समय-परिवर्तन के अनुसार अस्पष्ट होते गये और 'फ़ेयरी-क्वीन' एक दुरूह, काल्पनिक, अस्तव्यस्त रचना मात्र रह गई है।

स्पेन्सेरियन-छन्द तथा गीत रचना—'फ़ेयरी क्वीन' की छन्द-शैली की विशेष ख्याति हुई। जिस छन्द में स्पेन्सर ने इस काव्य को लिखा है उसमें शब्द-सामंजस्य, लावण्यता तथा कल्पना-प्रसार के लिए यथेष्ट स्थान है। यह छन्द स्पेन्सर के नाम से (स्पेन्सेरियन-छन्द) प्रख्यात है। नौ पंक्तियों का यह छन्द भविष्य के अनेक कवियों द्वारा प्रयुक्त हुआ परन्तु स्पेन्सर की कृतियों में ही इसका लालित्य पूर्णतया प्रदर्शित हुआ है। अंग्रेज़ी जीवन और अंग्रेज़ी दृष्टिकोण पर इस काव्य का समुचित प्रभाव पड़ा था। मध्ययुग की विनय-प्रियता तथा भावुक काल्पनिकता की छाया इसी काव्य द्वारा जन-समूह के मानसपटल पर अंकित हुई। सम्भव है आद्योपान्त पढ़ने पर 'फ़ेयरी क्वीन' स्थूल, अरोचक तथा निर्जीव प्रतीत हो, परन्तु उसके अनेक खण्डों में काव्य-माधुर्य, ध्वनि तथा शब्द-लालित्य की प्रचुरता है। एलिज़बेथ के युग में काव्य-माधुरी ने नाटक का विशेष सहारा लिया और इस काल की उत्कृष्ट कविता

नाटकों में प्रस्तुत हैं। नाटककार कवि थे। वे काव्य-सुन्दरी के प्रेम-पाश पहले से ही जकड़े थे।

मार्लो तथा शेक्सपियर, दोनों नाटककारों ने कविताएँ लिखीं। मार्लो लिखित 'हीरो ऐण्ड लिएण्डर', शेक्सपियर की 'वीनस ऐण्ड एडोनिस', 'ल्यूक्रीस' तथा सॉनेट और बेन जॉनसन के गीतों ने इस युग में ख्याति पाई। यद्यपि उत्कृष्ट कलाकार नाटक रचना की ओर प्रेरित हुए फिर भी काव्य-धारा प्रवाह-पूर्ण रही। अनेक बड़े तथा छोटे काव्य लिखे गए, अनेक शैलियों का प्रयोग हुआ, परन्तु गीतों की ओर ही लेखकों की अधिक प्रवृत्ति रही।

माइकेल ड्रेटन—अपनी समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि माइकेल ड्रेटन हैं। ड्रेटन का जन्म १५६३ ईसवी में हुआ था और उन्होंने अपने जीवन में विविध काव्य-शैलियों का प्रयोग किया। वीर काव्य से लेकर भावुक गीतों तक के लिखने में वे दक्ष थे। 'बैरन्स वार्स' जो १६०३ में प्रकाशित हुई, एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें अन्याय शासन की घटनाओं का वर्णन है। 'पॉलीओल्बियन', सहस्र पंक्तियों की कविता में इंग्लिस्तान के भूगोल का दर्शन कराती है जिसमें देश-प्रेम की भावना प्रधान है। परन्तु ड्रेटन का सबसे अनुरंजित काव्य 'निम्फिडिया' है जिसकी परी देश की कल्पना-मय भावुकता स्थल-स्थल पर पाठकों को मोहित करती है।

सैमुयल डैनियल—ड्रेटन से वयस में एक वर्ष छोटे सैमुयल डैनियल में भी अपनी निराली प्रतिभा थी। यद्यपि उन्होंने भी ऐतिहासिक विषयों पर कविता की परन्तु उनकी ख्याति चिन्तन-विषयक कविताओं से ही हुई। उनके विरचित 'द सिविल वार्स बिट्वीन लैन्कैस्टर ऐण्ड यार्क' में ऐतिहासिक पूर्णता तो बहुत है परन्तु रोचकता कम है। उनकी चिन्तन-शील कविताएँ उनके 'म्यूसोफिलस' में हैं जिनका प्रभाव कवि वर्ड्सवर्थ पर विशेष रूप से पड़ा।

इस युग की लम्बी तथा ऐतिहासिक कवितायें यद्यपि हैं तो बहुत, तो भी साहित्यिक दृष्टि से वे हीन हैं। यह युग वास्तव में गीतों का युग है। गीत, गायन, वाद्य इन तीनों के आकर्षण से विरले ही बचे होंगे और दरबारी जीवन का तो यह प्रधान आभूषण था। कवि, ध्वनि, लय तथा शब्द प्रयोग में पूर्ण प्रवीण थे और वे अपनी काव्य-माधुरी द्वारा

राज्य-महिषी से लेकर भृत्य-सेवकों तक का मन मोह लेते थे। टॉमस कैम्पियन की कविताओं में ये गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

जॉन डन—कविता की सर्वतोमुखी प्रतिभा कदाचित् जॉन डन में पिछले कवियों की अपेक्षा अधिक प्रशस्त हुई। उनका जीवन अत्यन्त साहस पूर्ण रहा। उन्होंने दरबारी जीवन व्यतीत किया, युद्ध में शौर्य प्रदर्शित किये, इंगलिस्तान के लार्ड कीपर के मंत्री रहे तथा अपने स्वामी का दामाद बनने की चेष्टा में बन्दी बनाए गए। अन्त में वे सेन्ट पॉल के गिरजे में प्रधान पुरोहित के पद पर आसीन हुए। उनका मस्तिष्क बहुत दिनों तक विशृंखल रहा। अध्ययन उनका प्रधान कार्य था। धर्म, विज्ञान, दर्शन तथा अन्यान्य-ज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकों का वे मनन करते रहे। जीवन के मृदु तथा कटु अनुभव, रागद्वेष, प्रेम-घृणा, जीवन-मरण सभी प्रकार की मानसिक परिस्थितियों पर उन्होंने विचार किया था और इन्हीं विरोधी-भावनाओं का उनके काव्य में समावेश हुआ। डन स्वभावतः प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध थे। पुराने छन्दों के प्रति विशेषतः उन्हें कोई सहानुभूति न थी। पुराने गीत छन्दों के स्थान पर उन्होंने नए छन्द अपनाए। छन्दों में नये रूप की यतियाँ सम्मिलित कीं और प्राचीन काव्य-उपमाओं को नवीन तथा आकर्षक रूप दिया। कहीं कहीं तो उनकी उपमाएँ अद्भुत अधिक हैं और वास्तविक कम। अठारहवीं शताब्दी के प्रधान कवि और समालोचक डॉक्टर जॉनसन ने डन तथा उनका अनुकरण करने वाली कवि-गोष्ठी को 'मेटफ़िज़िकल' नाम इस कारण दिया कि उनके विचारों तथा विशेषणों में विचित्र असामंजस्य था। इसमें सन्देह नहीं कि उनकी कविता में यह विचित्रता थी। परन्तु अनेक श्रेष्ठ कविताओं में उनकी प्रतिभा, छोटे तथा सरल विशेषणों तथा उपमेयों द्वारा प्रस्फुटित हुई।

जॉन हरबर्ट—डन इस 'मेटेफ़िज़िकल' कवि गोष्ठी के नेता मान लिए गए हैं: परन्तु उनके अनुयायियों में धार्मिक कवि अधिक थे। जॉन हरबर्ट (१५९३-१६३३) ने उनका सम्पूर्ण रूप से अनुकरण किया। उनमें एक सरल धार्मिकता है। उपमाओं के चयन में यद्यपि उन्होंने सावधानी प्रदर्शित की है तो भी कहीं कहीं उन्हें अपने धार्मिक तथा आध्यात्मिक आवेश में उपमाओं तथा उपमेयों में पूर्ण सम्बन्ध

कविताओं में गीत काव्य की मधुर भावुकता, छोटी छोटी शब्दावलियों की छटा तथा भाव और लय के सामंजस्य की एक विचित्र मोहकता है। अंग्रेज़ी गाँवों का सरल जीवन, मई-मास की रंगरलियाँ, उनकी कविताओं के प्राण-स्वरूप हैं। प्रेम ही उनके अनेक गीतों की नींव है। प्रेम की उदासीनता उनको सदैव विचलित करती है और उसका रस रंग उन्हें सदैव आन्दोलित करता रहता है।

ऐन्ड्रू मारवेल—जब हेरिक अपना जीवन निर्वासन में व्यतीत कर रहे थे उसी समय इस गोष्ठी के अन्तिम कवि ऐन्ड्रू मारवेल (१६२१–७८) अंग्रेज़ी राजनीति तथा तत्कालीन जीवन का अध्ययन कर कविता लिखने का प्रयास कर रहे थे। मारवेल प्यूरिटन मतावलम्बी थे। जब जनता ने क्रॉमवेल के प्यूरिटन-शासन के पश्चात्, चार्ल्स द्वितीय को राजा बनाया तो मारवेल के धर्म को ठेस लगी और उन्होंने क्रोध और विराग से उद्वेलित हो अनेक व्यंगमय कविताएँ लिखीं। मारवेल की महत्वपूर्ण कविताएँ वही हैं जिनमें न तो धर्म-पुकार है और न तत्कालीन जीवन की उदासीनता है। उनमें स्वाभाविक प्रकृति दर्शन, सरल मानव चिन्तन, तथा प्रेम का लालित्य है। ये ही कविताएँ उनकी ख्याति प्रसारित करती रहेंगी।

—:o:—

चौथा अध्याय

मिल्टन, पोप, जेम्स टॉमसन

मिल्टन का युग—अब एक नये युग का आरम्भ होता है। सोलहवीं शताब्दी का अन्त भी आगया था। कैवेलियर-कवियों के पश्चात् इंगलिस्तान में एक नये जीवन, एक नये समाज, और एक नवीन साहित्यिक युग का जन्म हुआ।

देश में गृह-युद्ध समाप्त हो रहा था। जनता ने धार्मिक मतभेदों और धर्म युद्ध के कारण एक विचित्र अशान्ति मोल ले ली थी और इस अशान्ति में मध्ययुग की अनेक साहित्यिक धाराओं का लोप भी हो गया था। मध्य-युग का मानव एक विचित्र देश का प्राणी था। उसमें श्रद्धा थी; विश्वास था; और उसका भाव भंडार अक्षय था।

कैथलिक मतावलम्बी थे और उन्हें फांसी दे दी गई थी। क्रॉमवेल के शासन के पश्चात् जनता में कैथलिक मत की नई लहर उठी। प्यूरिटन शासन से जनता ऊब उठी थी और मिल्टन का स्वप्न-जगत टूट गया था। कवि ने हारते हुए वर्ग का साथ दिया और अब उसे विश्वास होता जा रहा था कि मानव-समाज का कल्याण शीघ्र नहीं होने पायेगा।

प्यूरिटन वर्ग की विजय और कॉमन-वेल्थ के जीवन ने मिल्टन के हृदय में महान आशाएँ उठाई थीं। वे उस नये युग का स्वप्न देख रहे थे जब मनुष्य ईश्वर को पहचानेगा, अपने पापों की क्षमा माँगेगा और ईसा के शासन की छत्रछाया में सुख की नींद सोएगा। परन्तु कवि की कोई भी आशा फूलने-फलने न पाई। कवि की आशाओं पर इसी तुषारापात की छाप है। कवि अब वृद्ध, निराश तथा नेत्रविहीन था। उसके बैरियों ने उसका जीवन भी संकट में डाल रखा था। इसी नैराश्य की अवस्था में मिल्टन ने अपने हृदय की ज्योति प्रज्वलित कर तीन बड़े काव्य लिखे। पहला था 'पैराडाइज़ लॉस्ट' (१६६७) दूसरा 'पैराडाइज़ रीगेन्ड' और तीसरा "सैमसन ऐगनिस्टीज़" (१६७१) था।

रचनाएँ—**'कोमस'**—मिल्टन की सबसे अधिक आदरणीय पुस्तक 'कोमस' है। 'कोमस' नाटक है। उसकी मनोहरता पढ़ने पर नहीं वरन् रंगमंच पर विदित होती है। 'कोमस' की कहानी प्यूरिटन-जीवन से सम्बन्धित है। एक कुलवती नारी अपने सतीत्व और आचरण के बल पर कोमस नामक यक्ष को तिरस्कृत कर, उसके प्रलोभनों को ठुकरा कर, अपनी आत्मरक्षा करती है। यही 'कोमस' का सरल कथानक है। इतने सरल कथानक के होते हुए भी इस नाटक में मिल्टन की कविता के सभी गुण विद्यमान हैं। भविष्य की सभी रचनाओं का आभास इस नाटक में है। कवि के लिए मानव-जीवन एक महान् द्वन्द्व है। यह पाप और पुण्य, शान्ति और अशान्ति, ज्ञान और अज्ञान, भले और बुरे में है। परन्तु पुण्य, ज्ञान तथा भले ही की विजय प्राप्त होती है।

'पैराडाइज लॉस्ट'—इसी द्वन्द्व के भाव को लेकर 'पैराडाइज़ लॉस्ट' नामक काव्य की रचना हुई। ईश्वर-कृत प्रथम मनुष्य आदम और उनकी स्त्री हौआ शान्ति तथा प्रेम-मय जीवन व्यतीत करते हैं। शैतान सर्प वेश में आकर उनके जीवन में विष का बीज बोकर ज्ञान-वृक्ष का फल खाने का सफल प्रलोभन देता है। दोनों का शान्ति मय जीवन

प्रवृत्तियों के पारस्परिक संघर्ष की कथा-सी लगती है। ईश्वरीय आज्ञा पालन के आदर्श तथा उसके उल्लंघन के फल इसमें निहित हैं। शैतान पाप का प्रतीक है और ईश्वरीय आज्ञा पुण्य का। शैतान की विजय थोड़े ही समय के लिए होती है तत्पश्चात् ईश्वरीय इच्छा के अनुसार मनुष्य की विजय होती है।

'पैराडाइज़ रीगेन्ड'—इस विषय का समापन 'पैराडाइज़ रीगेन्ड' में है। ईसा अपने धर्म-बल और विश्वास-बल से शैतान पर विजय पाते हैं, और ईसाई धर्मावलम्बियों को वे इसी विश्वास के बल पर अक्षय शान्ति प्रदान करते हैं।

'सैमसन ऐगॉनिस्टीज़'—मिल्टन के अंतिम काव्य में भी इसी द्वन्द्व का परिचय मिलता है। यह काव्य "सैमसन ऐगॉनिस्टीज़" है। सैमसन की शक्ति सभी उसके सिर के केशों का कट जाना है। वह उसी अतीव प्रलोभन विकराली है। परन्तु सैमसन अन्त तक अपने कर्तव्य का पालन करता है। उसकी मृत्यु हो जाती है। परन्तु इसी मृत्यु में उसकी विजय है।

इन तीनों काव्यों में मिल्टन ने प्यूरिटन आदर्शों को प्रतिपादित किया था। परन्तु उनकी पिछली रचनाओं में यह आदर्श यद्यपि धुंधला नहीं तो अति हीन अवश्य हो गया है। 'पैराडाइज़ लास्ट' में शैतान का चरित्र-चित्रण 'पैराडाइज़ रीगेन्ड' में ईसा की सहनशीलता और 'सैमसन ऐगॉनिस्टीज़' में सैमसन का आत्म-बलिदान साहित्य के इतिहास में अमर है। वास्तविक चरित्र-चित्रण के साथ कवि ने वीर तथा शान्त दोनों रसों का परिपाक किया है। मिल्टन ने जिस मुक्तक छन्द का प्रयोग किया है उसमें एक अद्भुत शालीनता है जो अन्य लेखकों की रचनाओं में देखने को भी नहीं मिलती।

'लिसिडैस'—कवि की अन्य रचनाओं में 'लिसिडैस' कविता भी प्रख्यात है। इसमें प्रकृति निरीक्षण, करुण रस, तथा ग्रामीण जीवन का वर्णन मिलता है। कुछ इतिहासज्ञों का कथन है कि मिल्टन सर्व साधारण के कवि नहीं और उनके विषय, उनकी भाषा, तथा उनकी शैली सर्व प्रिय नहीं हो सकती। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि मिल्टन अपने समय के बहुत ख्यातिपूर्ण कवि थे। साहित्य-प्रेमी उन्हें बड़े चाव से पढ़ते थे और अट्ठारहवीं शताब्दी में शायद ही कोई ऐसा कवि हो जिसने मिल्टन की

काव्य-शैली का अनुकरण न किया हो। इस शताब्दी के साहित्य प
मिल्टन का पर्याप्त प्रभाव है। मिल्टन ने अपनी रचनाओं में प्युरिट
मत की पवित्रता, उसकी मानवता तथा उसकी ईश्वरीयता का यशोगा
किया था।

सैमुएल बटलर-'ह्यूडीब्रेस'—उसी समय एक दूसरे कवि प्यूरिटन मत की अनुदारता, उसके असंयम, उसके पाखण्ड और छ पर व्यंगोक्ति लिख रहे थे। ये सैमुएल बटलर (१६१२–८०) थे ह्यूडीब्रेस में उन्होंने मिल्टन के प्युरिटन-आदर्शों की खिल्ली उड़ाई ह्यूडीब्रेस प्रेमी तथा योद्धा है और अपने सेवक रैल्फ के साथ अने साहसिक कार्यों में घोर मूर्खता का परिचय देता है जिससे पाठकों बड़ा मनोरंजन होता है। ह्यूडीब्रेस की प्रियता घर घर बढ़ी।

'ह्यूडीब्रेस' लिख कर बटलर ने यह प्रमाणित कर दिया था कि स साधारण को मिल्टन की कविता प्रिय नहीं। मिल्टन को पूर्ण-रूप समझने के लिए पाठकों को प्राचीन महाकाव्यों, लैटिन तथा यूनानी की गाथाओं की जानकारी आवश्यक थी और मिल्टन के समान काव्य अ मुक्तक छन्दों को लिखने के लिए महान काव्य-प्रतिभा अपेक्षित थ इसीलिए भविष्य के लेखक कविता को सरल, साम्य तथा लोकप्रिय बन के प्रयत्न में लग गए।

एडमन्ड वॉलर—जिन लेखकों ने यह प्रयास आरम्भ किया उ प्रमुख एडमन्ड वॉलर (१६०६-८७) तथा सर जॉन डेनहम (१६१ ६६) हैं। उनके अनेक मनोहर गीतों का आधार प्रेम है और उन दो पंक्ति के छन्द को सर्व प्रिय बनाने की चेष्टा की।

जॉन डेनहम-'कूपर हिल'—यही चेष्टा जॉन डेनहम ने भी क उसी कारण उनकी 'कूपर हिल' नामक कविता को ख्याति मिली। इस कविता में एक पहाड़ी और उसके चारों ओर प्रकृति। सुन्दर चित्रण का वर्णन यहाँ सरल भाषा में करते हैं। डेनहम के समकाल कवियों ने इनके इस प्रयास को बहुत सराहा है।

जॉन ड्राइडेन—इस समय के जिन कवियों ने इस नई के निर्माण करने में विशेष सहायता दी उनमें जॉन ड्राइडेन (१६ १-१७००) का ऊँचा स्थान है। ड्राइडेन की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। नाटककार, आलोचक, व्यंग्यात्मक तथा इत्यादि के कलाकार थे। इ

कविता के लिए उन्हें राजदरबार पर निर्भर रहना पड़ता था जो भी स्तुतिपूर्ण कविता लिखने का उनमें कौशल भी था ।

रचनाएँ—यद्यपि इन्होंने सामयिक घटनाओं को अपनी कविता में स्थान दिया, परन्तु वे कविताएँ स्थायी न हो सकीं ।

'ऐनस मिराबिलिस' तथा 'एबसेलम ऐण्ड एकिटोफेल'—'ऐनस मिराबिलिस' (१६६७) में इन्होंने लंदन के अग्निकाण्ड तथा डच युद्धों का वर्णन किया और "एबसेलम ऐण्ड एकिटोफेल" (१६८१) में राजनीतिक दलों के नेताओं को तीव्र व्यंग्य का शिकार बनाया ।

'रेलिजियो लेयाई', 'फेबिल्स', 'दि हाइन्ड ऐण्ड दि पैन्थर'—ड्राइडन ने अपने समय के धार्मिक मतभेद और धार्मिक वातावरण का पूर्ण परिचय 'रेलिजियो लेयाई' तथा 'दि हाइन्ड ऐण्ड दि पैन्थर' नामक कविताओं में दिया है । १७०० ईस्वी में इन्होंने 'फेबिल्स' नामक कविता लिखी जिसका शब्दजाल उत्कर्ष का सब माना जाता है । इन प्रौढ़ कविताओं के अतिरिक्त इन्होंने अनेक प्राचीन कवियों ओविड, वर्जिल, होमर तथा चॉसर की रचनाओं का सफलतापूर्ण अनुवाद किया । ड्राइडन एक नवीन भाषा के संशोधक ही नहीं वरन् जन्मदाता भी माने जाते हैं ।

अलेक्ज़ेण्डर पोप—रचनाएँ—इस नवीन भाग के प्रवर्तकों में अलेक्ज़ेण्डर पोप (१६८८-१७४४) का भी विशिष्ट स्थान है । पोप बचपन से ही अत्यन्त दुर्बल, अशिक्षित, कुबड़ा, तथा लिम्बासाधा थे । परन्तु यह सब होते हुए भी वे पूर्ण कलाकार थे । उन्होंने कविता में उच्चकला प्रदर्शित करने के लिये अनवरत परिश्रम किया । निस्सन्देह उनकी कविता में भावना नहीं; परन्तु प्रवाहपूर्ण गति से कविता लिखने में उनका कदाचित् ही कोई प्रतिद्वन्द्वी हो । उनका कल्पना-जगत ज्योतिहीन था और उनका विचार क्षेत्र भी परिमित था ।

'एसे ऑन मैन'—'एसे ऑन मैन' में पोप ने अपने दर्शन-सिद्धान्त की पुष्टि प्रकट किया ।

'रेप ऑव दि लॉक', 'डनसियाड'—'रेप ऑव दि लॉक' में इन्होंने अपने क्रोध को तीक्ष्ण व्यंग्य में परिणत किया और अठारहवीं शताब्दी के सामाजिक व्यवहार को चित्रित कर अपनी प्रतिष्ठा घोषित की ।

'डनसियाड' में उन्होंने अपने युग के मूर्खों का चित्रण किया और उपहास-काव्य लिखने में बड़ी ख्याति पाई।

'ऍपिसिल टु डाक्टर ऑरबथनॉट'—उनके छोटे छोटे सुन्दर उपाख्यानों में "दि ऍपिसिल टु डॉक्टर ऑरबथनॉट" बहुत लोक प्रिय है। परन्तु पोप ने केवल उपहास-काव्य ही नहीं वरन् प्रकृति दर्शन पर भी अनेक कविताएँ लिखीं।

'पैस्टोरेल्स', 'विन्डसर फ़ॉरेस्ट'—उनके 'पैस्टोरेल्स' तथा 'विन्डसर फ़ॉरेस्ट' में सरल-प्रकृति-निरीक्षण, तथा सरल शब्दावली है। उनकी दो अन्य कविताएँ 'इलायज़ा टु एबिलार्ड' तथा "एलिजी टु दि मेमरी ऑव एन अनफॉरचुनेट लेडी" में भावुकता तथा वर्णन प्रियता भी है। पोप ने अपने जीवन के मध्य काल में एक महान् साहित्यिक कार्य की प्रतिज्ञा की थी। यह यूनानी महाकवि होमर का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की प्रतिज्ञा थी। पोप ने उसमें सफलता पाई। परन्तु पोप में इतनी प्रतिभा न थी कि वह होमर की विशालता को पूर्णतया प्रदर्शित कर लेते। इसी कारण यह अनुवाद यद्यपि रोचक काव्य है मगर श्रेष्ठ अनुवाद नहीं। पोप के आचार विचारों से क्रुद्ध होकर समालोचकों ने यहाँ तक कह डाला है कि पोप के अनुवाद में केवल होमर का नाम है प्राण नहीं।

सैमुएल जॉनसन–रचनाएँ—'लंदन', 'दि वैनिटी ऑव ह्युमन विशेज़'—पोप के पश्चात् इस युग के कर्णधार सैमुएल जॉनसन हुए। जॉनसन की ख्याति कविता से कम और आलोचना में अधिक हुई। उनकी कविताओं में दो उपहास-काव्य लोकप्रिय हुए। एक था 'लन्दन' (१७३८) और दूसरा 'दि वैनिटी ऑव ह्युमन विशेज़' (१७४९) जो लैटिन कवि जुविनेल के आधार पर लिखे गए थे। इन दोनों कविताओं पर पोप की छाप कम है। कवि की नैतिकता, उसके गंभीर-भाव तथा उसके विषादयुक्त विचार दोनों कविताओं के प्राण हैं।

ऑलिवर गोल्डस्मिथ—पोप ही के समान ऑलिवर गोल्डस्मिथ ने भी अपने समय के सामाजिक तथा आर्थिक विचार धारा को ही अपनी कविता का आधार बनाया। इंगलिस्तान तथा आयरलैन्ड के समाज का उन्हें विशेष और विस्तृत ज्ञान था। पोप से ही उन्होंने दो पंक्तियों के

मधुर सौन्दर्य की सम्पदा था। वे स्नेह की सरलता और हृदय की उच्छ्वास-मय कोमलता से पूर्ण लेखक हुये थे।

रचनायें—'दि ट्रैवेलर', 'दि डेज़र्टेड विलेज'—किन्तु गोल्डस्मिथ आत्मा, गम्भीरता और निर्बल प्रकृति के मनुष्य थे और ऐसे साहित्य की साधना इनसे न हो सकती थी। इसी कारण यद्यपि उनके 'ट्रैवेलर' तथा 'डेज़र्टेड विलेज' में सरलता, कोमलता, भावुकता तथा ग्रामीण जीवन का स्पष्ट परिचय मिलता है फिर भी इनमें उच्चता नहीं। यदि गोल्डस्मिथ में कला की मुकुलित होती तो वे उच्चकोटि के कवियों में गिने जाते।

जिस समय पोप, जॉनसन तथा गोल्डस्मिथ नागरिक समाज की प्रवृत्ति कविता में प्रतिबिम्बित कर रहे थे उस समय कुछ दूसरे कवि प्रकृति सुन्दरी का पद-वन्दन कर रहे थे। यद्यपि प्रकृति के सौन्दर्य ने अनेक कवियों को आकर्षित किया था किन्तु इस समय उसका आकर्षण और भी बढ़ रहा था। अब तक तो कवि प्रकृति को पृष्ठभूमि मानकर उस पर मानव-जीवन का वर्णन करते थे; अब कवियों ने प्रकृति को समाज के जीवन से पृथक् कर उसकी सुन्दरता का वर्णन आरम्भ किया।

जेम्स टॉमसन—'सीज़न्स'—इस प्रकृति-सौन्दर्य-वर्णन में जेम्स टॉमसन (१७००-४८) अग्रगण्य हैं और इन्होंने अपूर्व ख्याति पाई। उन्होंने पहले पहल प्रकृति के चारों ऋतुओं का विस्तृत वर्णन पाठकों को 'सीज़न्स' नामक कविता में दिया। ग्रीष्म, शरद, और बसन्त उनकी कविता के आधार हुए। इस नवीन काव्य प्रयास ने शीघ्र ही बहुत से पाठकों के हृदय में स्थान बना लिया क्योंकि प्राचीन तथा पोप की व्यंग्योक्तियाँ पाठकों को सदा आकर्षित न कर सकीं। पाठक-वृन्द नवीनता की खोज में था फलतः टॉमसन ने इस नवीन धारा से शीघ्र ही लोकप्रियता पाई। लगभग एक शताब्दी तक टॉमसन की लोकप्रियता बनी रही। परन्तु टॉमसन में काव्य-कला और काव्य-आत्मा की कमी थी। यद्यपि उनकी कविता में मानवता के सहृदय चित्र हैं और उन्होंने नितान्त मौलिक रूप में प्रकृति-वर्णन भी किया है तो भी वे कुछ कारणों से उच्चकोटि के कवि न कहलाये जा सके। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि टॉमसन् एक उच्चकोटि के कवि न होकर भी मौलिक रहे और जो नवीन धारा उन्होंने साहित्य में प्रवाहित की वह आगामी शताब्दी

में अन्य रूपों में प्रस्फुटित हुई। इस धारा का पहला रूप जो साहित्य में अवतरित हुआ वह था स्फुट दृश्यों का चित्रण। इस समय, नागरिक जीवन के प्रसार से राजमार्ग तथा जनमार्ग सुव्यवस्थित तथा सुरक्षित होने लगे थे। इन मार्गों से प्रकृति के स्फुट चित्रों को देखकर नागरिक प्रसन्न हो उठते थे। चित्रकार भी अपनी तूलिका से इन्हीं चित्रों का चित्रण बड़ी सावधानी से करते थे और इस प्रकार क्रमशः मनुष्य के हृदय में प्रकृति के सौन्दर्य ने अपना अटल स्थान बना लिया। नगर का जीवन द्वन्द्वमय, जटिल तथा अशान्त होने के कारण मनुष्य के थके हुए हृदय को प्रकृति के सौन्दर्य और प्रकृति के शान्ति-पूर्ण वातावरण की आवश्यकता हुई। अठारहवीं सदी का जीवन नीरस तथा तार्किक हो रहा था और समाज में दिन प्रतिदिन अमीर तथा ग़रीब का विरोध बढ़ता जा रहा था। पहले पहल तो कवियों ने मानवता की पुकार सुनाई। फिर जीवन की सरलता, कोमलता तथा सहानुभूति के गीत गाये। क्रमशः प्रकृति की सरलता, कोमलता तथा उसके सौन्दर्य ने उनको वशीभूत कर लिया।

विलियम कूपर–'टास्क', 'जॉन गिलिपन', 'ऑल्ने हिम्स', 'कास्टवे'—इन भावनाओं का समुचित सम्मिश्रण विलियम कूपर की कविता में हुआ। कूपर की 'टास्क' शीर्षक कविता में ग्रामीण दृश्य, मानव सहानुभूति तथा धार्मिक विचार हैं। परन्तु अन्य रचनाओं, विशेषतः 'जॉन गिलिपन' 'ऑल्ने हिम्स' तथा 'कास्टवे' में, ईश्वरीय भय तथा उनके उन्माद का प्रमाण मिलता है। इस युग के अनेक कवियों में एक विचित्र मानसिक रुग्णता का आभास है। वे अकारण ही जीवन को खेद-युक्त, भययुक्त तथा दारुण समझने लगे थे।

टॉमस ग्रे–'बार्ड', 'दि डिसेन्ट ऑव ओडिन', 'एलिजी'—ऐसे कवियों में टॉमस ग्रे (१७१६-७१) की भी गणना है। ग्रे ने युरोपीय देशों का भ्रमण किया था। उनमें उच्चकोटि की विद्वता थी। परन्तु जीवन के दारुण दृश्यों से हताश होकर वे अधिक परिमाण में साहित्य-सृजन न कर सके। उन्होंने अपनी कविताओं में प्राचीन तथा मध्ययुग के चित्रों के सम्मिश्रण की चेष्टा की है। 'बार्ड' कविता में मध्ययुग की छटा है तथा 'दि डिसेन्ट ऑव ओडिन' पर प्राचीन युग की छाप है। परन्तु उनकी सबसे सफल कविताएं 'ओड' अर्थात् गौरव गीतों के

संग्रह हैं। कवि की 'एलिजी' अर्थात् शोक गीत नामक कविता अत्यन्त लोकप्रिय है। इस कविता में युग का मानसिक वैषम्य पूर्ण रूप से चित्रित है।

विलियम कॉलिन्स—'हाउ स्लीप दि ब्रेव', 'ओड ऑन दि पाप्युलर सुपरस्टिशन्स', 'ओड टु ईवनिंग'—इसी मानसिक विषमता की छाप और भी गहरे रूप में कवि कॉलिन्स (१७२१-५९) पर है। विलियम कॉलिन्स का जीवन दुखी, दरिद्र तथा उन्माद रोग से ग्रसित था। तत्कालीन समाज के चित्र उनकी कविता में नहीं हैं। परन्तु कल्पना, अन्तर्जगत विवेचन तथा कोमल भावनाओं की दृष्टि से कॉलिन्स की कविता सर्व प्रिय रही। उनकी कविता में "हाउ स्लीप दि ब्रेव" "ओड ऑन दि पाप्युलर सुपरस्टिशन्स ऑव दि हाइलैन्डस" तथा "ओड टु ईवनिंग" श्रेष्ठ हैं।

इन कविताओं में कॉलिन्स के सभी गुण हैं। उनमें सरल भाव, सरल भाषा तथा सरल विषय-निरूपण हैं। परन्तु कॉलिन्स ने इस शैली का उपयोग अन्य कविताओं में नहीं किया। फलतः वे कविताएँ लोकप्रिय न हो सकीं। जब जब कॉलिन्स ने सरलता अपनाई उनकी रचनाओं में गीत-काव्य के गुण और संगीत की मधुरता प्रचुर रूप में प्रकट हुई और इसी माधुर्य गुण के कारण उनका स्थान इस युग के कवियों में श्रेष्ठ है।

क्रिस्टोफ़र स्मार्ट—श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में क्रिस्टोफ़र स्मार्ट का भी स्थान है परन्तु उन्होंने बहुत कविताएँ नहीं लिखीं। स्मार्ट का जीवन असंयमित, भ्रष्ट तथा उन्माद रोग से ग्रस्त रहा जिसके कारण वे पागल-खाने में बहुत दिनों रहे। बन्दीगृह की दीवालों पर ही कोयले तथा कीलों से उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ कविता 'सॉग टु डेविड' लिखी। स्मार्ट की बुद्धि तीव्र और उनकी कल्पना आवेशमय थी। इस कविता में आत्मिक छायावाद तथा शब्द माधुर्य की अपूर्व छटा है।

विलियम ब्लेक—'सॉंग्स ऑव इनोसेन्स', 'एवर लास्टिंग गॉस्पेल', 'प्रोफ़ेटिक बुक्स'—यद्यपि इस शताब्दी के कवियों में मानसिक उन्माद की एक लहर सी फैल चुकी थी और अनेक कवि इस विषमता के शिकार हो चुके थे फिर भी इस युग की रचनाओं में काव्य माधुर्य की न्यूनता नहीं रही। विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७) ने अपनी कविता में इसी मधुरिमा को उच्चतर देने का प्रयास किया।

ब्लेक की कविताएँ तीन श्रेणियों में विभाजित की जा सकती हैं। पहली वे जो बाल-जीवन की साधुता और सरलता से सम्बन्धित हैं, दूसरी जो समाज को तामसिकता से उठाकर आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करती हैं, और तीसरी वे जो मनुष्य के उत्थान के लिए एक दिव्यजगत से भविष्य वाणी करती हैं। अठारहवीं शताब्दी जड़वाद की जटिलताओं में बन्दी हो गई थी और मनुष्य की तामसिकता उसे नीचे की ओर खींचे लिए जा रही थी। ऐसे समय ब्लेक ने मानव-समाज में एक नई ज्योति फैलाई। 'साँग्स ऑव इनोसेन्स ऐन्ड इक्सपीरियेन्स', 'एवरलास्टिंग गॉस्पेल' तथा 'प्रोफ़ेटिक बुक्स' में कवि की आध्यात्मिकता समुचित रूप से प्रतिबिम्बित है। इस अन्तिम कृति—'प्रोफ़ेटिक बुक्स' में कवि एक दूर देश का संकेतवाद अपनाता है और भाव क्लिष्टता के कारण सर्व साधारण तक अपना सन्देश नहीं पहुँचा पाता। परन्तु जब जब कवि सरल भाषा, सरल भावावेश तथा सरल संकेत देता है, तब तब उसकी पंक्तियाँ पाठक के हृदय पर स्थायी प्रभाव डाल कर उसे तन्मय कर देती हैं।

रॉबर्ट बर्न्स—ब्लेक के समकालीन कवियों में रॉबर्ट बर्न्स (१७५९-९६) ने भी अच्छी ख्याति पाई। बर्न्स किसान वंश के थे और उन्होंने स्कॉटलैन्ड में जन्म लिया था। उन्होंने अपने से पूर्व कवियों का समुचित अध्ययन किया था और पोप, ग्रे और टॉमसन की रचनाओं से वे भली-भाँति परिचित थे। शेक्सपियर की कविताओं में उनकी विशेष रुचि थी और स्कॉटलैन्ड के कवियों की रचनाएँ भी उन्हें प्रिय थीं। बर्न्स की अनेक श्रेष्ठ कविताएँ १७८६ ईसवी में 'किलमारनक' नामक संकलन में प्रकाशित हुईं। इस संग्रह के लोकप्रिय होते ही बर्न्स समाज में पूज्य माने जाने लगे। इन्होंने धर्म के पाखण्डों का खण्डन 'दि जॉली बेगर्स' नामक कविता में दृढ़ता-पूर्वक किया है। 'टॉम ओ शैन्टर' तथा "जॉन एन्डरसन माई जो" भी बहुत लोकप्रिय हुए। परन्तु बर्न्स की ख्याति विशेष उनके लोक गीतों में है। अंग्रेज़ी तथा स्कॉटलैंट की विविध बोलियों को अपनाकर उन्होंने बड़े सरल, मधुर और प्रेम मय गीत रचे जो अब तक सर्व प्रिय हैं। रॉबर्ट बर्न्स ने जीवन का यथेष्ट अध्ययन किया था। शिष्ट तथा अशिष्ट वर्ग दोनों को उन्होंने भली प्रकार समझा था।

अनुभव था, क्योंकि इसके सम्पर्क में वे विशेषतः रहा करते थे। इसी कारण उनकी कविता में मानव के प्रति प्रेम और भावुकता की मात्रा अधिक है।

जॉर्ज क्रैब—जब बर्न्स सरायों की दिन चर्य्या पर काव्य-रचना कर रहे थे उसी समय क्रैब (१७५४-१८३२) ग्रामीण जीवन की सरलता, मधुरता और पवित्रता पर विचार कर कविता लिखने में व्यस्त थे। क्रैब ने ग्रामीण जीवन की वास्तविकता को कविताओं में दर्शाया है। ग्रामीणों की निर्धनता, सरलता, प्रेम, दुख इन सब का उन्होंने स्वाभाविक चित्रण किया है। प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक भावना, प्रत्येक वस्तु जो उन्होंने काव्य-रचना के लिये चुनी, उसे विस्तृत रूप दे सच्चा तथा यथार्थ वर्णन किया।

इन सब लक्षणों से युक्त उन्होंने 'विलेज' (१७८३) 'दि पैरिश रेजिस्टर' (१८०७) तथा 'टेल्स इन वर्स' (१८१२) की रचना की। इन कविताओं में क्रैब ने पोप तथा जॉनसन की छन्द शैली—दो पंक्तियों के तुकान्त छन्द का प्रयोग किया। बहुत से पाठकों को क्रैब की कविता नीरस तथा निर्जीव प्रतीत होती है परन्तु क्रैब के समान यथार्थवादी कविता विरले ही कवियों ने लिखी है।

टॉमस चैटरटन—यथार्थवादी कविता लिखने में क्रैब ने जीवन के एक बड़े महत्वपूर्ण अंग की अवहेलना की थी। वह थी मनुष्य की कल्पना-प्रियता, उसकी कल्पित जीवन के प्रति रुचि जो उसे वास्तविक जीवन से दूर ले जाकर उसके लिये एक नये जगत का निर्माण करती है। इस अंग की पूर्ति टॉमस चैटरटन (१७५२-७०) ने की। चैटरटन केवल अठारह वर्ष की ही अवस्था में स्वर्गवासी हुए। परन्तु उन्होंने अपने 'राउली पोएम्स' तथा छोटी-छोटी कविताओं में मध्य युग की भावनाओं और उसके कल्पना जगत का सुन्दर परिचय दिया। साहित्यिक अन्वेषकों ने चैटरटन की कविताओं को किसी अन्य लेखक की रचना प्रमाणित करने का प्रयास किया है। परन्तु उनके प्रमाण सन्तोष-जनक नहीं हैं। चैटरटन में अपूर्व प्रतिभा तथा अपूर्व ज्ञान था और यदि वे जीवित रहते तो कदाचित् उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना करते। परन्तु अल्पायु होते हुए उन्होंने अपने समय में एक प्राचीन धारा का पुनरुत्थान कर दिया था। उन्होंने यथार्थवाद के विपरीत काल्पनिकता की रक्षा कर उसी का नवीन जगत बसाना चाहा था। यह कार्य उनके समय में न होकर आगामी काल में सम्पूर्ण हुआ।

चौथा अध्याय

रोमैन्टिक काल,

वर्ड्सवर्थ, बायरन, शैली, कीट्स

रोमैन्टिक काल—उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक नये युग का जन्म होता है। इस नये युग में अठारहवीं शताब्दी के विपरीत अनेक साहित्यिक धाराएँ प्रवाहित हुईं। सबसे बड़ा परिवर्तन काव्य-विषय तथा काव्य-शैली में हुआ। यद्यपि इन धाराओं का जन्म अठारहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध के कवियों द्वारा हो चुका था तो भी उन्नीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के ही कवियों ने उन्हें वेगवती बनाया।

इस साहित्यिक धारा को लेखकों ने 'रोमैन्टिक' नाम दिया है। इसमें उन्होंने अनेक भावों का समावेश माना है। 'रोमैन्टिक' शब्द से वे नये युग की काल्पनिक वास्तविकता, सरलता तथा मानवता, प्रकृति दर्शन, प्रकृति-अनुकरण, जीवन के सौन्दर्य तथा आध्यात्मिकता की ओर संकेत करते हैं।

पिछली शताब्दी के नागरिक जीवन की समस्याएं जटिल हो रही थीं। बुद्धि, तर्क तथा मस्तिष्क के बल पर समाज अपने प्रश्नों का हल ढूंढ़ रहा था। पदार्थ-वाद, तामसिकता, तथा व्यापारी जीवन के द्वन्द्व में मनुष्य अपनी मानवता खो रहा था। व्यापार से लक्ष्मी का आगमन हो रहा था परन्तु उसके साथ ही मनुष्य का प्रेम, मनुष्य की साधुता, मनुष्य की नैतिकता विदा ले रही थी। नगर का जीवन ग्रामीण जीवन से बहुत दूर जा चुका था। ग्रामीण जीवन की सरलता, मानवता और शान्ति से नगर का मनुष्य परे था।

रोमैन्टिक पुनरुत्थान, इस ग्रामीण जीवन की ओर संकेत कर, मनुष्य आशावादी, सन्तोषप्रिय, सरल, शान्तिप्रिय तथा प्रकृति-पूजक बनाने प्रयत्नशील हुआ। इस वर्ग के कवियों ने अपने हृदय की अन्तरतम भावनाओं को ही काव्य की आत्मा माना। पहले के कवि साहित्यिक तथा तार्किक अध्ययन के बल पर काव्य-रचना करते थे। उनके विषय निरूपण में मनुष्य के हृदय का स्थान कम और भाषा का स्थान अधिक था। उनमें उस मनुष्य का स्थान विशेष था जो नगरवासी होकर अपनी सरलता

तथा अपनी मानवता, व्यापार-विनिमय की जटिलताओं में पड़ कर खो चुका था। वह मनुष्य प्रकृति से दूर पदार्थ-वाद का बन्दी था।

विलियम वर्ड्सवर्थ—इस पदार्थ-वाद से मनुष्य को मुक्त कर उसे प्रकृति तथा स्वाभाविक जीवन की ओर ले जाने का श्रेय महाकवि वर्ड्सवर्थ को है। विलियम वर्ड्सवर्थ (१७७०-१८५०) का जन्म 'लेक-डिस्ट्रिक्ट' अर्थात् जलाशयों के प्रदेश में हुआ और उनका बाल्य-काल प्रकृति की गोद में व्यतीत हुआ। अपनी युवावस्था में उन्होंने फ्रांस देश के क्रान्तिकारी लेखक रूसो की पुस्तकों का अध्ययन किया तथा फ्रांसीसी क्रान्ति की घोषणा से उत्साहित हो कर वे एक नये युग का स्वप्न देखने लगे। फ्रांसीसी क्रान्ति की स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृभाव के आदर्शों को वर्ड्सवर्थ ने बड़े गर्व से अपनाया और उन्हीं आदर्शों की नींव पर उन्होंने काव्य-रचना प्रारम्भ की। यद्यपि ये घोषणायें राजनीतिक थीं किन्तु इनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति का श्रेय वर्ड्सवर्थ को ही है।

वर्ड्सवर्थ की सम्पूर्ण रचनाओं में प्रायः ये आदर्श समान रूप से नहीं मिलते। क्रमशः कवि ने फ्रांसीसी क्रान्ति की असफलता देखी और उन उच्च आदर्शों का भी पतन देखा जिसका वे स्वप्न देखा करते थे। कवि अब दुखी, क्रुद्ध तथा परम्परावादी हो चले और अपनी वृद्धावस्था में यहाँ तक हठधर्मी हो गये कि उन्होंने अपने पुराने आदर्शों को ठुकरा कर अंग्रेज़ी पार्लेमेण्ट के अनेक प्रस्तावों का विरोध किया जो मनुष्य को विशेष राजनीतिक तथा सामाजिक अधिकार दे रहे थे।

वर्ड्सवर्थ का समस्त जीवन काव्य साधना में ही बीता। युवाकाल में वे फ्रांस चले गये। वहाँ क्रान्ति आरम्भ हो चुकी थी। कवि में आदर्शवाद के साथ-साथ प्रेम का भी आविर्भाव हुआ और उन्होंने वहाँ एक फ्रांसीसी सुन्दरी से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। परन्तु वे अपनी प्रेमिका और उसकी नवजात बालिका को छोड़कर शीघ्र ही इंगलिस्तान वापस आए और अपनी बहन डॉरोथी वर्ड्सवर्थ तथा अपने मित्र कोलरिज के सम्पर्क में रह कर काव्य-रचना आरम्भ किया।

डॉरोथी वर्ड्सवर्थ बड़ी सुशिक्षित तथा तीक्ष्ण बुद्धि की महिला थीं। उन्होंने वर्ड्सवर्थ का ध्यान प्रकृति सुन्दरी की ओर आकर्षित किया और कवि के सम्मुख एक नया आत्मिक-स्वप्न अवतरित हुआ। प्रकृति की छाया में कवि के सन्तप्त हृदय को अपार शान्ति मिली। वह अब अपनी

प्रेयसी को भूल गया। प्रकृति के सुन्दरतम आकर्षणों ने उसका मन मोह लिया। पक्षियों के गीतों में, प्रपातों के झर-झर में, वायु के मर-मर में कवि ने आध्यात्मिक सत्यों का विकास पाया और नागरिक जीवन के प्रति उसकी घृणा बढ़ती गई। अन्त में उसने प्रकृति-पूजन के नाए आदर्श की दुन्दुभि बजाई और मानव को प्रकृति की छत्रछाया में विश्राम लेने को आमन्त्रित किया।

वर्ड्सवर्थ ने अपने मस्तिष्क के विकास की कहानी 'दि प्रिल्यूड' (१८५०) में लिखी है। इस कविता में कवि ने अपने अन्तरतम भावों के उत्थान तथा विकास का वर्णन बड़ी निष्कपटता से किया है। परन्तु कवि ने इस पुस्तक से उतनी ख्याति न पाई जितनी उन्हें 'लिरिकल बैलेड्स' काव्य संग्रह (१७०८) से मिली। उन्होंने अपने मित्र कोलरिज के सहयोग में यह पुस्तक लिखी थी। इस संग्रह के प्राक्कथन में कवि ने अपनी नई शैली तथा नवीन विषय चयन पर गूढ़ तर्क के साथ अपने साहित्यिक विचार प्रकट किए हैं। विषय चयन में नवीनता इसलिए है कि उन्होंने ग्रामीण जीवन का मनुष्य अथवा ग्रामीण जीवन के परिचित दृश्य ही समस्त कविताओं के आधार रखे हैं और शैली की नवीनता इसलिये है कि लेखक ने केवल वे ही शब्द ग्रहण किये हैं जो ग्रामीण अपनी दिन चर्या में प्रयोग करता था। कोलरिज ने भी नवीन विषय चुने। उन्होंने काल्पनिक जगत को वास्तविक जगत पर अवतरित करने का प्रयास किया और इसमें उन्हें अद्भुत सफलता मिली। परन्तु वर्ड्सवर्थ का साहित्यिक प्रयास बहुत अंशों में असफल रहा। इसमें सन्देह नहीं कि इन नवीन सिद्धान्तों को मौलिक रूप से वर्ड्सवर्थ ने ही कार्य-रूप में परिणित किया। 'मिकेल' इस संग्रह की सबसे सफल कविता है। इस कविता में कवि दुःखद चित्रों में काव्य की मर्यादा प्रतिष्ठित करता है। 'टिन्टर्न ऐबी' नामक कविता में कवि की वर्णनात्मक तथा विवेचन शक्ति पूर्ण-रूप से प्रगट है। 'एक्सकर्शन' में कवि यद्यपि एक छोटे कथानक पर काव्य-रचना करता है फिर भी स्थल-स्थल पर धार्मिक विश्लेषण तथा प्रकृति दर्शन मनोहर है। प्राचीन कथानक पर विरचित 'लायोडेमाया' आध्यात्मिकता तथा प्रेमावेश से ओत-प्रोत है। परन्तु वर्ड्सवर्थ की लोकप्रिय कविताओं में उनके गौरव गीत हैं जो प्रेम, प्रकृति, राष्ट्रीयता और आध्यात्मिक विषयों पर हैं। 'इम्मॉरटैलिटी ओड' में कवि

'लेडी ऑव दि लेक'. (१८१०) में कवि ने अपनी कल्पनाशक्ति अपने अद्भुत-रस प्रेम तथा मध्यकालीन जीवन की ओर रुचि का परिचय दिया। योद्धाओं की प्रेम-साधना, युद्ध, करुण दृश्यों तथा, भावुक प्रेमिकाओं के सफल तथा रोचक चित्र स्कॉट ने अपनी कविताओं में खींचे हैं। परन्तु उनका काव्य-स्रोत क्रमशः सूखता गया और वे उपन्यास रचना की ओर प्रवृत्त हुए जहाँ उन्होंने बड़ी ख्याति पाई।

लॉर्ड बायरन—स्कॉट ने कविता लिखना वास्तव में बायरन के भय से छोड़ा। लॉर्ड बायरन ने रोमैन्टिक धारा के एक विशाल अंग को लेकर आवेशमय काव्य रचना प्रारम्भ कर दी थी। यह अंग था कल्पना-जगत की वास्तविकता तथा स्वयं-वाद की प्रतिष्ठा। बायरन जब हैरो स्कूल में विद्यार्थी थे तो उसी समय से उनकी काव्य-रचना की इच्छा हुई। उसी समय उन्होंने एक काव्य-संग्रह 'आवर्स ऑव आइडिलनेस' प्रकाशित किया जो उनकी भावुक तथा विषाद-पूर्ण आत्मा का चित्रण करता है। इस पुस्तक की समालोचना में आलोचकों ने बायरन को दुर्वचन कहे और संग्रह की घोर निन्दा की। इस निन्दा का उत्तर बायरन ने 'इँगलिश बार्ड्स एन्ड स्कॉच रिव्युअर्स' (१८०९) नामक कविता में इस तीक्ष्ण व्यंग और आवेश में दिया कि समालोचक समाज सिहर उठा और सदा के लिये शान्त हो गया। अब बायरन लंदन समाज के नायक बन गये। उनमें गर्व और घृणा आवेश तथा कार्य हीनता, करुणा तथा उत्साह के भाव आगत तथा गुप्त होते गए। वे इन्हीं विचार तरंगों में काव्य रचना करते गये और अपनी प्रत्येक रचना पर अपने जीवन, अपने चरित्र तथा अपने निजी आदर्शों की पूरी छाप लगा दी।

बायरन की पहिली कविता जो लोकप्रिय हुई, वह 'गियोर' (१८१३) थी जिसमें कवि ने कल्पना जगत में विचर कर अनेक साहसिक तथा सुन्दर सर्ग सम्पादित किये। यह कविता इंगलिस्तान ही नहीं वरन् समस्त यूरोप में लोकप्रिय हुई। उस समय के पाठक इसे बड़े चाव से पढ़ते थे। बायरन ने दूसरी कविता 'चाइल्ड हैरल्ड्स पिलग्रिमेज' पुनः उसी विषय पर लिखी। यह (१८१२-१८) में प्रकाशित हुई। इस कविता में बायरन ने अपने जीवन की अनेक किंवदन्तियों तथा अपने जीवन के [illegible] स्पष्ट रूप से वर्णन किया। नगरों के दृश्य, [illegible] अद्भुत यात्राओं के वर्णन, स्थान-स्थान पर

परसी बिश शेली—जहाँ बायरन इस युग की अनियन्त्रित, अव्यवस्थित, आवेश-प्रियता के स्तंभ माने जाते हैं वहाँ परसी बिश शेली (१७९२-१८२२) इस युग की आदर्शवादिता के स्तंभ हैं। शेली का जीवन अत्यन्त अशान्त तथा दुःखमय रहा। बाल्यावस्था से ही वे अपने पिता टिमूथी शेली के सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक आदर्शों के विरुद्ध रहे। टिमूथी ने अपने आदर्शों के अनुसार उन्हें ईटन के स्कूल तथा ऑक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा के लिए भेजा जहाँ से वे नस्तिकता पर लेख लिखने के कारण निकाल दिए गए। फलतः अपने राजनीतिक और सामाजिक आदर्शों के अनुसार उन्होंने काव्य-रचना आरम्भ किया। पारिवारिक अन्याय की विषमता से त्रस्त हैरियट वेस्टब्रुक नामक कन्या से उन्होंने विवाह कर तो लिया पर अपने आदर्शों पर अडिग रहने के कारण उसकी आत्महत्या के मूल कारण भी हुये। मेरी गॉडविन के साथ अपने दूसरे विवाह से शेली सन्तुष्ट रहे और उन्हीं के साथ उन्होंने यूरोप में भ्रमण किया और वहाँ के दिव्य स्थानों-स्विटज़रलैंड तथा इटली में रहकर काव्य-रचना की। परन्तु ३० वर्ष की ही अवस्था में नौका विहार के समय एक तूफ़ान आने और नौका के डूब जाने से वे काल-कवलित हुए।

शेली के जीवन पर कई प्रभाव पड़े थे। फ्रांसीसी राजक्रान्ति की घोषणाओं ने उन्हें उद्वेलित किया, उनके मित्र हॉग ने उन्हें राजनीतिक विषयों की ओर आकृष्ट किया तथा गॉडविन तथा उनकी स्त्री की लिखी हुई क्रमशः दो पुस्तकों 'पोलटिकल जस्टिस' तथा 'राइट्स ऑव विमेन' ने उनके आदर्शों की पुष्टि की। ईसाइयों की धर्म-पुस्तक बाइबिल तथा यूनानी तत्ववेत्ता अफ़लातून (प्लेटो) के आदर्शों ने उन्हें नए जगत का स्वप्न दिखलाया। मानव समाज में अपने आदर्शों तथा अपने सिद्धान्तों का प्रचार कर एक नवीन संसार की स्थापना करने की उनमें प्रबल इच्छा थी। उनका सारा जीवन तथा उनकी सम्पूर्ण काव्य-साधना इसी प्रयत्न में लगी रही। उनकी प्रत्येक कविता में भविष्यवाणी करने तथा संसार का उद्धार-कर्त्ता बनने की प्रबल लालसा है।

अपनी पहली कविताओं-'क्वीन माब' तथा 'रिवोल्ट ऑव इस्लाम' में कवि ने रूढ़ि, सामाजिक क्रूरता तथा दासत्व के विरुद्ध आवाज़ उठाई। 'प्रोमीथ्यूज़ अनबाउन्ड' नामक नाट्य-गीत में कवि ने एक पौराणिक

जीवन से दूर एक अलौकिक, भय रहित तथा सौन्दर्य पूर्ण कल्पना जगत, की प्रतिष्ठा की। कीट्स की कुछ कविताएँ अपूर्ण रहीं। 'हाइपिरियन' में उन्होंने मिल्टन के आदर्शों के अनुसार महाकाव्य की रचना आरम्भ की जिसमें उन्होंने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन करना चाहा था।

कुछ कवियों तथा आलोचकों का कथन है कि कीट्स पलायनवाद में विश्वास करते थे। इसमें सन्देह नहीं कि कवि की पहली कविताओं में इसका आभास मिलता है, परन्तु उनके गौरव गीतों ने यह धारणा निर्मूल कर दी है। इन कविताओं में जीवन की भित्तिओं को ढूँढ़कर एक नवीन दर्शन सिद्धान्त प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। मानव-समाज तथा मानव दुर्भाग्य पर कवि की पूर्ण दृष्टि थी। यदि कीट्स इतनी कम अवस्था में काल-कवलित न हो जाते तो हमें शेक्सपियर की समानता करने वाली रचनाएँ प्राप्त होतीं। कीट्स की असामयिक मृत्यु १८२१ ईस्वी में हुई। उस समय ये केवल छब्बीस वर्ष के थे।

—:o:—

पाँचवाँ अध्याय

टेनिसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फ़िट्ज़ेरल्ड स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी

वर्ड्सवर्थ तथा स्कॉट को छोड़ कर प्रायः सभी रोमैन्टिक कवि अल्पायु ही रहे। कीट्स की मृत्यु १८२१ ई० में, शेली की १८२२ ई० में तथा बायरन की मृत्यु १८२४ ई० में हुई। चार वर्षों के बीच ही ये तीनों कवि संसार से चल बसे। अंग्रेज़ी समाज में अभी भी काव्य-प्रेम अधिक था। यद्यपि वर्ड्सवर्थ तथा कॉलरिज अब भी कविता लिख रहे थे किन्तु उनका काव्य-स्रोत सूख चुका था। बायरन तथा स्कॉट लोकप्रिय थे परन्तु इस समय अनेक छोटे छोटे कवि जनता को समय समय पर लोकरंजक विषयों पर कविताएँ भेंट कर रहे थे।

सैमुएल रोजर्स तथा टॉमस मूर—सैमुएल रोजर्स ने 'इटली' [illegible] कविताएँ [illegible] लिखीं तथा टॉमस मूर ने [illegible] जीवन [illegible] उनकी 'लालारूख' कविता [illegible]

अपने समय के अनेक आविष्कारों, व्यापारिक समस्याओं, नवीन अर्थप्रयोगों को ध्यान में रखकर कविता की जिससे उनकी लोकप्रियता बहुत बढ़ी। आल्फ्रेड टेनिसन की लोक-प्रियता का विशेष कारण उनका काव्य माधुर्य था। छन्द, अनुप्रास, शब्द-माधुर्य, लय तथा गीत काव्य की विशेषताओं से वे पूर्णतया परिचित थे। शब्दों की ध्वनि, पंक्तियों की गति तथा ढंग, लय की सरसता उनके प्रत्येक गीत में पूर्णरूप से विदित है।

एक विशेष वर्ग के कुछ आलोचकों ने कवि की निन्दा की है। यह इसलिये कि कवि स्पष्ट-रूप से जीवन की कटुता, उसकी विषमता और उसकी यथार्थता का चित्रण नहीं करता। वह तो केवल मध्य युग के कल्पना-जगत में विचर कर एक ऐसे काव्य-जगत का निर्माण करता है जहाँ शब्दों की रागिनी, भावनाओं का तारतम्य और तर्कहीन आदर्शवाद की धूमिल ज्योति रहती है। वे ब्राउनिंग को अधिक यथार्थवादी मानते हैं।

रॉबर्ट ब्राउनिंग—रॉबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-८९) ने भी अपनी कविता में समकालीन सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक आदर्शों तथा द्वन्द्वों का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने भी साहित्य का समुचित अध्ययन किया था। मध्ययुग के इटली का साहित्यिक ज्ञान उन्हें यथेष्ट था। उस समय की आध्यात्मिकता तथा नैतिक धाराओं से वे पूर्णतया परिचित भी थे। वे स्वभावतः जीवन के मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक विश्लेषणों में विशेष रुचि रखते थे।

इसी रुचि विशेष के कारण उन्होंने अपने काव्य विषय भी चुने। ये विषय मनुष्य के मस्तिष्क तथा आत्मा से सम्बन्धित थे। परन्तु इसके लिये केवल नाटक का ही माध्यम ठीक होता और ब्राउनिंग को भी नाटकीय वातावरण तथा नाटकीय विश्लेषण अधिक रुचिकर था। तिस पर भी उन्होंने नाटक का माध्यम न चुनकर कविता को ही अपनाया। इसका एक विशेष कारण था। मानव समाज के वर्ग-द्वन्द्व अथवा व्यक्ति-द्वन्द्व के प्रदर्शन में ब्राउनिंग की कोई रुचि न थी। उनकी रुचि मनुष्य के मनस्तल का विश्लेषण करने में थी। इसीलिये उनकी प्रायः सभी कविताएँ मनुष्य का आत्म-विश्लेषण करती हैं। परन्तु उनकी शैली नाटकीय है।

ब्राउनिंग की यह शैली निराली थी। नाटकीय स्वगत की शैली

उन्होंने अपने नाटकीय गीतों का एक लोकप्रिय संग्रह निकाला। १८५५ ई० में 'मेन ऐन्ड विमेन' तथा १८६४ में 'ड्रैमेटिस परसानी' नामक काव्य संग्रह उन्होंने प्रकाशित किये। नाट्य-स्वगत शैली का विस्तृत प्रयोग ब्राउनिंग ने "दि रिंग ऐन्ड दि बुक" नामक पुस्तक में किया। यह नाट्य-काव्य कदाचित् अँग्रेज़ी साहित्य में सबसे बड़ा, दुरूह तथा कवि के दार्शनिक आदर्शों का पूर्ण परिचायक है। कथानक में एक अमानुषिक हत्या का वर्णन है और वातावरण इटली देश का है। इसी दुर्घटना से सम्बन्धित अनेक पात्रों का मानसिक विश्लेषण उन्होंने नाटक रूप में प्रस्तुत किया। यह कविता ब्राउनिंग की अन्य कविताओं से अधिक क्लिष्ट तथा विद्वत्ता-पूर्ण है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में कवि की ख्याति टेनिसन् से तो कम परन्तु उस युग के अन्य कवियों में कहीं अधिक हुई।

अंग्रेज़ी साहित्य में ब्राउनिंग की प्रतिभा का माप अत्यन्त कठिन है। चौदहवीं शताब्दी के साहित्यिक पुनर्जन्म की सम्पूर्ण छाया उनकी कविताओं में है। नाट्य-साहित्य के स्मरणीय पात्रों का वर्णन उनके नाटकों में है। उनकी कविताओं में मानवता के विजय की चर्चा तथा सांसारिक पाप, दुःख और विघ्न बाधाओं की तीव्र अवहेलना है। सांसारिक जीवन पर यदि कवि अपनी तीक्ष्ण दृष्टि डाल सकता तो उसकी कविता गूढ़, यथार्थवादी तथा संपूर्ण होती।

मैथ्यू आर्नल्ड—इस युग में अन्य कवियों को ब्राउनिंग तथा टेनिसन के समान लोकप्रियता नहीं मिली। इस श्रेणी में मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८) थे। उन्होंने शिक्षा-विभाग के कार्यों में लगे रहने पर भी काव्य-रचना की। आर्नल्ड, रग्बी स्कूल के प्रधानाध्यापक डॉक्टर आर्नल्ड के पुत्र थे और उन्हें प्राचीन साहित्य का बड़ा अच्छा ज्ञान था। यूनानी, लैटिन तथा फ्रांसीसी साहित्य का उन्होंने व्यापक अध्ययन किया था जिससे उनका कल्पना जगत यदि निष्प्राण नहीं तो सीमित अवश्य था।

आर्नल्ड के हृदय में सांसारिक दुःखों के फल-स्वरूप एक विचित्र द्वन्द्व था। संसार तथा अनेक सामयिक जटिल प्रश्नों का उत्तर वे स्वयं देना चाहते थे जो केवल दार्शनिक तथा तत्ववेत्ता ही कर सकते थे। अतः उनकी कविता में काल्पनिक तथा अस्पष्ट भावनाएँ अधिक हैं और [illegible] आर्नल्ड ने इसी आन्तरिक व्यथा को व्यक्त करने के लिये

लेखनी उठाई तभी उन्हें काव्य-लेखन में सफलता मिल[illegible] है: काव्य की आत्मा है: रस है।

कवि की सफल रचनाओं में 'एम्पीडाक्लीज ऑन एट्ना' 'दि फॉरसेकन मरमैन', 'थरसिस', 'दि स्कॉलर जिप्सी', 'रग्बी चैपेल' तथा 'डोवर बीच' की गणना है। परन्तु जब जब अपने काव्यादर्शों को प्रस्तुत करने के लिये कवि को रचना करनी पड़ी तब तब वह निष्प्राण तथा अप्रिय रही। "मेरोपी" इसी कारण लोकप्रिय न हो पाई और "सोहराब एन्ड रुस्तम" में भी काव्य की प्राण-प्रतिष्ठा न हो सकी।

आर्नल्ड की प्रतिभा विशेषतः गद्य साहित्य में यथेष्ठ रूप से सुरक्षित है। उनकी कविताएं यद्यपि लोक-प्रिय न हो सकीं फिर भी कारुणिक भाव और शोकगीत लिखने में उन्हें अधिक सफलता मिली। परन्तु आर्नल्ड से भी अधिक सफलता केवल एक ही अच्छी कविता लिख कर एडवर्ड फ़िट्ज़ेरैल्ड (१८०९-८३) को मिली।

एडवर्ड फ़िट्ज़ेरैल्ड—एडवर्ड फ़िट्ज़ेरैल्ड यद्यपि काव्य रचना में आलसी थे परन्तु उनमें काव्य-प्रेम अधिक था। उन्होंने भी इस युग की कारुणिक धारा ग्रहण की और ईरानी कवि उमरख़ैयाम की रुबाइयों का अंग्रेजी में स्वतंत्र अनुवाद किया। यद्यपि उनका यह अनुवाद पहले कुछ दिनों तक लोक प्रिय न हुआ परन्तु ज्योंही उसकी लोक प्रियता बढ़ी, वह फिर रुक न सकी। फलतः रस की प्रचुरता, भाग्य का तिरस्कार पूर्ण [illegible], प्रेम की पूर्णता, जीवन की [illegible] सभी इस कविता में [illegible] है। [illegible] की शैली [illegible] है और इसी में उसकी मौलिकता [illegible]। इसी [illegible] के कारण फ़िट्ज़ेरैल्ड का नाम अंग्रेज़ी साहित्य में स्मरणीय है।

डैन्टे गैब्रियल रोज़ेटी—फ़िट्ज़ेरैल्ड को लोक प्रिय बनाने में जिन [illegible] ने सहयोग दिया उनमें प्रमुख डैन्टे गैब्रियल रोज़ेटी (१८२८-८२) थे। रोज़ेटी चित्रकार थे। उन्होंने अपनी चित्र कला के आदर्शों को अपनी [illegible] गोष्ठी में [illegible] बनाया। इस गोष्ठी के प्रमुख सदस्य होलमैन हन्ट, मिले तथा फ़ोर्ड मैडॉक्स ब्राउन थे। रोज़ेटी ने प्राचीन [illegible] की [illegible] को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया। [illegible] कविता के [illegible] में [illegible] करना [illegible]। [illegible]

स्वतंत्र रूप से सत्य के स्पष्टीकरण का आदेश दिया। उन्होंने स्वयं यही आदर्श अपने सामने रख कर चित्र चित्रित किये थे। काव्य-रचना में भी रोजेटी ने इन्हीं आदर्शों का पालन किया। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक वातावरण से उन्होंने अपनी कविता को अछूता रखा और चित्र-कला के आदर्शों को काव्य में प्रयुक्त किया।

(२) रोजेटी का मस्तिष्क कल्पनात्मक तथा आदर्शवादी था। रहस्यवाद उन्हें प्रिय था। इसलिए उन्होंने अपने काव्य से यथार्थवादी धाराओं को दूर रखा। 'दि ब्लेसेड डेमोज़ेल' में उनकी कला स्पष्ट है। जो मानसिक द्वन्द्व रोज़ेटी में थे वे ही इस कविता में भी हैं। (कविता का कथानक तो यथार्थवादी है परन्तु वातावरण रहस्यवादी है।) रोजेटी छाया के देश में विचरण करते हैं। वहां वायु, चन्द्र, रंगबिरंगे काल्पनिक जल राशि पर खेलती हुई लहरियों की उपमा से वे अपने उपमेयों की ओर संकेत करते हैं। 'पोयेमस' (१८७०) तथा 'बैलेड्स ऐन्ड सॉनेट्स' (१८८१) में छायावाद की पूर्ण छटा है। 'दि हाउस ऑव लाइफ़' में उन्होंने प्रेम को मुख्य विषय मान कर रहस्यवादी कविताएँ लिखीं जिनमें आध्यात्मिकता का स्थान रस वाद ने ले लिया है। कवि की शब्दावली प्राचीन इटली के तत्ववेत्ताओं विशेषतः डैन्टे से ली गई है और कवि पर उनके रहस्यवाद का पूरा प्रभाव है।

चार्ल्स ऐलगर्नन स्विनबर्न—रोजेटी के चरित्र में विचित्र आकर्षण था। उस समय के युवाओं में जो उनसे विशेष रूप से आकर्षित हुए उनमें प्रमुख चार्ल्स ऐलगर्नन स्विनबर्न (१८३७-१९०९) थे। स्विनबर्न ने ईटन तथा हैरो में शिक्षा पाई थी। वे वहाँ दुखी रहे। परन्तु १८६६ ई० में 'पोयेमस ऐन्ड बैलेड्स' के प्रकाशित होते ही उन्होंने लंदन समाज को आकर्षित कर लिया। विक्टोरिया के समय का साहित्य बहुत से यथार्थ वादी विषयों से दूर था। समय ने उन पर परदा डाल रखा था और सभ्य समाज में उनकी चर्चा अनुचित तथा अश्लील थी। रोज़ेटी तथा स्विनबर्न ने इसी साहित्यिक प्रथा के प्रतिकूल रचना करनी आरम्भ की। अपनी कविताओं में स्विनबर्न ने ऐसे प्रेम का वर्णन किया जो विक्टोरिया के काल के कृत्रिम वातावरण से दूर पूर्णतया यथार्थवादी था। उनकी कविताओं का प्रेम लिप्सा मय, स्वच्छन्द, क्रूर तथा कुत्सित था। अनुप्रास की प्रचुरता तथा लय की मधुरिमा के कारण इन कविताओं में रसवाद

टेनिसन, आर्नल्ड, ब्राउनिंग, फिट्ज़ेरेल्ड स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी

और भी गहरे रूप में है। प्रेम की अनेक कुत्सित भावनाओं का कदाचित् उन्हें स्वयं अनुभव न रहा हो। शायद उन्होंने अपने साहित्यिक पठन-पाठन अथवा सम्भवतः फ्रांसीसी लेखक बुद्लेयर की रचनाओं का विशेष सहारा लिया होगा।

स्विनबर्न की अनेक रचनाओं पर जॉन कीट्स का भी प्रभाव है। कीट्स की सौन्दर्य-प्रियता तथा उनके रसवाद ने स्विनबर्न को आकर्षित किया था। यूनानी साहित्य का समुचित अध्ययन कर उन्होंने यूनानी जीवन की सौन्दर्य-प्रियता तथा सौन्दर्य-साधना का अपने गीतों तथा नाटकों में पूर्ण परिचय दिया है। 'इडिलस' में कवि की सौन्दर्य-प्रियता तथा उसके दो नाट्य-गीतों-'एटलैन्टा इन कैलीडन' (१८६५) तथा 'इरेकथियेस' (१८७६) में सौन्दर्य साधना का उत्कृष्ट परिचय है। स्विनबर्न की पहली रचनाओं में पुष्टता है, उत्तेजना है, उत्साह है। परन्तु जब प्रेम-विषयक उत्तेजनाओं को वे काव्य-रूप दे चुके और सुमधुर लय पूर्ण गीत रचना हो चुकी तो उनकी काव्य-प्रतिभा मन्द हो चली। उनमें उत्साह तथा भावावेश न रह कर केवल एक मन्द स्वर लहरी रह गई। केवल शब्दाडम्बर से ही चाहे उसमें मधुरता कितनी ही क्यों न हो, काव्य की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। इसी कारण स्विनबर्न की अन्तिम रचनाएँ अधिक लोक-प्रिय न हो पाईं। स्विनबर्न अन्तिम समय तक काव्य रचना करते रहे, परन्तु उनके 'पोयेम्स ऐन्ड बैलेड्स' की सर्व-प्रियता उन्हें फिर न मिली।

'साँग्स बिफ़ोर सन राइज़' (१८७१) में उन्होंने इटली की स्वातंत्र्य-प्रियता की प्रसिद्धि की; 'ट्रिसट्रम ऑव लियोनीज़' (१८८२) में उन्होंने ट्रिसट्रम तथा इज़्योल्ट के कथानक को नए रूप में रखा और "गार्डेन ऑव प्रॉसरपीन" में उन्होंने सुगठित तथा भावुक शैली में काव्य रचना की। परन्तु जब जब कवि दिन-प्रतिदिन के अनुभवों के विषय पर काव्य-रचना करता तो उसकी कविता नीरस और उसकी शैली ओज-हीन हो जाती थी। कवि कि अन्तिम रचनाएँ इसी कोटि की हैं। केवल उसकी पहली रचनाएँ सजीव तथा उच्चकोटि की हैं।

स्विनबर्न ने शब्द-माधुर्य, ध्वनि-लालित्य तथा लय-गति को अपनी कविता में पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया है। शब्द तथा ध्वनिलहरी से आप्लावित कविता कदाचित् ही कोई दूसरा कवि इस उत्कृष्टता से रच

सका हो। अब काव्य को अन्य विषय तथा दूसरी शैली ग्रहण करने की आवश्यकता इसलिए थी कि स्विनबर्न की शैली उस स्थान पर पहुँच चुकी थी जिसके आगे उसकी प्रगति असम्भव थी।

विलियम मॉरिस—रोजेटी तथा स्विनबर्न की सौन्दर्य प्रियता से विलियम मॉरिस (१८३४-९६) भी कम प्रभावित न थे। रोजेटी का आदर्श, संसार की कुरूपता को सौन्दर्य में परिणत करना था और मॉरिस का आदर्श मनुष्य-कृत सभी वस्तुओं में सौन्दर्य-प्रतिष्ठा था। मॉरिस रस्किन के अनुयायी थे और रस्किन के ही साहित्यादर्श उन्होंने अपनाए। रस्किन का विचार था कि पूँजीवादी समाज में सौन्दर्य-सृष्टि इसलिये नहीं हो सकती क्यों कि वहाँ प्रत्येक पल व्यापारिक लेन-देन की उलझनों में फँसा रहता है। मॉरिस की भी यही धारणा थी। इसी कारण यद्यपि मॉरिस केवल कला प्रिय थे और कागज तथा दीवारों पर चित्रकारी किया करते थे अन्त में साम्यवादी हो गए और क्रान्तिकारी आदर्शों के प्रणेता हुए।

टेनिसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फ़िट्ज़ेरेल्ड स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी

कहानियों में उन्होंने भविष्य का सुन्दर चित्रण किया है। और १८६६ ई० में प्रकाशित 'दि वेल ऐट दि वलर्ड्स एन्ड' में भविष्य के सौन्दर्य और उसके आकर्षण की इतनी स्पष्ट रूप रेखा दी जो कदाचित् ही किसी अन्य कवि ने दी होगी।

क्रिश्चिना रोजेटी—'गॉबलिन मार्केट'—रोजेटी से प्रभावित कवियों में स्वयं उनकी बहन क्रिश्चिना रोजेटी (१८३०-६४) थीं। क्रिश्चिना रोजेटी का जीवन सरल, धार्मिक तथा अत्यन्त पवित्र था और अपने भाई के प्रति उनकी महान श्रद्धा थी। उनकी एक ही कविता लोक-प्रिय है और वह 'गॉबलिन मार्केट' है। इस कविता में कल्पना के रंगीन चित्र विशेष रूप से पाये जाते हैं। परन्तु ज्यों-ज्यों कवियित्री की धार्मिकता तथा रूढ़िवादिता बढ़ती गई उनका कल्पना स्रोत भी सूखता गया।

कॉवेन्ट्री पैटमोर—'दि एन्जिल इन दि हाउस', 'दि अननोन ईरॉस'—क्रिश्चिना रोजेटी के विपरीत कॉवेन्ट्री पैटमोर (१८२३-६६) में ज्यों-ज्यों आध्यात्मिकता बढ़ती गई उनकी काव्य शक्ति तथा कल्पना शक्ति भी बढ़ती गई। पैटमोर वास्तव में रहस्यवादी कवि थे परन्तु उन्होंने यथार्थवाद की ओर भी समुचित ध्यान दिया। 'दि एन्जिल इन दि हाउस' (१८५४-६) नामक एक औपान्यासिक वर्णनात्मक कविता में उन्होंने गार्हस्थ्य जीवन की सफलता के लिये आदेश दिये हैं। "दि अननोन ईरॉस" रहस्यवादी कविता है जिसमें गीतों द्वारा कवि ने रहस्यवाद का पूर्ण परिचय दिया है। भाषा तथा उपमाओं में कवि ने विशेष क्षमता प्रदर्शित की है और अनेक स्थलों पर जटिल रहस्यवादी भावों को सरलता-पूर्वक पाठकों के सम्मुख रखा है। पैटमोर कैथलिक धर्म के अनुयायी थे और इस धर्म का प्रभाव उनकी कविता पर है।

फ्रैंसिस टॉमसन—कैथलिक धर्मावलम्बी दूसरे कवि फ्रैंसिस टॉमसन, पैटमोर से अधिक काव्य-पूर्ण नहीं हैं। टॉमसन दरिद्र तथा दुःखी वंश के थे और अपने दुःखी जीवन के कारण उनको समाज से सान्त्वना भी अधिक मिली जिसके कारण उनकी कविता भी विशेष लोक-प्रिय हुई। टॉमसन की कविता में बाह्य आकर्षण अधिक है। शब्द तथा लय के माधुर्य के कारण उनकी कविता में एक अद्भुत आकर्षण है। 'दि हाउन्ड ऑव हेविन' नामक कविता सबसे सफल और सर्व प्रिय है।

इस कविता में टॉमसन ने ह्रासवादी अनुभवों तथा उनके लक्षणों का सफल वर्णन किया है।

क्रमशः इस युग में कविता की ओर से लेखकों की रुचि हटती गई। इसका कारण यह था कि उपन्यास का आकर्षण साहित्य में बढ़ रहा था। कवि अब भी कविता लिखते थे परन्तु कुछ ही दिनों बाद उपन्यास लिखने की प्रेरणा उन्हें अपनी ओर ले जाती थी। जॉर्ज मेरिडिथ इसी श्रेणी के कवि थे।

जॉर्ज मेरिडिथ—मेरिडिथ (१८२८-१९०९) ने पहले पहल अत्यन्त भाव-पूर्ण तथा सरल गीतों की रचना आरम्भ की। प्रेम और तन्मयता उनके प्रधान विषय रहे जिसका प्रदर्शन उन्होंने "लव इन दि वैली" नामक कविता में किया। 'मॉडर्न लव' (१८६२) में भी उन्होंने प्रेमी जीवन का विश्लेषण बड़ी सरलता से किया है। परन्तु उनकी कविता क्लिष्ट तथा जटिल होती गई। 'पोयेम्स ऐन्ड लिरिक्स' में यद्यपि नैतिकता तथा जीव-विज्ञान का समुचित विश्लेषण है तो भी भाषा जटिल और भाव दर्शन के बोझ से अस्पष्ट हो गये हैं।

जॉर्ज मेरिडिथ का दार्शनिक विश्वास था कि मनुष्य की आत्मिक तथा आध्यात्मिक प्रगति में पदार्थवाद तथा जड़वाद बाधक है। इन्हीं बाधाओं और अपनी दुर्बलताओं के कारण मनुष्य आत्मिक पथ पर नहीं चल सकता। यदि मनुष्य को उसकी मानसिक तथा सामाजिक दुर्बलताओं का ज्ञान हो जाय तो उसे आध्यात्मिक पथ पर चलने में सहायता मिलेगी। कविता में यह आध्यात्मिक निदेश कठिन था। उपन्यास में यह सरल तथा रोचक हो सकता था। फलतः मेरिडिथ ने हर्ष पूर्ण नाटक को उच्च स्थान दिया और इसी सिद्धान्त को प्रमाणित करने के लिए वे स्वयं हर्ष पूर्ण उपन्यास लिखने लगे।

मेरिडिथ दार्शनिक कवि थे परन्तु इसके विपरीत टॉमस हार्डी यथार्थवादी थे। उन्होंने जीवन के कटु अनुभवों का प्रदर्शन करने के लिए अनेक गीत लिखे। इन गीतों के कई संग्रह उन्होंने प्रकाशित किए और सभी में हार्डी ने अपने यथार्थवादी विचार प्रगट किए हैं।

टॉमस हार्डी—टॉमस हार्डी (१८४०–१९२८) का विश्वास था कि मानव-जीवन दुःख मय, सन्तापमय तथा [illegible] है। [illegible]

टेॅनिसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फ़िट्ज़ेॅरेल्ड स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी

क्रूरता के शिकार हैं। वह शक्ति जिसे हम ईश्वर के नाम से पुकारते हैं क्रूर, अमानुषिक तथा कुचक्र रचने वाली है। मनुष्य इसी ईश्वर के चक्रव्यूह में पड़ कर दम तोड़ देता है। इन्हीं विचारों को उन्होंने अपने छोटे गीतों में सरलता तथा तीव्रता के साथ प्रगट किया है। ये गीत-चित्र हृदयग्राही तथा स्पष्ट हैं।

परन्तु हार्डी ने अपने यथार्थवादी अनुभवों का सब से स्पष्ट तथा हृदय-विदारक चित्रण अपने उपन्यासों में किया है, जो कालचक्र द्वारा मानव की अमानुषिक हत्या के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हार्डी ने 'डाइ-नैस्ट्स" (१९०४-८) नामक एक नाटक भी लिखा जिसमें उन्होंने नेपोलियन के समय के यूरोपीय राज्यों तथा सामाजिक द्वन्द्वों का अद्भुत चित्रण किया है। यद्यपि यह नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत करने योग्य नहीं फिर भी इसके अनेक स्थल जहाँ मानवी भावनाओं का विवेचन हुआ है चित्ताकर्षक हैं।

सी० एम० डाउटी—'दि डॉन इन ब्रिटेन'—'डाइनैस्ट्स' की श्रेणी में रखने वाले ऐतिहासिक काव्य बहुत कम रचे गए। सी० एम० डाउटी (१८४३-१९२६) ने 'दि डॉन इन ब्रिटेन' नामक कविता में प्राचीन काल की सभ्यता के चित्र प्रदर्शित किए। वर्णनात्मक कविताओं में इसकी श्रेष्ठता का कारण इसकी नवीनता तथा इसकी सरल तथा स्पष्ट भाषा शैली है। कवि की न तो भाषा ही सौन्दर्य पूर्ण है और न उसमें काव्य का लालित्य ही है। केवल विषय-चयन और विविध स्थलों के सामंजस्य की दृष्टि से ही यह कविता श्रेष्ठ है।

रॉबर्ट ब्रिजेज़—'दि टेस्टामेन्ट ऑव ब्यूटी'—रॉबर्ट ब्रिजेज ने भी एक विशाल कविता 'दि टेस्टामेंट ऑव ब्यूटी" १९२९ में प्रकाशित की जिसमें उन्होंने आध्यात्मिक रूप से सौन्दर्य शक्ति की व्याख्या की है तथा तर्क का स्थान निर्धारित किया है। ब्रिजेज़ की यह कविता दर्शनात्मक है। यद्यपि उन्होंने अनेक गीत बहुत से विषयों पर लिखे हैं परन्तु "टेस्टामेंट ऑव ब्यूटी" ही लोक-प्रिय हो सकी। इस कविता का छन्द अतुकान्त तथा भाषा प्रवाहपूर्ण है।

ऑस्कर वाइल्ड, अरनेस्ट डाउसन, लायनेल जॉनसन, ए० ई० हाउज़मन—रॉबर्ट ब्रिजेज़ के श्रेणी के कवि भी इस ज्यॉर्जियन युग में कम हुए। ऑस्कर वाइल्ड ने कविता अवश्य लिखी परन्तु उनकी ख्याति

उनके नाटकों तथा गद्य के ही कारण विशेष हुई। अर्नेस्ट डाउसन ने प्राचीन काव्य-संकेतों को कविता में नवीन रूप दिया; लॉयनेल जॉनसन ने सरल, संक्षिप्त तथा स्निग्ध गीतों की रचना की तथा ए० ई० हाउज़मन ने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में लैटिन भाषा के आचार्य के पद पर रह कर अनेक यथार्थवादी अनुभवों को काव्य में स्थान दिया।

हाउज़मन ने "श्रॉपशियर लैड" १८९६ ई० में प्रकाशित किया। इसके प्रकाशन से साहित्य में एक नवीन जागृति हुई। 'लास्ट पोयम्स' (१९२२) में भी हाउज़मन ने नवीनता की ज्योति जगाई। उनकी भाषा तथा उनकी शब्दावली वही है जो समाज में स्वभावतः व्यवहृत होती है। उन्होंने उन्हीं लयों, छन्दों तथा यतियों का प्रयोग किया जिनका मनुष्य स्वभावतः व्यवहार करता है। परन्तु हाउज़मन की सरलता के पीछे जीवन की कटुता तथा उसकी विषमता के अनेक चित्र हैं। हाउज़मन में महान विद्वत्ता थी और यदि वे काव्य-रचना में अपने काव्य गुणों का पूर्ण व्यवहार करते तो उनकी गणना कदाचित् श्रेष्ठ साहित्यिकों में होती।

रूपर्ट ब्रुक—जॉर्जियन कवियों में अन्तर्गत हाउज़मन पर आलोचकों की वक्र दृष्टि तो कम रही परन्तु रूपर्ट ब्रुक के चतुर्दशी (सॉनेट) गीतों की उन्होंने तीव्र आलोचना की। समालोचकों का कथन था कि इस वर्ग के कवियों में न तो काव्य की प्रतिभा और न मानव हृदय की ज्ञान ही है। ये कवि केवल समकालीन आन्दोलनों, अस्थिर भावों तथा अनुपयुक्त विचारों के आधार पर काव्य रचने के प्रयत्न में तल्लीन थे। उनमें न तो भाव की गूढ़ता थी और न आदर्श-प्रियता जिससे वे श्रेष्ठ काव्य-रचना कर सकें। रूपर्ट ब्रुक की कविता भी इसी श्रेणी की है। उन्होंने प्रथम महायुद्ध के विषय में [illegible], गम्भीरता, देश-भक्ति, तथा कर्त्तव्य परायणता पर गीत लिखे। ब्रुक के लिये युद्ध एक ऐसी महान् योजना है जिससे मानवता अपने को पवित्र तथा निर्मल बना लेती है। इस प्रकार के रोमान्टिक आदर्शों से ऐसी जनता जो युद्ध की क्रूरता, अमानुषिकता तथा [illegible] की कोई सन्तोष न पा सकती थी। इस युग के कवियों में [illegible]।

वाल्टर डि ला मेयर—डि ला मेयर की कविता में स्वप्न-दृश्य की [illegible] भाषा में आकर्षक सरलता है। कहीं-कहीं

टेनिसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फ़िट्ज़ेरेल्ड, स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी

रहस्यवाद की हलकी छाया उनकी कविताओं तथा गीतों पर है परन्तु माधुर्य्य की कमी कहीं भी नहीं है।

जेम्स एलरॉय फ्लेकर—माधुर्य की दृष्टि से जेम्स एलरॉय फ्लेकर की कविताएं अधिक श्रेष्ठ हैं। फ्लेकर फ्रांसीसी तथा ईरानी भाषा के विद्वान् थे। उन्होंने फ्रांसीसी तथा ईरानी कविता की मधुरिमा अंग्रेजी कविता में स्थापित करनी चाही और उन्हें सफलता भी मिली। फ्लेकर की कविता में लय की प्रधान विशेषता है जिसके कारण उनकी पंक्तियों में विचित्र हृदय ग्राहिता है।

जॉर्जियन वर्ग के कवियों पर यह मुख्य लाञ्छन था कि वे काव्यों में न तो नवीनता ला सकते थे और न हृदय-ग्राहिता। बहुत से कवियों का भी यह मत था कि कविता जितनी यथार्थ जीवन के निकट आ सके उतनी ही सर्व प्रिय होगी। जो कविता यथार्थ जीवन से दूर स्वप्नों का जगत बसाती है श्रेष्ठ कविता नहीं हो सकती है।

जॉन मेसफ़ील्ड—इसी आदर्श को सम्मुख रख जॉन मेसफ़ील्ड ने काव्य रचना प्रारम्भ की। मेसफ़ील्ड पहले समुद्री जीवन से सम्बन्ध रखने वाले नाविकों के जीवन-विषयक गीतों की रचना करते थे परन्तु इस नवीन आदर्श को अपनाने के पश्चात् उन्होंने आधुनिक जीवन के कटु तथा विषम अनुभवों को सम्मुख रख कर काव्य रचना की। "दि एवर-लास्टिंग मर्सी" तथा "डैफ़ोडिल फ़ील्ड्स" में कवि ने उन शब्दों का प्रचुरता से प्रयोग किया है जिनका प्रयोग दलित समाज क्रोध, घृणा तथा आवेश में करता है। उन्होंने दलित वर्ग के दुखी, शिथिल तथा अपवित्र और गन्दे जीवन के विषय पर कविता की और यथार्थवाद को सम्पूर्ण रूप से निभाया। छन्द तथा लय भी कवि ने वही चुने जो इसी यथार्थ-वादी जीवन से मेल खाते और उसकी आत्मा के परिचायक थे।

जेरेल्ड मेन्ली हॉपकिन्स—यथार्थवादी साहित्य की धारा में सहयोग देने वाले कवियों में जेरेल्ड मेन्ली हॉपकिन्स उल्लेखनीय हैं।

१६१ ... ओं में

जटिल रूप से यथार्थवाद का परिचय है। यद्यपि हॉपकिन्स ने अधिक कविताएं नहीं लिखीं तो भी जो कविताएं हैं उनमें अपूर्व मौलिकता, नवीनता तथा काव्य शक्ति है। उन्होंने अपनी कविता में अपने आत्मिक तथा धार्मिक और आध्यात्मिक भावों का अत्यन्त विस्तृत परिचय दिया

है। सत्रहवीं शताब्दी के पश्चात् कदाचित् ही कोई कवि ऐसा होगा जो हॉप्किन्स की मौलिकता तथा उनके गहरे अनुभव की समानता कर सके।

हॉप्किन्स ने अनेक युवा कवियों को काव्य मार्ग दिखलाया और इन कवियों ने उनके निर्दिष्ट पथ को ग्रहण कर महत्वपूर्ण काव्य-रचना की जिसमें आधुनिक युग की विषमता तथा उसकी जटिलता का पूर्ण चित्रण है।

विल्फ्रिड ओवेन—आधुनिक जीवन की विषमता के चित्रण में विल्फ्रिड ओवेन श्रेष्ठ है। युद्ध-जनित युग के मानव का अपूर्व चित्रण कर उन्होंने इस युग की कुत्सितता तथा क्रूरता को काव्य-रूप में पाठकों के सामने रखा है।

टी० एस० इलियट—आधुनिक कवियों में इलियट तथा येट्स का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। टी० एस० इलियट ने अपनी कविता तथा गद्य से आधुनिक साहित्यिक क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इलियट अत्यन्त विद्वान व्यक्ति हैं। प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य का उन्हें अगाध ज्ञान है। फ्रांसीसी साहित्य तथा जेम्स के समय के नाटककारों तथा कवियों की कविताओं से उन्होंने अपनी भाषा-शैली ग्रहण की है।

इलियट की प्रथम कविताएँ १९१७ ई० में 'प्रूफ्राक' नामक संग्रह में प्रकाशित हुईं। इन कविताओं में तीक्ष्ण व्यंग्य नाटकीय रूप से निहित है। इलियट में अनुभूति [illegible] नहीं है। 'प्रूफ्राक' में कवि ने आधुनिक सभ्यता का [illegible] की कटु आलोचना कर जटिल उपमाओं द्वारा [illegible] की पुष्टि की है। 'वेस्टलैण्ड' में कवि ने अधिक विस्तार तथा [illegible] से इस युग के आन्तरिक [illegible] तथा अधार्मिकता का पूर्ण [illegible] किया है। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् यूरोप में नवीन काव्य-धारा प्रवाहित हुई थी जिसमें मानव जीवन का अशान्त, खोखला, शुष्क तथा [illegible] था। इसी जीवन का समुचित उल्लेख 'वेस्टलैण्ड' में है। [illegible] अत्यन्त जटिल है। इलियट ने 'मर्डर इन दि [illegible] [illegible] में [illegible] आदर्शों का प्रतिपादन नाटकीय रूप [illegible] अनेक स्थलों पर आधुनिक द्वन्द्व और द्विविधा [illegible] इलियट की काव्य-धारा तथा उनकी [illegible]

हैं टेनिसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फिट्ज़जेरल्ड, स्विनबर्न, मेरेडिथ, हार्डी के अनेक स्थल साधारण पाठकों की समझ से परे हैं। काव्य की अपेक्षा गद्य क्षेत्र में इस युग का स्थान अधिक श्रेष्ठ है।

डब्ल्यू० बी० येट्स—आधुनिक युग की विविध काव्य-धाराओं का सामंजस्य यदि किसी आधुनिक कवि में है तो वह डब्ल्यू० बी० येट्स में है। येट्स (१८६५-१९३९) की कविता में प्राचीन तथा नवीन दोनों युगों का सामंजस्य है। प्राचीन युग की सरल स्निग्धता, मध्य कालीन काल्पनिकता तथा आधुनिक यथार्थवादिता, सभी की छाया येट्स की कविता पर है। 'दि लेक आइल ऑव इनिसफ्री' गीत में काल्पनिक जीवन की वही मधुरिमा है जो रोमैन्टिक कवियों में थी। येट्स का यह विश्वास था कि काव्य को स्थायी तथा जाग्रत रखने के लिये नवीनता की बड़ी आवश्यकता है और इसके लिये यह आवश्यक नहीं कि प्राचीन काव्य-धारा का तिरस्कार किया जाय।

इसी सिद्धान्त को लेकर कवि ने चार संग्रह 'दि वाइल्ड स्वान्स ऐट कूल' 'मिशेल राबर्ट्स ऐन्ड दि डान्सर', 'दि टावर', तथा 'दि वाइन्डिंग स्टेयर' प्रकाशित किये। येट्स ने इन कविताओं में किंवदन्तियां, लोक गाथाओं तथा हितोपदेशात्मक कहानियों के सामंजस्य से सौन्दर्य पूर्ण, कल्पना मय तथा भावुक गीतों का सुन्दर काव्य संसार निर्माण किया है।

येट्स की कविता में प्राचीन, मध्य तथा नवीन युग के चित्रों का केवल समन्वय ही नहीं वरन् उनकी कल्पना में वही विस्तार है जो स्पेन्सर तथा शेक्सपियर में था, और मानवता में उनका वैसा ही विश्वास है जैसा चॉसर में था। वास्तव में येट्स अंग्रेजी काव्य की बहुमुखी प्रतिभा के श्रेष्ठ परिचायक हैं।

दूसरा खण्ड

नाटक

पहला अध्याय

धार्मिक नाटक

मार्लो, लिली

आरम्भ-काल—अंग्रेज़ी नाट्य-रचना के प्रारम्भिक काल के सम्बन्ध में अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इतिहास लेखकों का कथन है कि इंगलिस्तान में रोमन आक्रमणकारी अपने साथ रंगमंच तथा नाटक भी लाए थे और इंगलिस्तान में उन्होंने विशाल रंगशालाएँ स्थापित की परन्तु उनके जाते ही ये रंगशालाएँ नष्ट हो गई।

भाट—मध्य-युग में नाटकों का कोई स्थान न था। परन्तु जनता ने अपने आनन्द के लिये विदूषकों, गायकों, भाटों तथा नटों को अपना लिया था। इनमें भाट सर्व प्रिय रहे। राज्य दरबारों, युद्धस्थलों, अखाड़ों, विवाहोत्सवों तथा बाज़ारों में उनके गीतों, कहानियों और वीर गाथाओं को लोग बड़े चाव से सुनते थे। साधारणतः भाट निर्धन होते और हीन समझे जाते थे परन्तु जिन पर राज्य कृपा होती थी अथवा जिनमें गायन प्रतिभा होती थी वे धनी भी हो जाते थे।

भाटों की मनोरंजन प्रियता से यात्रियों का भी विशेष मन बहलावा होता था। धार्मिक स्थानों तथा तीर्थों को जाते हुये यात्री अपनी नीरस यात्रा को इनके साथ सहज ही काट लेते थे। यद्यपि ये भाट तथा नट, समाज का इतना सफल मनोरंजन करते थे तो भी ईसाई गिर्जों के पादरी तथा धार्मिक पुरोहित इनके विरुद्ध रहा करते थे। वे इनकी मनोरंजन प्रियता को पाप और इन्हें नारकीय समझते थे। प्रत्येक गिर्जे में कुछ न कुछ भिक्षु भी रहते थे। ये भिक्षु भी पहले तो इन विदूषकों के विरुद्ध रहे किन्तु क्रमशः वे लोग भी इनकी मनोरंजन-प्रियता से प्रभावित हुए।

भी प्रचलित कर दिया करती थी। पादरियों को यह अप्रिय था इसलिये उन्होंने इन विनोदी टोलियों का गिरजे में भी बहिष्कार कर दिया।

परन्तु इन विनोदी टोलियों का अब एक बड़ा वर्ग बन गया था। उनका अपना एक अलग अस्तित्व था। आनन्द प्रदान एक तरह से उनका व्यवसाय हो गया था। इसके साथ अभिनेताओं की एक जाति ही अलग बन गई।

नाटक मंडलियाँ—अब तक तो अभिनेता गिरजे के अन्दर लीला करते और पादरियों का सहयोग प्राप्त करते रहे। इस समय तक न लैटिन भाषा ही प्रचलित व्यवहार में लाते रहे। पादरी वर्ग तो लैटिन ही में धर्मोपदेश करता था। परन्तु अब ये विनोदी टोलियाँ स्वांग अथवा कथानकों को प्रस्तुत करती तो अंग्रेजी का प्रयोग करती थीं। सामाजिक दृष्टि से ये टोलियां अब अभिनेताओं का एक वर्ग हो गईं। अब इस वर्ग में पादरियों का कोई स्थान न रह गया। इस प्रकार स्वाभाविक रूप से अनेक अभिनय टोलियां बन गईं। इन टोलियों ने अपनी सहायक मण्डलियाँ भी बना लीं और धार्मिक पर्वों तथा उत्सवों पर जगह-जगह अपना अभिनय करने लगीं। ये अभिनय विशेषतः ईसा तथा अन्य सन्तों की जीवनी के उद्धरण मात्र होते थे और बीच-बीच में विदूषक अपनी विनोद प्रियता का परिचय देता जाता था।

प्रत्येक गाँव तथा कस्बे में ये अभिनय लोकप्रिय थे। किन्तु एक ही मण्डली सबको एक ही समय पर सन्तुष्ट नहीं कर सकती थी। फलतः पारस्परिक सहयोग हुआ जिससे ये सब जगह पहुँच जाते थे। इन मण्डलियों के पास अभिनय सामग्री, पोशाक तथा चलता-फिरता रंग-मंच भी जिस पर ये अभिनय प्रदर्शित करते होता था। नाट्य साहित्य के इतिहास में इन मण्डलियों तथा ऐसे रंगमंचों का महत्व पूर्ण स्थान है क्योंकि आधुनिक मंच का प्रारम्भिक रूप इन्हीं मण्डलियों में पाया जाता है।

ऐतिहासिक ग्रन्थों से अनुमान होता है कि उस समय अनेक मण्डलियाँ रही होंगी और अनगिनत अभिनय प्रदर्शित होते रहे होंगे। यद्यपि उस समय के जो नाटक मिलते हैं वे संख्या में कम हैं तो भी इसमें सन्देह नहीं कि ये नाटक प्रत्येक स्थान में प्रिय रहे।

नाटक-संग्रह—उस समय के चार नाटक-संग्रह सुरक्षित हैं। पहला

चेस्टर, दूसरा यॉर्क, तीसरा टाउन्ली अथवा वेकफ़ील्ड और चौथा कॉवेंट्री हैं। यॉर्क संग्रह ही सम्पूर्ण है और उसमें ईसाई धर्म-पुस्तक बाइबिल के प्रथम परिच्छेद-संसार-रचना से लेकर प्रलय के अन्तिम दिन तक की गाथाएँ नाटक रूप में हैं।

इन चारों संग्रहों में नाट्य-कला की भी अभिव्यक्ति हुई है। लेखकों ने इनमें नाटकीय तत्त्वों का परिचय दिया है। परन्तु इनमें करुण रस की प्रधानता है। यद्यपि मूल कथा से लेखक विमुख नहीं हुए तो भी उन्होंने विनोदांकों का उपयोग भी किया है।

मिरेकिल्स तथा इन्टरल्यूड्स—जिन नाटकों में सन्त जीवनी तथा उनके अद्भुत धर्म कार्यों का वर्णन किया गया है वे मिरेकिल्स नाम से प्रख्यात हुए। विनोदांकों को इतिहास लेखकों ने इन्टरल्यूड्स नाम दिया है।

कुछ समय के बाद इन धार्मिक नाटकों ने एक दूसरा ही रूप ग्रहण कर लिया। अनेक नाटकों में नाटककार मानव पात्रों का रंगमंच पर प्रयोग न कर के केवल पाप और पुण्य के आध्यात्मिक स्वरूप लेकर ही पात्र रचना किया करते थे। नायक प्रायः मानव अथवा समाज का प्रतीक होता था और अन्य पात्र-पाप और पुण्य के प्रतीक। इन्हीं दोनों के द्वन्द्व में पुण्य की सतत विजय दिखलाई जाती थी। ये नाटक बहुत दिनों तक लोक प्रिय रहे। इस तथ्य का प्रत्यक्ष उदाहरण 'एवरी मैन' नामक नाटक है जिसकी लोक प्रियता पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक बनी रही। इस प्रकार के नाटकों को 'मॉरेलिटीज़' नाम मिला है।

'मॉरेलिटीज़—मॉरेलिटीज़ में यद्यपि पात्र केवल आध्यात्मिक प्रतीक माने गए हैं, तो भी लेखकों ने उन्हें अनेक मानवी गुणों से विभूषित किया है। इनका प्रधान उद्देश्य तो नैतिक अथवा धार्मिक शिक्षा प्रदान करना था; इस दृष्टि से ये नाटक सफल रचनाएँ हैं। इनमें वास्तविकता है, यथार्थ नाटिका है, करुणा है तथा आगे लिखे जाने वाले नाटकों का

विनोदाकों का रंगमंच पर अभिनय कराते थे। इन नाटकों में नीति की मात्रा कम परन्तु हास्य की मात्रा विशेष रूप में रहती थी। ये केवल पात्रों के संवादों द्वारा ही हास्य प्रस्तुत करते थे। कभी कभी वे नाट्य पूर्ण स्थलों में हास्य प्रस्तुत करते परन्तु संवाद ही प्रधान माध्यम थे। इन्टरलूड्स तो केवल दो तीन पात्रों को एकत्रित कर हास्य युक्त संवाद द्वारा दर्शकों का मनोरंजन करते थे। उनमें न तो कोई कथानक और न कोई द्वन्द्व ही था। नाट्य साहित्य में महत्वपूर्ण इन्टरलूड्स हेनरी मेडवेल लिखित 'फ़लजेन्स ऐन्ड लूकर्स', हेवुड रचित 'दि प्ले ऑव दि वेदर' तथा १५२० में लिखित 'मेरी प्ले बिट्वीन दि पार्टनर ऐन्ड दि फ्रायर, दि क्युरेट ऐन्ड 'दि नेबर प्रेट' तथा १५३३ ई० में विरचित 'जॉन दि हसबेन्ड टिब हिज़ वाइफ़ ऐन्ड सर जॉन दि प्रीस्ट' हैं।

इन महत्वपूर्ण विनोदाकों में हास्य युक्त संवाद के साथ-ही-साथ नाटक के कुछ आवश्यकीय अंग भी पाये जाते हैं जैसे कथानक और पात्र विशेषः जिनमें कर्कशा स्त्री, भोला पति तथा कपटी पादरी उल्लेखनीय हैं। कहीं-कहीं इनमें नैतिकता का भी संकेत है।

इस समय युरोप में एक नवीन जागृति हो रही थी जिसका कारण ऐतिहासिक था। प्राचीन शास्त्रों तथा अन्यान्य विद्याओं के अंगों के अध्ययन का प्रधान स्थान यूनान था। कविता तथा नाटक, ज्योतिष तथा विज्ञान, शिल्प तथा चित्रकला सभी के विद्वान् तथा मर्मज्ञ सबसे पहले यहीं हुये थे। इसी समय तुर्कों ने यूनान पर आक्रमण किया। यूनानी विद्वान अपनी रचनाएँ लेकर तितर-बितर हो गये परन्तु उनमें से बहुत से कुस्तुनतुनियाँ में जाकर वहीं बस गये। इन्हीं विद्वानों ने विद्या प्रसार में बड़ी सहायता पहुँचाई। कुस्तुनतुनियाँ एक प्रकार का ज्ञान तीर्थ बन गया। यूनानी ज्ञान की ज्योति सारे युरोप में फैल गई। लेखकों, कवियों, राजनीतिज्ञों समाज सुधारकों धार्मिक महन्तों आदि सभी पर इस नवीन जागृति का प्रभाव पड़ा।

इंगलिस्तान भी इस जागृति के प्रभाव से वंचित न रह सका। अंग्रेज़ी लेखकों के सम्मुख यूनान तथा रोम के सारे काव्य तथा महाकाव्य थे। वे उन्हें चाव से पढ़ते और उनसे प्रभावित होकर नवीन काव्य रचना में संलग्न होते थे। नाट्य-साहित्य, रोम तथा यूनान के लेखकों से पूर्णतया प्रभावित तो न हो सका तो भी कुछ न कुछ प्रभाव उस पर अवश्य पड़ा।

अंग्रेज़ी नाट्य-साहित्य जातीय रूप से ही उन्नत होता रहा। लैटिन नाटकों ने अंग्रेज़ी नाटककारों को शक्ति दी और कथानक दिए, परन्तु उनकी रचनाओं में आत्मा इंगलिस्तान की ही रही।

जॉर्ज गैस्कायन—अंग्रेज़ी नाटककारों ने दुःखान्त तथा सुखान्त दोनों प्रकार के नाटकों के लिखने में अपने सम्मुख लैटिन नाटकों का ही सांचा तथा आदर्श रक्खा। जॉर्ज गैस्कायन ने 'जौ कैस्टा' नामक दुःखान्त नाटक का लैटिन से अनुवाद किया परन्तु सुखान्त नाटक लैटिन से प्रभावित होने पर भी अपनी नवीन जातीयता रखते हैं।

निकोलस उड्ल—लैटिन साहित्य में दो सुखान्त-नाटककार हैं—टैरेन्स तथा प्लॉटस। इन दोनों का कुछ न कुछ प्रभाव अंग्रेज़ी के सबसे पहले लिखे हुए नाटकों पर है। १५५३ ई० के लगभग रचित 'रैल्फ रवायस्टर ड्वायस्टर' पर लैटिन की छाप है। निकोलस उड्ल ने इस नाटक को पहले के विनोदांकों के हास्य के साथ साथ एक सम्पूर्ण नाटक रूप दिया है। 'गैमर गर्टन्स नीडिल' जो लगभग १५५० ई० में लिखी गई अंग्रेज़ी साहित्य की प्रथम हर्ष प्रधान कृति है।

'गैमर गर्टन्स नीडिल'—'गैमर गर्टन्स नीडिल' की विशेषता उसके कथानक, कथोपकथन, यथार्थवादिता तथा सफल चरित्र चित्रण में है। कथानक छोटा तथा हेय तो अवश्य है फिर भी ग्रामीण जीवन के प्रतीक हॉज के चरित्र-चित्रण में पूर्णता है।

दुःखान्त नाटक शैली एक प्रकार से लेखकों की अपनी ही रही। लैटिन नाटक-लेखकों में केवल सेनेका के ही आदर्श उनके सम्मुख थे। सेनेका रोमन सम्राट नीरो के समय के श्रेष्ठ दार्शनिक थे। वे अपने नैतिक व्याख्यानों के लिये मान्य थे। उन्होंने अनेक नाटकों की रचना भी की जिनके कथानक यूनानी गाथाओं से लिये गए हैं। यूनानी नाटकों में देवी और देवता तथा अन्य पात्र नैतिक आदेश देते और धार्मिक वातावरण को पुष्ट करते थे। सेनेका ने नाटक के तीनों स्थलों में परिवर्तन किया। देव-पात्रों के स्थान पर उन्होंने मानव-पात्र रखे, नैतिक आदर्शों के स्थान पर सामाजिक उन्नति का आदर्श और धार्मिक वातावरण को हटाकर सामाजिक तथा राष्ट्रीय वातावरण प्रस्तुत किया। नाटक रचना में सबसे बड़ा परिवर्तन उन्होंने जो किया वह भाग्य अथवा होनी को प्रधान स्थान देना था जो पात्रों से उनके

दुष्कर्मों का प्रतिशोध लेती है। इस प्रतिशोधी शक्ति के प्रयोग के कारण सेनेका के नाटकों में हत्या, दुर्धर्षता और विषमता अधिक है। कथोपकथन में केवल नैतिक वक्तृताएँ ही हैं।

वास्तव में सेनेका में नाटककार की शक्ति न थी। उन्होंने यद्यपि हत्याओं, वक्तृताओं तथा प्रतिशोध के स्थलों का उपयोग तो किया है तो भी उनमें न तो चित्रण का ज्ञान था, न पात्र-सामञ्जस्य की शक्ति थी और न जीवन पर अन्तर्दृष्टि। इसी कारण अंग्रेज़ी नाटककारों का कार्य और भी दुष्कर था। अच्छे नाटक रचना के प्रश्न को कोई महान कलाकार ही हल कर सकता था। १५५६ ईसवी से १५८१ ईसवी तक अंग्रेज़ी लेखक केवल सेनेका के ही नाटकों का अनुवाद करते रहे। १५६२ ईसवी में प्रथम दुःखान्त नाटक की रचना हुई।

टॉमस सैकविल तथा टॉमस नॉर्टन—टॉमस सैकविल तथा टॉमस नॉर्टन दोनों ने मिल कर 'गार्बोड्यूक' नाटक लिखा था। इसकी विशेषता कथानक के अंग्रेज़ी जीवन से सम्बन्धित होने में है। इसका कथोपकथन शुष्क तथा नीरस और कथावस्तु शिथिल है; यद्यपि राजदरबारों में इसके प्रेमी विद्यमान थे फिर भी यह नाटक लोक प्रिय न हो सका।

अंग्रेज़ी जनता को अभिनय देखने का बड़ा चाव था इसी कारण बहुत से नाटकों की लोक-प्रियता रही। इनमें ऐतिहासिक नाटक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं क्यों कि इन्हीं प्राचीन नाटकों के आधार पर ही श्रेष्ठ नाटकों की रचना हुई। १५८८ ई० में लिखित 'दि फ़ेमस विक्टरीज़ ऑव हेनरी दि फ़िफ़्थ', १५९० ई० में रचित 'दि ट्रबुलसम रेन ऑव जॉन, किंग ऑव इंगलेन्ड' तथा १५९४ ई० में विरचित 'किंग लियर' की अत्यधिक प्रसिद्धि रही।

टॉमस किड—अंग्रेज़ी लेखकों के सम्मुख जातीय नाटक को गतिशील करने तथा सेनेका के नाटकों की क्रूरता और रक्तपात हटाकर उन्हें जातीय-भावनाओं के उपयुक्त बनाने का दुष्कर कार्य था। इस साहित्यिक क्षेत्र में टॉमस किड तथा क्रिस्टोफ़र मार्लो ने प्रथम प्रयास किया।

टॉमस किड (१५५७-९५) ने सेनेका को ही अपना आदर्श
न्होंने 'स्पैनिश-ट्रैजेडी' में भयावह कथानक चुना, त्रास-युक्त

जीवन की सार्थकता समझता है। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार का दर्शनशास्त्र तथा इस प्रकार का अजेय नायक, धार्मिक दृष्टि से हेय तथा नास्तिकता प्रचार करने वाला हुआ। परन्तु इस नायक के शौर्य और उसकी अजेयता से मनुष्य को एक उच्च स्थान मिला जो पिछले युगों के साहित्य में कहीं भी न था।

टैम्बरलेन की विशेषता केवल नवीन आदर्श का नायक प्रस्तुत करने में ही नहीं वरन् एक नवीन शैली में भी है। यह शैली छन्द हीन अपद की है। मुक्तक छन्द में मॉर्लो ने ओज का विशेष सञ्चार किया है और अपने पात्रों के उद्दण्ड में उद्दण्ड तथा आवेशपूर्ण भावनाओं को इसी शैली में पूर्णतया व्यक्त किया है। इन पंक्तियों में हृदयग्राहिता तथा उद्वेग है; उनमें अनेक स्मरण रखने योग्य स्थान हैं।

डॉक्टर फाउस्टस—मॉर्लो ने टैम्बरलेन में पार्थिव शक्ति की महानता प्रतिपादित की है। इसके विपरीत उन्होंने डॉक्टर फाउस्टस में आत्मिक शक्ति की उच्चता प्रदर्शित की है। डॉक्टर फाउस्टस का कथानक जर्मन लोक गाथा के आधार पर है। फाउस्टस विशाल बुद्धि का कीमियागर है जो सावलौकिक विद्या पर विजय पाना चाहता है और इसी सफलता के लिये वह अपनी आत्मा शैतान के हाथों बेच देता है।

नाटक की दृष्टि से 'फाउस्टस' अधिक सफल रचना नहीं है; यद्यपि अनेक स्थलों पर लेखक आत्म-विश्लेषण, आध्यात्मिक शक्ति की महानता तथा उसके मर्म को समुचित रूप से प्रगट करता है। शुरू के अङ्कों में फाउस्टस की आत्मा का क्रय अद्भुत रस से पूर्ण है। अन्तिम अंकों में बलिदान के प्रतिशोध में प्रगाढ़ करुणरस की छाया है जो कदाचित् मॉर्लो के अन्य नाटकों में नहीं है। मध्याङ्कों में शिथिलता है और कुछ अंकों में लेखक की प्रतिभा का किंचित परिचय भी नहीं मिलता क्योंकि इन अङ्कों में अपरिपक्व अशिष्ट तथा प्रहसन के भावों के होने से विषय की महानता स्पष्ट नहीं होती।

'एडवर्ड सेकेण्ड'—मॉर्लो के नाटकों में एडवर्ड सेकेण्ड ही श्रेष्ठ प्रतीत होता है। यद्यपि इस नाटक में न तो लेखक का पुराना आवेग है और न ओज तो भी अङ्कों के सामञ्जस्य तथा चरित्र-चित्रण की विविधता इसमें अन्य नाटकों से कहीं अधिक है। लेखक ने प्राचीन ऐतिहासिक

तो केवल नाटककार थे परन्तु उनके समकालीन रॉबर्ट ग्रीन (१५६० ९२) कवि, उपन्यास लेखक तथा पत्रकार भी थे। उन्होंने मॉर्लो के नाटकों की लोकप्रियता के कारण समझ कर उन्ही का अनुकरण आरम्भ किया। परन्तु उन्हें इस अनुकरण में सफलता न मिली। इसी कारण उनके प्रमुख नाटक 'एलफॉन्सस' तथा 'अरलैन्डो फ्यूरिओजो' केवल स्थूल ही नही वरन् अनुकरणात्मक ही रह गए हैं।

जिन हर्षात्मक नाटकों में ग्रीन को विशेष सफलता मिली वे 'फ्रायर बेकन-ऐन्ड फ्रायर बंगे' तथा 'जेम्स फ़ोर्थ' थे। 'फ्रायर बेकन' के कथानक मे राजा तथा दर्बारी, जादूगर तथा अन्य श्रेणी के लोग एकत्रित होते हैं और परस्पर वार्त्तालाप करते हैं। 'जेम्स' के कथानक में राजकुमार, एक ग्रामीण कन्या से प्रेम-संवाद करता है। इस प्रकार के पात्रों का एकत्रीकरण कर ग्रीन ने एक नवीन प्रणाली स्थापित की। इसी पात्र-समन्वय को सबसे सुन्दर रूप शेक्सपियर ने दिया।

जॉर्ज पील—रॉबर्ट ग्रीन के साथियों मे जॉर्ज पील ने भी नाटक रचना की। जॉर्ज पील (१५५८-९८) का प्रथम नाटक 'एरेनमेंन्ट ऑव पेरिस' था जो राज-महिषी तथा दर्बारियों के सम्मुख अभिनीत होने के लिये लिखा गया था। इसका कथानक भी पौराणिक है और लिली की ही नाट्य परम्परा का अनुकरण इसमें हुआ है। यद्यपि इस नाटक में शिथिलता तथा अस्वाभाविकता है, तो भी इसमे काव्य, कला तथा गीत-माधुर्य विशेष मात्रा मे है। 'मोरेलिटी' नाटकों की परम्परा भी पील ने 'डेविड ऐन्ड बेथशीब' में जीवित रखी। यद्यपि उन्होंने ईसाई धर्म-पुस्तक बाइबिल के कथानक चुने, परन्तु अपनी वर्णन-कला तथा व्यंग-पूर्ण शैली के प्रयोग से उसे अत्यन्त रोचक बना दिया। पील का सबसे रोचक तथा सर्व-प्रिय नाटक 'दि ओल्ड वाइव्ज़ टेल' है जिसमें कल्पना तथा व्यंग का अपूर्व सम्मिश्रण है।

नाटकों का विरोध—सोलहवी शताब्दी के अन्तिम भाग मे इंग-लिस्तान में नाटकों का बहुत प्रचार हुआ। लोकमत भी इसके पक्ष में था, परन्तु इसके विरुद्ध कुछ प्यूरिटन लोग थे जो अपने धर्म में किसी प्रकार की रंगरलियाँ नहीं चाहते थे। वे नाट्य-शालाओं की कार्यवाही से अत्यन्त असन्तुष्ट रहते थे। वे उन्हें अधार्मिक तथा शैतान-गृह समझते थे, और समय-समय पर सरकारी नियमों की सहायता से अभिनेताओ को बहिष्कृत

करना चाहते थे। लन्दन में नाटक खेलने वालों की संस्थाएँ बन चुकी थीं, परन्तु शहर के नेता तथा नागरिक सभाओं के सदस्य अपना विरोध प्रगट करते ही जाते थे। उनका यह विश्वास था कि ये नाटक-मण्डलियाँ जनता को पाप मार्ग पर ले जाकर उनका चरित्र भ्रष्ट कर अधर्म की स्थापना करती हैं परन्तु जन-समाज में मनोरंजन की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप में होती है और वह नागरिक नियमों तथा सरकारी विधानों से बहिष्कृत नहीं हो सकती। इसी कारण जैसे-जैसे सरकारी नियम अभिनेताओं के विरुद्ध बनते गये उन नियमों के उलंघन की चेष्टा भी वैसे ही वैसे होती गई।

नाटक-मण्डलियाँ विशेषतः राज-दरबारों के सम्मुख अपने नाटकों का अभिनय किया करती थीं। जन-समाज की इच्छा भी उन्हें देखने की रहती थी। इधर अभिनेता भी अपनी सफलता से उत्साहित हो जनता के सामने भी नाटक खेलने का प्रयत्न करते थे। किन्तु वहाँ उन्हें सरकारी-विरोध का सामना करना पड़ता था। इस विरोध को हटाने के लिये मण्डलियों ने शहर के बाहर नाटक खेलने का आयोजन किया। पहले पहल सरायों में इन मण्डलियों ने नाटक अभिनीत किये। परन्तु १५७६ ईसवी में उन्होंने शोरडिच नगर के बाहर एक नाट्य-शाला बना ली। नगर के अन्दर केवल एक ही नाट्य-शाला थी, जो 'ब्लैक फ्रायर्स' के नाम से प्रख्यात थी। परन्तु इस नाटक शाला में केवल बाल अभिनेता ही नाटक खेलते थे। सरकारी विधान के अनुसार नाट्य-शालाओं के अभिनेता किसी भी समय बन्दी बना लिये जा सकते थे। सरकार उन्हें दुष्टों, लम्पटों तथा आवारों की श्रेणी में रखती थी।

नाटक मण्डलियों का संरक्षण—इस सरकारी विरोध से छुटकारा पाने के लिये अभिनेताओं ने एक विचित्र युक्ति सोची। उन्होंने अपनी मण्डलियों को दरबार के प्रसिद्ध व्यक्तियों के शरणागत कर दिया। और इसी सेवक रूप में शहर के अन्दर अभिनय करने लगे। इस व्यवस्था से ये मण्डलियाँ अब सरकारी क़ानून से मुक्त हो गईं और स्वतन्त्रता-पूर्वक स्थान-स्थान पर अपने नाटक खेलने लगीं। प्यूरिटन वर्ग के सदस्य उन्हें अब कोई क्षति न पहुँचा सकते थे। स्वतन्त्रता पूर्वक अभिनय करने के उद्देश्य से ही एलिज़बेथ के समय की मण्डलियों ने 'क्वीन्स मेन', 'लॉर्ड ऐडमिरल्स मेन', 'लॉर्ड चेम्बरलेन्स मेन', नाम ग्रहण किये।

रंगमंच—इस शताब्दी में यद्यपि नाटक खेलने की स्वतन्त्रता तो

मिल गई थी परन्तु रंगमंच के आकार में अधिक नवीनता न आ सकी थी। इस समय का रंगमंच आधुनिक रंगमंचों से बिलकुल भिन्न था। यह रंगमंच मैदान में स्थित रहता और परिस्थिति के अनुसार इधर-उधर हटाया जा सकता था। इसके लिये कोई मकान अथवा नाट्य शाला निश्चित न थी। खुले आकाश के नीचे लकड़ी के लम्बे चौड़े मंच पर अभिनय होता था। मंच के सामने न तो कोई पर्दा होता था और न मंच का कोई भाग ही पर्दों से छिपा रहता था। मंच का अगला भाग सर्वथा खुला रहता था और पिछले भाग के बीचो-बीच एक कोठरी भी होती थी जिसके सामने एक छोटा बरामदा होता था। इसी पर एक लकड़ी की छत रहती थी। यह छत खंभों पर स्थित रहती थी। इसी छत के ऊपर एक ऊँचा झरोखा होता था जहाँ से नाटक आरम्भ होने की सूचना बिगुल बजाकर दी जाती थी। इसी झरोखे पर नाट्य-शाला का झंडा फहराया करता था जिससे अभिनय की सूचना मिला करती थी।

परन्तु ये अभिनय केवल दिन ही में हो सकते थे, क्योंकि वहाँ प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं रहती थी। सूर्य के डूबते डूबते नाटक भी समाप्त हो जाता था। दूसरे दिन फिर नाटक आरम्भ होता और सन्ध्या तक समाप्त हो जाता।

इस रंगमंच के खुले होने के कारण पिछले भाग को छोड़ शेष तीनों ओर दर्शक बैठ सकते थे। मंच के तीनों ओर छज्जे होते थे जिन पर दर्शक खड़े होकर अभिनय देखते थे। मंच के अग्रभाग को घेर कर दर्शक बैठते थे। बहुत से सम्पन्न तथा प्रभावशाली व्यक्ति तो मंच पर ही आ बैठते थे।

मंच के ऊपर के संकेत के लिये कोई समुचित सुविधा न रहती थी। वही मंच नगर का दृश्य था, वही गाँव का, वही समुद्र का तथा वही जङ्गल था। इस अभाव के कारण दर्शकों को दृश्यों का और स्थानों का ज्ञान करना अत्यन्त कठिन था।

परन्तु इस प्रकार की सभी असुविधाओं तथा अड़चनों का प्रतिरोध नाटककार बड़ी सरलता से कर लिया करते थे। दिन में नाटकों का अभिनय कर उन्होंने कृत्रिम प्रकाश की असुविधा को हटा ही दिया था, और चलता-फिरता रंगमंच बना कर नाट्य-शाला की कमी पूरी कर ली थी। अब रही दृश्यों की व्यवस्था तथा पात्र-संकेत की सुविधा। इनका भी

उन्होंने प्रतिरोध एक नवीन ढङ्ग से किया। नाटककार ने दृश्यों की पृष्ठ-भूमि का परिचय अपनी काव्य-प्रतिभा से देना प्रारम्भ किया। जल, थल के सुन्दर दृश्य नाटककार काव्य-रूप में रखने लगा। वह अपनी वर्णनात्मक प्रतिभा से उस स्थान का सम्पूर्ण वातावरण उपस्थित कर देता था।

नाटककार पात्र संकेत वेश भूषा के बल पर करते रहते थे। नाटक के पात्र जैसे राजा, रानी, राजमन्त्री, सेनापति, विदूषक, नागरिक, ग्रामीण आदि अपना स्पष्ट परिचय अपनी विशेष वेशभूषा से देते थे। इस प्रकार दृश्यों की न्यूनता तथा वातावरण के अभाव की पूर्ति वे काव्य-प्रतिभा तथा वेश-भूषा से करते थे।

सत्रहवीं शताब्दी में क्रमशः नाट्य शालाओं की व्यवस्था हुई। कुछ प्रभावशाली व्यक्ति अपनी निजी नाट्य शालाएँ बनाकर अभिनय देखते थे, और सन्ध्या से ही कृत्रिम प्रकाश में नाटक खेला जाता था। चार्ल्स द्वितीय के समय में रंगमंच पर दृश्यों की व्यवस्था हुई, शालाओं का निर्माण हुआ और ये नाट्य शालाएँ नाटक सामग्री से भी परिपूर्ण हो गईं।

—:o:—

दूसरा अध्याय

शेक्सपियर, बेन जॉनसन, काँग्रीव, शेरिडन

सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में जब इंगलिस्तान की जनता में नाटक की रुचि बढ़ रही थी, नाट्य-शालाएँ बन रही थीं और राज्य के प्रभावशाली व्यक्ति इस नये साहित्य की रक्षा कर रहे थे, उस समय एक महान् कलाकार का जन्म हुआ। यह कलाकार था विलियम शेक्सपियर।

विलियम शेक्सपियर—विलियम शेक्सपियर का जन्म स्ट्रैटफ़र्ड ऑन एवन नगर में १५६४ ईसवी में हुआ था। उनके पिता पहले सम्पन्न व्यापारी थे। नगर की पाठशाला में थोड़ी बहुत लैटिन तथा यूनानी भाषा सीखने के बाद ही पिता की आर्थिक अवस्था बिगड़ जाने के कारण बालक शेक्सपियर की शिक्षा स्थगित हो गई। १५७८ ईसवी से लेकर १५८६ ई० अर्थात् आठ वर्ष तक जीविकोपार्जन के लिये शेक्सपियर ने

क्या-क्या किया इस संबंध में मतभेद है। सम्भवतः वे किसी कसाई की दूकान की देखभाल करते रहे, अथवा शिक्षक रहे, अथवा किसी वकील के साथ रहे; परन्तु यह निश्चित है कि उन्होंने १५८२ में अठारह वर्ष की अवस्था में अपने से आठ वर्ष बड़ी एन हैथवे से विवाह कर लिया और जीविकोपार्जन के लिये लन्दन की राह ली।

लन्दन नगर में शेक्सपियर नाटक खेलने वालों की टोलियों में शामिल होकर एक सफल अभिनेता बन गए। अभिनय कार्य के साथ-साथ वे नाटकों के संशोधन तथा मौलिक नाटक भी लिखने लग गए थे। उन्होंने तीस वर्ष की अवस्था में संशोधन कार्य तथा नाटक रचना की। इसी समय उन्होंने कविताएँ भी लिखीं और राज्य-महिषी एलिज़बेथ तथा जेम्स प्रथम के कृपा-पात्र बन गए। लन्दन में उन्होंने ख्याति और धन-संचय कर ग्यारह वर्ष के पश्चात् वे फिर स्ट्रैटफ़ोर्ड लौट आए। वहाँ उन्होंने अपना घर बनाया और राज दरबार से सम्पन्नता सूचक अधिकार प्राप्त कर स्वयं नाटकों का निर्देशन करने लगे और 'ग्लोब थियेटर' के साझीदार भी हो गए। इस समय शेक्सपियर सम्पन्न ही नहीं वरन् सुखी रहे। १६१६ ईसवी के निकट स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण एप्रिल मास में उनकी मृत्यु हो गई।

शेक्सपियर का रचना काल चार भागों में विभाजित किया जाता है। इस सम्पूर्ण काल में उन्होंने ३७ नाटकों की रचना की। इनमें सुखान्त, दुःखान्त, ऐतिहासिक तथा रोमान्टिक नाटक हैं। परन्तु यह विभाजन शेक्सपियर का किया हुआ न होकर आलोचकों का किया हुआ है। उन्होंने नाटकों का गम्भीर अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि शेक्सपियर के नाटक उनके सम्पूर्ण अनुभव के स्पष्टीकरण हैं। इसमें एक कठिनाई और भी थी। नाटकों का रचना-काल निश्चित रूप से ज्ञात न होने के कारण आलोचकों ने अनेक प्रकार के प्रमाणों से उनका रचना-काल स्थिर करने की चेष्टा की है।

आलोचकों ने जिन प्रमाणों का सहारा लिया वे आन्तरिक तथा बाह्य प्रमाण हैं। आन्तरिक परीक्षा में उन्होंने छन्द, यति, नाटकीय कौशल तथा प्रौढ़ चरित्र-चित्रण का ध्यान रखा तथा बाह्य परीक्षा में समकालीन लेखों तथा मुद्रकों के साक्षी पत्रों का सहारा लिया है। उन्होंने इन्हीं

दोनों प्रकार के प्रमाणों से समस्त नाटकों की रचना तिथियाँ निश्चित की हैं।

रचनाएँ—प्रथम काल (१५८८-९३) की रचनाओं से यह पता चलता है कि लेखक अपना मार्ग ढूढ़ रहा था। उसमें जीवन की ओर रुचि थी और नाटकीय दृष्टि से उसमें उमंग, आवेश तथा शब्दाडम्बर और अलंकार-प्रियता थी। इस काल की निम्नलिखित रचनाएँ हैं :—

ऐतिहासिक	हर्षप्रधान नाटक	दुःखान्त
हेनरी षष्ठम—३ भाग	कॉमेडी ऑव एरर्स	टाइटस एन्ड्रॉनिकस
रिचर्ड—तृतीय	लव्ज़ लेबर लॉस्ट	रोमियो ऐण्ड जूलियट
रिचर्ड—द्वितीय	टू जेन्टिलमेन ऑव वेरोना	
	मिडसमर नाइट्स ड्रीम	

द्वितीय काल १५९४ ई० से १६०० ई० तक अर्थात् ६ वर्षों का है। इन रचनाओं से विदित होता है कि इस समय लेखक संसार को समझने का यत्न कर रहा था। जीवन के दुःख-सुख में उसे विशेष रुचि थी और उसे अब न तो अलंकार और न काल्पनिक जगत का वातावरण ही रुचिकर रह गया था। अब उसकी दृष्टि वास्तविक जगत पर तथा उसकी आशा, निराशा, घृणा तथा आग्रह और दुराग्रह पर थी। इस काल के अन्तर्गत निम्नलिखित नाटकों की गणना की जाती है :—

ऐतिहासिक—	सुखान्त
किंग जॉन	मरचेन्ट ऑव वीनिस
हेनरी चतुर्थ—२ भाग	टेमिंग ऑव दि श्रू
हेनरी पंचम	मच एडो एबाउट नथिंग
	ऐज़ यू लाइक इट
	मेरी वाइव्ज ऑव विन्डसर
	ट्वेल्फ़थ् नाइट

इस काल के उत्तरार्ध में उन्होंने फ्रांसीसी तथा लैटिन भाषा के कथानकों का पूर्णरूप से सहारा लिया और कुछ नाटक तो उनके संशोधित तथा संयोजित रूप मात्र थे।

शेक्सपियर का तीसरा काल १६०१ ई० से १६०८ ई० तक अर्थात् ७ वर्ष तक रहता है। इस काल में उनकी निम्नलिखित रचनाओं की की गणना की जाती है :—

दुःखान्त	सुखान्त
जूलियस सीज़र	ऑल इज़ वेल दैट एन्ड्स वेल
हैमलेट	ट्रॉयलस एन्ड क्रेसिडा
ओथेलो	मेज़र फॉर मेज़र
किंग लियर	
मेकबेथ	
टाइमन ऑफ एथेन्स	
एन्टनी एन्ड क्लियोपाट्रा	
कोरियोलानस	

नाट्य-कला—इस काल की रचनाओं में लेखक की अद्भुत नाट्य शक्ति का परिचय प्राप्त होता है। स्वयं उनके जीवन में बहुत सी दुःखद घटनाएं घटित हुई थीं। स्वजनों की मृत्यु तथा वियोग से उन्हें घोर मानसिक पीड़ा हुई थी। पग-पग पर उन्हें जीवन, मरण, भाग्य, दुर्भाग्य, क्लेश, और शांति के प्रश्न साकार होते दिखलाई दिये। इन्हीं गूढ़ प्रश्नों को हल करने के लिये उन्होंने जीवन की गहराई में बैठकर सत्य की खोज की। उनके नाटकों के नायक कर्त्तव्य परायण हैं, भाग्याधीन हैं, प्रताड़ित हैं तथा प्रतिभाशाली हैं। उन सब में जीवन की सम्पूर्णता नहीं वरन् निष्फलता है। इसके दो कारण हैं। सब प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी उनमें एक कमी है और वह कमी है—उनकी अस्थिर मानसिक अवस्था। इस अस्थिरता का कुछ उत्तरदायित्व तो उनके मानसिक आवेग तथा उद्धतता पर है और कुछ भाग्य पर जो नैतिक भित्ति पर आधारित होते हुए जीवन को उसी प्रकार आच्छादित किये हुए है जिस प्रकार आकाश पृथ्वी को।

दुःखान्त नाटकों के विषय मानव जीवन के विषम स्थल, मानव हृदय की जाँच और उसकी गहराई का अनुसंधान है। इन नाटकों के हैमलेट, ओथेलो, मेकबेथ, लियर, टाइमन इत्यादि नायक अपनी मन की एकान्त लगन के कारण, भाग्य चक्र में फँसकर प्रताड़ित होते हैं, हत्या करते हैं तथा स्वयं भी आत्म-हत्या कर बैठते हैं। ठीक उसी समय वे अपनी त्रुटि और अपने जीवन की अपूर्णता का अनुभव कर, शांति एवं श्रद्धा का पाठ पढ़ाकर आत्मिक और आध्यात्मिक सत्य घोषित करते हैं।

१६०८-१२ तक के चौथे काल में शेक्सपियर ने निम्नलिखित नाटकों की रचना की :—

ऐतिहासिक	हर्ष प्रधान नाटक
हेनरी अष्टम	पेरिक्लीज़
	सिम्बेलीन
	विन्टर्स टेल
	टेम्पेस्ट

इन नाटकों से प्रतीत होता है कि इस समय लेखक जीवन की विषमताओं और उसके जटिल चक्र तथा भाग्य की प्रताड़ना से ऊपर उठकर दैवी शान्ति प्राप्त कर चुका था। स्थावर जगत की कुटिलता तथा मनुष्य की असफलता के कारणों को समुचित रीति से समझ कर, वह उस स्थान पर पहुँच चुका था जहाँ क्लेश के पश्चात् शान्ति, दुःख के पश्चात् सुख, द्वेष और घृणा के पश्चात् क्षमा और प्रेम की ज्योति प्रज्वलित रहती है। जिस प्रकार झंझावात में समस्त जगत उद्वेलित तथा अस्त-व्यस्त हो अन्धकारमय हो जाता है, परन्तु समय बीतते ही काल रात्रि व्यतीत हो जाती है और प्रातः उषा की लालिमा से आकाश प्रकाश-मान हो उठता है और सूर्य रश्मियां फिर से नवजीवन का संचार करती हैं, उसी प्रकार लेखक जीवन की झंझा के बाद पूर्ण शान्ति प्रतिष्ठापित करता है।

तीसरे काल की रचनाओं में पुरुष नायक है। जीवन-नौका की पतवार उसके हाथ है। उसी के हाथों जीवन-नौका काल-भँवर में चक्कर खाकर जल राशि में विलीन हो जाती है। परन्तु चौथे काल में स्त्रियों पर दायित्व है। ये पुरुषों का स्थान तो नहीं लेतीं, वरन् जीवन शासन की एक बागडोर अपने हाथों में रखती हैं। यह शासन है प्रेम का, क्षमा का, श्रद्धा का और इसी के सहारे ये जीवन को सफल, शान्ति पूर्ण तथा सुखमय बनाती हैं।

इन नाटकों की आइमोजेन, परडिटा, मिरैन्डा नायिकाएँ प्रेम, क्षमा और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति हैं। ये अपनी कोमलता, भावुकता तथा शालीनता से जीवन पर शान्त रस सरसाती रहती हैं और एक ऐसे नवीन युग की ओर संकेत करती हैं जिसकी नींव है क्षमा और प्रेम।

शेक्सपियर के समस्त नाटकों पर एलिज़बेथ के युग की पूरी छाप है। एलिज़बेथ के समय का इंगलिस्तान इन नाटकों में पूर्णतया प्रति-बिम्बित है। उस समय के अंग्रेज़ी समाज, उसकी रीति-नीति, व्यवहार,

प्रथाएँ, राजनीति के प्रश्न, लोकाचार तथा लोक-विश्वास सभी इनमें प्रदर्शित हैं।

अँग्रेज़ी इतिहास में एलिज़बेथ का युग स्वर्ण-युग कहा गया है। इस युग में राष्ट्र ने बड़ी उन्नति की। उनकी नाविक शक्ति ने सारे यूरोप में अपनी सत्ता बना ली थी। राष्ट्र के योद्धाओं ने दूर देशों में अपनी पताका फहराई और यात्रियों तथा नाविकों ने नये सामुद्रिक मार्ग खोज निकाले। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवजागृति तथा नवजीवन था और इसी वातावरण से प्रेरित होकर शेक्सपियर के महान् नाटक लिखे गए।

ये नाटक पहले तो मौखिक ही रहे, परन्तु बाद को पात्रों के पास से ये हस्तलिखित प्रतियाँ चुराई गईं और आगे चल कर मुद्रित हुईं। पहले पहल शेक्सपियर के नाटक १५९७ ई० में क्वार्टो अथवा चौपेजी रूप में प्रकाशित हुए, परन्तु शेक्सपियर की मृत्यु के पश्चात् १६२३ ईसवी में उनके मित्रों हेमिन्ज तथा कोन्डेल ने मिलकर उन्हें फ़ोलियो (दुहरे मुड़े हुए पत्र) के आकार में प्रकाशित किए। इसके अनन्तर जनता की रुचि के अनुसार अनेक संस्करण निकलते रहे।

शेक्सपियर की प्रतिभा से इस युग के अन्य नाटककारों की तुलना करना कठिन है। परन्तु इसी युग में अन्य नाटककार भी हुए जिनकी रचनाएँ सजीव तथा पुष्ट हैं। इनमें बेन जॉनसन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

बेन जॉनसन—बेन जॉनसन (१५७३-१६३७) प्रतिभाशाली लेखक थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण था। प्रतिभा तथा कला की दृष्टि से वे शेक्सपियर के विपरीत थे। बेन रूढ़िवादी, प्राचीन ग्रन्थों के विद्वान्, नीतिज्ञ तथा नाट्य-कला के सुधारक थे। उन्होंने प्राचीन रूढ़ियों के अनुसार रचना प्रारम्भ की और सुखान्त नाटकों में देश-काल का विशेष ध्यान रखा। इसी देश काल की परिधि में उनके समस्त नाटकों की रचना हुई है। उन्होंने लन्दन के सामाजिक जीवन का वास्तविक परिचय दिया है। उन्होंने अपने नाटक शेक्सपियर के काल्पनिक नाटकों के विरोध में लिखे और प्रत्येक नाटक की भूमिका में अपने नाटकों की श्रेष्ठता तथा उनकी यथार्थवादिता के संबंध में अपने विचार प्रकट किए हैं।

बेन जॉनसन के समय में, इंगलिस्तान में एक नया वर्ग बन रहा था। वह वर्ग नये व्यापारियों का था जो धर्म और व्यापार जगत में प्रतिष्ठित

हो रहा था। जॉनसन की तीव्र दृष्टि इन्हीं लोगों के चरित्र पर पड़ी और उन्होंने यथार्थ रूप में उनका चित्रण किया। बेन जॉनसन का मत था कि मनुष्य के मानसिक जीवन में किसी न किसी प्रकार की ऐसी त्रुटि होती है जिससे वह समाज के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकता। ऐसे मनुष्यों की बनावट में कोई ऐसा पदार्थ उत्पन्न हो जाता है जिससे उनके चरित्र में दम्भ, आडम्बर, क्रोध, घृणा, इत्यादि मानसिक रोग हो जाते हैं। अपने नाटकों में इन्हीं मानसिक रोगों से ग्रस्त चरित्रों को पात्र बना कर, वे सुधारक की दृष्टि से, उन्हें हास्यास्पद रूप में चित्रित करते हैं।

बेन के समस्त नाटकों में मानसिक रोग से ग्रस्त अनेक पात्र हैं जो उपहास और नाट्य-कला की दृष्टि से सरलता पूर्वक जन शिक्षा के लिये प्रदर्शित किये जा सकते हैं। यद्यपि शेक्सपियर ने भी मनुष्य की मानसिक अशांति और सामाजिक त्रुटियों को हास्यास्पद बनाया, परन्तु बेन की शैली यथार्थवादी है, उनके पात्र समाज के जीवित अंश हैं और उनका उपहास स्थायी है।

रचनाएँ—इस सुधारक दृष्टि से लिखा हुआ, उनका प्रथम सफल नाटक 'एवरी मैन इन हिज़ ह्यूमर' है। इस नाटक में बेन ने पात्रों के मानव चरित्र की अनेक कुरीतियों की ओर संकेत किया है। अनेक स्थलों पर उनका उपहास कठोर तथा कटु हो गया है। इसका कारण लेखक की सुधार प्रियता है। बेन जॉनसन के अन्य चार नाटकों में उनकी सम्पूर्ण प्रतिभा प्रस्फुटित हुई है। 'वॉलपोनी' में लेखक ने लोभी जीवन को [illegible] हास्यास्पद बनाया है; 'दि एल्केमिस्ट' में कदाचित् लेखक ने अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा प्रदर्शित की है और इस नाटक का हास्य तथा [illegible] किसी अन्य सुखान्त में नहीं मिलता। [illegible] तथा निम्न [illegible] 'बार्थोलोम्यू फेयर' में, तथा 'दि साइलेंट वूमन' में [illegible] मधुर हास्य के साथ चित्रित किया गया है।

जॉनसन को सफलता ही नहीं वरन् ख्याति भी मिली। शेक्सपियर की सर्वप्रियता के कारण ही बेन के नाटकों की लोक प्रियता आगे न बढ़ पाई।

जॉर्ज चैपमन—विद्वता की दृष्टि से जॉर्ज चैपमन (१५५९-१६३४) किसी प्रकार कम नहीं। वे अपने नाटकों के लिये तो कम परन्तु यूनान के महाकाव्य लेखक होमर के महाकाव्यों के अनुवाद के लिये अधिक प्रसिद्ध हैं। चैपमन ने एलिजबेथ के समय की नाट्य-शालाओं में अनेक कार्य किए। अभिनेताओं में भी वे प्रिय रहे।

रचनाएँ—केवल तीन ही ऐतिहासिक नाटकों के कारण चैपमन की विशेष ख्याति हुई: 'बुसी दैम्बॉय', 'द रिवेन्ज ऑव बुसी दैम्ब्रॉय' तथा 'ट्रैजेडी ऑव बिरॉन'। इनके कथानक फ्रांसीसी इतिहास से लिये गये हैं, परन्तु वातावरण समकालीन इंगलिस्तान का है जिसमें लेखक ने अपनी ओर से नवीन स्थलों का निर्माण कर उन्हें इतिहास में समन्वित कर लिया है। ये तीनों नाटक मार्लो के अनुकरण मात्र हैं। बुसी भी मार्लो के नाटकों के नायक के समान उद्दण्ड तथा शूर है। वह मार्लो के नायकों की भाषा का भी उपयोग करता है। भाषा में वही आवेग, वही आवेश तथा वही शब्दाडम्बर है। चैपमन ने अत्यधिक अलंकृत भाषा का प्रयोग किया है और बड़ी बड़ी उपमाओं तथा रूपकों के प्रयोग से पात्रों का कथोपकथन अत्यन्त कृत्रिम बना दिया है। इन नाटकों में न तो चरित्र-चित्रण है और न मार्लो की भाषा की मधुरता है। छन्दों में केवल रूपक तथा अन्य अलंकारों की असह्य छटा है। इसमें चरित्र-चित्रण तथा कथानक को आघात पहुँचा है। तत्कालीन दर्शक इन नाटकों को शायद ही समझ सके होंगे। परन्तु यदि देखा जाय तो इस शब्दाडम्बर के अन्तर्गत चैपमन का तत्वज्ञान तथा दर्शन-प्रियता विदित है।

टॉमस डेकर—सत्रहवीं शताब्दी में अन्य नाटककारों ने भी विशिष्ट नाटकों की रचना की। यथार्थवादी शैली और यथार्थपूर्ण नाटकों की सर्वप्रियता भी प्रचलित रही। बेन जॉनसन ने यथार्थवादी शैली ही अपनाई थी। अन्य यथार्थवादी लेखकों में टॉमस डेकर (१५७२-१६४१) का नाम प्रसिद्ध है।

टॉमस डेकर ने यद्यपि यथार्थवादी शैली ग्रहण की तो भी उन्होंने अपने नाटकों में भावुकता तथा काल्पनिक सत्यों का विशेष ध्यान रखा है। डेकर ने 'दि शू मेकर्स हॉलिडे' में लन्दन के निम्न वर्ग के लोगों

का बड़ा सजीव चित्रण किया है। उन्होंने इस वर्ग के मनुष्यों को सामाजिक दृष्टि से मनुष्य मानकर उन्हें अपनी ही श्रेणी में चित्रित किया है। इस पुस्तक का नायक साइमन आयर इसी व्यवसाय में प्रसिद्धि पाता है। अपने दूसरे नाटक 'दि ऑनेस्ट होर' में डेकर ने यथार्थवादिता को नाटकीय बनाया है और स्त्री के चरित्र-चित्रण में कौशल दिखाया है। डेकर विशेषतः नागरिक वर्गों के नाटककार हैं।

टॉमस हेवुड—इंगलिस्तान के नवीन मध्यम श्रेणी के मनुष्यों के नाटककार टॉमस हेवुड (१५७५-१६४१) हैं। उन्होंने अपने नाटकों में भावुकता तथा आन्तरिक नैतिक उलझनों का आश्रय लेकर 'ए वुमन किल्ड विद काइन्डनेस' में इसी भावुकता तथा नैतिक विश्लेषण को प्रदर्शित किया है। हेवुड के नाटकों में न तो शेक्सपियर की महानता है और न उनका गांभीर्य।

इस समय के नाटककार दो वर्गों में विभक्त थे। एक तो वह जो राजदर्बार पर दृष्टि रखते हुए अपनी रचना करता था और दूसरा वह जो मध्यम श्रेणी के मनुष्यों की त्रुटियाँ तथा उनकी सामाजिक दशा का चित्रण करता था। जॉन फ्लेचर तथा फ्रेन्सिस ब्रोमन्ट ने दर्बारी जीवन पर ही दृष्टि रखी और संयुक्त रूप से रचना प्रारम्भ की।

जॉन फ्लेचर तथा फ्रेन्सिस ब्रोमन्ट—जॉन फ्लेचर (१५७९-१६२५) तथा फ्रेन्सिस ब्रोमन्ट (१५८४-१६१६) की तीन प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। 'फिलैस्टर' में उन्होंने मिश्रित भावों का चित्रण किया और सुखान्त तथा दुःखान्त दोनों प्रकार के भावों को सफलतापूर्वक जनता के सम्मुख रखा। 'ए मेड्स ट्रैजेडी' तथा 'ए किंग एन्ड नो किंग' पूर्णतया दुःखान्त हैं। परन्तु इन नाटकों का वातावरण अस्वाभाविक तथा उनके भाव-प्रदर्शन में अतिरंजना है। यद्यपि इन नाटकों का आधार दर्बारी जीवन है तो भी कृत्रिमता की मात्रा अधिक है। इसमें सन्देह नहीं कि कथानक सफल तथा विस्तारपूर्ण है और छन्दों में गति तथा कोमलता है, परन्तु शेक्सपियर के नाटकों की तुलना में ये हेय हैं। शेक्सपियर की तुलना में तो कदाचित् ही कोई अन्य नाटककार सफल हो। इसका कारण यह है कि इन नाटककारों ने न तो जीवन को सूक्ष्म दृष्टि से देखा है और न उनकी लेखनी में जीवन की महानता चित्रित करने की शक्ति है। फिर भी यदि, शेक्सपियर से

उनकी तुलना न की जाय तो भी इनमें अनेक साहित्यिक गुण तथा नाटकीय तत्त्व मिलेंगे जो अन्य नाटककारों में नहीं हैं।

सत्रहवीं शताब्दी के इन चालीस वर्षों में साधारणतया ऐसे ही नाटककार हुए, जिन्होंने सुखान्त तथा दुःखान्त दोनों प्रकार के नाटक लिखे और जिनमें नैतिक सत्यों का प्रतिपादन भी हुआ है, परन्तु सभी में अस्वाभाविकता तथा कृत्रिमता है। ये नाटककार जीवन से दूर, कला की गंभीरता से दूर और जीवन के तत्त्व तथा इसके अनुभवों से भी दूर हैं। इस वर्ग के नाटककारों में सबसे अधिक विख्यात जॉन वेब्स्टर हैं।

जॉन वेब्स्टर—जॉन वेब्स्टर (१५७५–१६२५) ने दो दुःखान्त नाटक लिखे जिन पर उनकी ख्याति निर्भर है। पहला 'दि व्हाइट डेविल' है और दूसरा है 'दि डचेज आव मैल्फी'। इन दोनों नाटकों का कथानक प्रतिशोध विषयक है। लेखक का यह विश्वास है कि मानव जीवन कुटिल तथा क्रूर है जिसमें न तो मानवता की सफलता है और न उसमें विश्वास। उनके पात्र घोर से घोर नारकीय यातनाएँ भोगकर भी अपनी शक्ति, अपना वैभव, अपनी लिप्सा और अपनी क्रूरता नहीं छोड़ते। इसी में उनकी विजय है और संसार की हार। कहीं कहीं वेब्स्टर का दृष्टिकोण अनैतिक प्रतीत होता है परन्तु उसके पीछे मानव-जीवन की अजेयता एवं विशालता छिपी हुई है।

वेब्स्टर के कथानक शिथिल हैं। नाटकों का कार्य-व्यापार तीव्र आवेश तथा भावावेश के द्वारा सम्पादित होता है। हिंसा तथा क्रूरता कार्य-व्यापार के स्तम्भ हैं। परन्तु ये त्रुटियाँ रंगमंच पर प्रदर्शन के समय विदित नहीं होतीं। पढ़ने पर ही ये स्पष्ट होती हैं। इसका कारण वेब्स्टर की नाट्य-कला है। वेब्स्टर कवि भी हैं और अपनी कविता के बल पर पात्रों का सफल चित्रण करते हैं। उनकी काव्य शक्ति से ही उनके पात्र जीवित तथा महत्वपूर्ण बने रहते हैं। उनके प्रति घृणा न होकर सम्मान होता है; उनकी हार में भी सन्तोष प्राप्त होता है। अन्य लेखकों में हमें ये बातें नहीं मिलतीं।

सिरिल टूर्नर—सिरिल टूर्नर (१५७५–१६२६) का नाट्य-जगत भी वेब्स्टर के नाट्य जगत से कम अस्वाभाविक नहीं है। 'दि रिवेंजर्स ट्रेजेडी' तथा 'दि एथीस्ट्स ट्रैजेडी' का वातावरण भी क्रूरता, हिंसा तथा रक्तपात से रंजित है। कथानक में दरबारी जीवन की झलक तथा कार्य

चीजें थीं। परन्तु मनुष्य की आनन्द-प्रियता को निर्जीव कर देना समय के लिये भी अत्यन्त कठिन था। इसीलिये स्टुअर्ट युग में फिर मनोरंजनकारी साधनों का प्रादुर्भाव हुआ। चार्ल्स प्रथम के समय में भी कुछ मौलिक नाटकों की रचना हुई। ये नाटक दर्बारों में अभिनीत होते थे। इन नाटकों में कविता, कल्पना, तथा प्रेम का समुचित सामंजस्य रहता था और इन्हें उच्चवंश के अथवा राजवंश के व्यक्ति ही चेहरे अथवा (मास्क) लगाये रंगमंच पर खेलने आते थे। ये नाटक 'मास्क' कहलाते थे और इनका प्रचार राज्य प्रासादों तथा दर्बारों में विशेष रहा।

१६६० ईसवी के लगभग इंगलिस्तान में नवीन युग का जन्म हुआ। चार्ल्स प्रथम के वध के पश्चात् प्यूरिटन वर्ग की विजय हुई थी और अनेक वर्षों तक प्युरिटन समुदाय के मनुष्यों का राज रहा। क्रॉमवेल ने अपनी अपार शक्ति लगा कर प्युरिटन आदर्शानुसार देश पर राज्य किया, परन्तु अंग्रेज़ों को बहुत काल तक यह राजनीतिक परिस्थिति प्रिय न रही। क्रॉमवेल की मृत्यु के पश्चात् देश में खलबली मच गई। जनता में स्टुअर्ट राजाओं के लिये एक नवीन श्रद्धा उत्पन्न हो चली और कुछ ही समय पश्चात् जनता ने क्रॉमवेल के शासन को उलट कर चार्ल्स द्वितीय को राज्य सिंहासन पर बैठने के लिये आमंत्रित किया। अब रेस्टोरेशन अथवा पुनः राज-शासन का युग आया। चार्ल्स द्वितीय ने अंग्रेज़ी शासन की बागडोर हाथ में लेते ही नाट्यशालाओं पर से प्रतिबन्ध हटा दिये। नाट्यशालाएँ अब दुगने उत्साह से काम करने लगीं और नाटककारों को फिर से जीवन दान मिला। उन्होंने पहले पुराने कलाकारों के नाटकों को प्रदर्शित करना आरंभ किया। बेन् जॉनसन तथा शेक्सपियर के नाटक फिर रंगमंच पर खेले जाने लगे।

नाटकों की लोकप्रियता बढ़ते ही लेखकों ने मौलिक रचनाएँ भी आरम्भ कीं। इन रचनाओं में हर्ष प्रधान नाटक ही, समय की गति के कारण लोकप्रिय हुए। यद्यपि अनेक विषयों पर रचनाएँ होती रहीं परन्तु जिस विषय पर मौलिक तथा महत्वपूर्ण रचनाएँ हुईं वह सामाजिक विषय था। सामाजिक आचरण ही नाटकों के विषय बने और तीन लेखकों ने सुचारु-रूप से यही विषय अपनाया। ये तीन लेखक एथरिज, वाइचर्ली तथा कांग्रीव थे।

एथरिज—सर जॉर्ज एथरिज (१६३५-९१) ने ही वह नवीन

प्रणाली निकाली। उन्होंने साहित्यकार की दृष्टि से देखा कि पुरानी कल्पनापूर्ण तथा काव्यपूर्ण रचनाएँ न तो सम्भव ही हैं और न सर्वप्रिय हो पाएँगी। इसलिए उन्होंने समकालीन समाज के आचार-विचारों को ही कथानक रूप में ग्रहण किया और नाटकों में शिष्ट तथा सुंदर स्त्रियों के प्रेम-व्यापार तथा उनके प्रेमियों के अवैध प्रेम और कटु-युक्तियों को रंगमंच पर प्रदर्शित किया। उनके वार्तालाप में सरस परिहास, वक्रोक्तियाँ तथा तीव्र विनोद रहता था जिसे सुनकर दर्शक लोट-पोट हो जाते थे और उनकी लोकप्रियता बढ़ती थी। 'दि मैन ऑव मोड' उनका सफल नाटक है।

विलियम वाइकर्ली—इसी सामाजिक विषय पर विलियम वाइकर्ली (१६४०-१७१६) ने भी रचना की। यद्यपि उन्होंने जॉर्ज एथरिज की शैली अपनाई, परन्तु उन्होंने व्यंग और हास्य को अधिक स्थान दिया और प्रत्येक स्थल पर जहाँ वार्तालाप तथा रोचक उक्तियाँ हैं तीक्ष्ण व्यंग और तीव्र उपहास भी उनके साथ हैं। वाइकर्ली ने जॉनसन तथा फ्रांसीसी नाटककार मुलियर का समुचित अध्ययन किया था और इन दोनों लेखकों का अनुकरण कर उन्हीं के कथानकों को ले नाटकों की रचना की है। परन्तु ये अनुकरण असफल हैं। वाइकर्ली में नाटक लिखने की शक्ति थी और जब उन्होंने अपने निजी कथानकों को ग्रहण कर उन्हें नाटक रूप दिया तो वे शीघ्र ही सर्वप्रिय हुए।

रचनाएँ—वाइकर्ली के चार नाटकों ने उन्हें विशेष ख्याति प्रदान की। 'लव इन ए वुड', 'दि जेन्टिलमन डान्सिंग मास्टर', 'दि कन्ट्री वाइफ' तथा 'दि प्लेन डीलर' में उनकी पूर्ण प्रतिभा विकसित हुई है। उनकी दृष्टि अपने पात्र जगत पर सदैव रहती है और अपने पात्रों पर उन्हें पूर्ण विश्वास भी है कि वे उनके आदर्श समुचित रूप में प्रदर्शित कर सकेंगे। चित्रण में प्रौढ़ता तथा पूर्णता, व्यापकता तथा रोचकता है, परन्तु इन सब के अतिरिक्त उनमें उपहास और व्यंग की इतनी प्रचुर मात्रा है कि दर्शक केवल उपहास और व्यंग ही से संतुष्ट होकर पात्रों से विमुख हो जाते हैं। उनका व्यंग नैतिक आदर्शों से प्रेरित न होकर उनके विराग तथा मानव-द्वेष से प्रेरित है। मोह तथा आनन्द के इन्द्रजाल में पड़े हुए उनके पात्र, अन्त में उस उपहास की दशा पर पहुँचते हैं जो उन्हें कारुणिक ही नहीं वरन् वीभत्स बना देती है।

विलियम कॉंग्रीव—विलियम कॉंग्रीव (१६७०-१७२९) के नाटकों में न तो वाइकर्ली की तीव्रता ही है और न उनका द्वेषमय उपहास। उन्होंने अनेक सफल तथा लोकप्रिय नाटक लिखे और केवल पच्चीस वर्ष की अवस्था में ही वे एक प्रसिद्ध नाटक-कार कहलाने लगे। उन्होंने केवल सात ही वर्ष तक नाटकों की रचना की और ३० वर्ष की आयु में रचना करना छोड़ दिया।

रचनाएँ—कॉंग्रीव की प्रशंसा 'दि ओल्ड बैचेलर' लिख कर हुई। १६९३ में यह पुस्तक प्रकाशित हुई और इसके छपते ही कॉंग्रीव की प्रसिद्धि बढ़ने लगी। इसके पश्चात् उन्होंने 'दि डबल डीलर' (१६९४), 'लव फ़ॉर लव' (१६९५) तथा 'दि वे ऑव दि वर्ल्ड'' तीन हर्ष प्रधान नाटक लिखे। एक दुःखान्त नाटक 'दि मोर्निंग ब्राइड' भी उन्होंने लिखा। १६९७ ई० में उन्होंने साहित्य रचना स्थगित कर दी।

कॉंग्रीव की नाट्य-कला में कई विशेषताएँ हैं। उनके विषय वे ही हैं जिनकी प्रणाली एथेरिज ने चलाई थी। सामाजिक आचार-विचार लौकिक आचरण तथा मित्रों का सामाजिक आदान-प्रदान, इन्हीं को उन्होंने अपने नाटकों का विषय बनाया है। इन्हीं विषयों को उन्होंने इतनी पूर्णता तथा स्पष्टता से दर्शकों के सम्मुख रखा कि उस समय के समाज का सम्पूर्ण चित्र सामने आ जाता है। यह समाज प्रेमियों तथा प्रेमिकाओं का, उच्च वर्ग का और उन वर्गों के सफल जीवन का है जो साधारण मनुष्य के क्लेशों, दुर्भाग्यों तथा विषमताओं से दूर अपना एक अलग लोक बसाये रहते हैं जहाँ प्रेम की रंग-रलियाँ और समाज की अठ-खेलियाँ हैं। कॉंग्रीव के कथानकों में द्वन्द्व भी है, परन्तु वह द्वन्द्व, पाप-पुण्य, धर्म अधर्म में न होकर सामाजिक शिष्टता तथा अशिष्टता, शालीनता तथा नागरिकता, बुद्धि तथा मूर्खता, उपहास तथा रूढ़ि में है। लेखक नैतिकता तथा धार्मिकता की कसौटी का उपयोग नहीं करता। वह अपने तीव्र यथार्थ-वाद तथा व्यंग का जिसमें अपूर्व मानवता तथा मन्द हास्य है

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

जॉन ड्राइडेन—जॉन ड्राइडेन (१६३१-१७००) का सबसे महान नाटक 'ऑलफ़ॉरलव' है जो १६७७ ई० में प्रकाशित हुआ। लेखक ने, [illegible] में लिखा है। शेक्सपियर लिखित 'एन्टनी एन्ड क्लियोपाट्रा' नाटक के कथानक को उसने 'ऑल फ़ॉर लव' के लिए चुना और अपने समय की रीति के विरुद्ध उसने अतुकान्त भाषा को ही अपनाया।

ड्राइडेन में अपूर्व प्रतिभा थी। अपने समय के लेखकों में वे अग्रगण्य थे और उपहास-काव्य तथा व्यंग्य-पूर्ण शैली में उन्हें अनेक

रचनाओं से अच्छी ख्याति प्राप्त हुई। परन्तु नाट्य-रचना में उनकी प्रतिभा, विषय की अस्वाभाविकता तथा भाषा की कृत्रिमता के कारण, कुंठित हो गई है।

गे—गे विरचित 'दि बेगर्स ऑपेरा' (१७२८) नाट्य-साहित्य में महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय रहा है। अन्य लेखकों ने इस कथानक का अनुकरण भी किया परन्तु गे की प्रतिभा न होने के कारण वे असफल रहे।

इस काल की रचनाओं में भावुकता की वृद्धि हो रही थी। चित्तवृत्ति के स्थान पर उमंग तथा आवेश का अस्वाभाविक प्रयोग नाटकों में हो रहा था जिसे लेखक भूल से अनुभूति समझने लगे थे। इस साहित्यिक प्रवृत्ति की इतनी वृद्धि हुई कि अच्छे-से-अच्छे लेखक इसके प्रभाव से नहीं बच सके। यद्यपि समाज में इसका जन्म हुआ था तो भी इसने अन्य स्थलों को भी प्रभावित किया। इसकी छाया धर्म पर भी पड़ी जिसका विकास 'मेथडिज्म' नामक धार्मिक सुधार भाव में हुआ। साहित्य में इसकी प्रगति भावुकता रूप में थी ही। परन्तु इसके अन्य अनेक अवगुण भी साथ-ही-साथ दिखाई दिये।

प्रमुख अवगुण अध्यात्म-वाद के साथ इसकी समानता करना था, जिसके कारण भावुकता-पूर्ण काव्य लिख कर लेखक उसे अध्यात्म-वाद समझते थे। इस धारा ने तर्क को कुंठित किया और सुधार का स्थान करुणा ने ले लिया। मानव-जीवन की यथार्थता के स्थान पर स्वप्न-देश की प्रतिच्छाया का लेखकों ने सृजन किया।

रिचर्ड स्टील—इस विचार धारा के अन्तर्गत बहुत से लेखक भी हुए। रिचर्ड स्टील ने इसका विशेष विवेचन किया है। 'दि टेन्डर हसबेन्ड' में उन्होंने घरेलू जीवन का कोमल चित्र खींचा है।

जॉर्ज लिल्लो—जॉर्ज लिल्लो (१६९३-१७३९) ने 'दि लन्दन मरचेन्ट' और 'दि हिस्टरी ऑव जॉर्ज बार्नवेल' में उच्च तथा निम्न वर्गों का सम्मिश्रण कर आवेशपूर्ण संवाद द्वारा कार्य-सम्पादन किया है। इस सम्मिश्रण से नाटक के कथानकों को नवीन विस्तार मिला और उसकी विशेष प्रगति हुई। नाटकों में अब विस्तार तथा पूर्णता आ रही थी। यथार्थवाद की प्रियता बढ़ने लगी और कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन का समुचित अवसर मिला।

भावुकता की सबसे प्रगाढ़ छाया ह्यू केली तथा रिचर्ड कम्बरलैन्ड

[illegible] जीवन के [illegible]

[illegible]

[illegible] 'फाउस्ट' [illegible] की रचना की। उन्होंने [illegible] लिखे, जिनमें 'फाउस्ट' के [illegible] पाई। [illegible] में भी [illegible] पूर्ण तथा [illegible], [illegible] तथा [illegible] है, परन्तु [illegible] होते है और [illegible] भी [illegible] से होता है।

इस समय यूरोपीय साहित्य पर नार्वे के महान् लेखक हेनरिक इब्सेन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा था। इब्सेन ने आधुनिक जीवन की [illegible] पूर्णतया व्यक्त किया था। अपनी तीक्ष्ण मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उन्होंने मानव-हृदय की प्रत्येक स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक गति को पहचान लिया था। अपने नाटकों विशेषतः 'पियर जिन्ट' 'ब्रान्ड', 'ए डॉल्स हाउस', 'घोस्ट्स', 'एन एनिमी ऑफ दि पीपुल' तथा 'वेन वी डैड अवेकेन' से उन्होंने अपना स्थान अमर बना लिया था।

ने अभिनय सुसंगठित किया और यथार्थवादी रूप में अपने नाटकों में, जीवन का विश्लेषण किया। बार्कर अच्छे नाटककार थे और उन्होंने अपने नाटकों में आधुनिक जीवन की समस्याओं को अत्यन्त हृदयग्राही रूप में प्रस्तुत किया।

उनके 'दि व्यायर्जी इनहेरिटेन्स' (१६०५) और 'वेस्ट' (१६०७) यथार्थवादी नाटक रंगमंच पर सफल रहे। 'दि मैरीइंग ऑव ऐन लीट' तथा 'प्रुनेला' में उन्होंने भयावह भावनाओं का सहारा लिया और वे भी लोकप्रिय रहे।

जॉन गॉल्सवर्दी—आधुनिक समाज की समस्याओं ने अनेक लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया। जॉन गॉल्सवर्दी (१८६७-१६३३) ने यद्यपि अधिक ख्याति उपन्यासकार के रूप में पाई, तो भी उन्होंने कई नाटक लिखे जिन पर आधुनिकता की पूरी छाप है। गॉल्सवर्दी ने सामाजिक जीवन की समस्याओं का विश्लेषण करना ही अपना ध्येय बनाया। 'स्ट्राइफ' (१६०६) में उन्होंने औद्योगिक जीवन के द्वन्द्वों, तथा 'जस्टिस' और 'लायल्टीज' में सामाजिक जीवन के कारुणिक द्वन्द्वों को चित्रित किया।

गॉल्सवर्दी के पात्र आधुनिक जीवन के वर्गों के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। वे ही अनेक समस्याओं के नायक भी हैं और उन्हीं के चरित्र-चित्रण में वे समाज के अन्यान्य द्वन्द्व-पूर्ण स्थलों पर गहरा प्रकाश डालते हैं। नाटकों की कथा वस्तु सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा औद्योगिक समस्याएँ हैं। लेखक बड़े कौशल से इन्हीं द्वन्द्वों का विश्लेषण कर, अपनी करुणा के संकेत द्वारा भले-बुरे, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक और न्याय-अन्याय का ज्ञान कराता है। उसका विश्लेषण मार्मिक तथा हृदय ग्राही होता है, और एक कुशल मध्यस्थ तथा सरकारी वकील की भाँति दोनों पक्षों का वह उचित प्रतिपादन करता है। इस दृष्टि से गॉल्सवर्दी उच्च कोटि के नाटककार हैं।

जॉन मेसफील्ड—जॉन मेसफील्ड ने भी यथार्थवादी परम्परा के अनुसार ही नाट्य-रचना की। 'दि ट्रैजेडी ऑव नैन' (१६०८) में उन्होंने पारिवारिक समस्या प्रस्तुत की है, और कवि होने के कारण अपने नाटकों में काव्य का विशेष पुट दिया है।

सेन्ट जॉन अरवाइन—बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही सेन्ट जॉन अरवाइन की ख्याति यथार्थवादी नाटककारों में बढ़ रही थी।

उन्होंने 'जेन क्लेग' (१९१३) तथा 'जॉन फरगुसन' (१९१ में समाज की समस्याओं पर प्रकाश डाला। उनके साथ मुर, और ले भी इसी परम्परा का अनुकरण कर रहे थे। ये आइरिश लेखक इन्होंने अपनी रचनाओं में अंग्रेज़ी साहित्य की श्रेष्ठ वृद्धि ... और समय नाट्य-साहित्य की जो प्रगति हो रही थी वह इन्हीं लेखकों के प्र का फल था। इन लेखकों द्वारा निर्मित नाटक ऐबी थियेटर, डबलिन, अभिनीत होते थे। लेडी ग्रिगरी ने इस रंगशाला का प्रतिनिधित्व किया। लेडी ग्रिगरी स्वयं नाटककार थीं। उनके साथ अन्य लेखकों नाट्य-साहित्य को सँवारने का प्रयत्न किया।

येट्स—डब्ल्यू० बी० येट्स ने काव्य-पूर्ण नाटकों की रचना की उनके लिखे हुए नाटकों में 'दि काउन्टेस कैथलीन' (१८९२) तथा लैन्ड ऑव हार्ट्स डिज़ायर' (१८९४) सर्वप्रिय हुए। इन नाटकों आयरलैण्ड की आत्मा की प्राण प्रतिष्ठा की गई है और इसमें आ लैंड के निवासियों की मानवी कल्पना का अच्छा परिचय मिलता है।

जे० एम० सिंज—जॉन मिंटिलटन सिंज (१८७१-१९०९) अनेक लोकप्रिय नाटक लिखे। उनमें उच्च कोटि की कला है। य उनमें यथेष्ट उपहास प्रियता है, तो भी उनका सर्व-श्रेष्ठ नाटक 'रा टु दी सी' रहा जो एक छोटा नाटक होते हुए भी अत्यन्त कारुणिक आइरिश चरित्रों के चित्रण में उनकी पटुता इतिहास लेखकों ने म है। सिंज की मृत्यु हो जाने के कारण 'डायरड्रे ऑव दि सॉरोज' अ ही रह गया। उस समय उनकी अवस्था चालीस वर्ष की भी न थी।

सीन ओ केसी—ग्रिगरी, येट्स तथा सिंज ने विशेषतः ग्रा जीवन के करुण दृश्यों पर प्रकाश डाला, परन्तु नागरिक जीवन अछूता न रहा। सीन ओ केसी ने 'जूनो ऐन्ड दि पेकॉक' तथा शैडो ऑव ए गनमैन' में डबलिन नगर का वातावरण उपस्थित नागरिक पात्र चुने हैं।

जेम्स बैरी—आइरिश जीवन के पौराणिक कथानकों को लेकर बैरी ने एक दिव्य लोक का निर्माण किया जिसकी हृदय आहिता कदा सदा के लिए बनी रहेगी। 'पीटर पैन' (१९०४) 'दि ऐडमिरे क्रिकट्न' (१९०२) तथा 'डियर ब्रूटस' (१९१७) उनके स

नाटक केवल कथा वस्तु की ही दृष्टि से ही नहीं वरन्‌ नाट्य कला तथा आध्यात्मिकता की दृष्टि से भी श्रेष्ठ है।

जॉर्ज बर्नर्ड शॉ—परन्तु इन सब लेखकों की तुलना में आधुनिक नाट्य-साहित्य में जॉर्ज बर्नर्ड शॉ का उच्च स्थान है। शॉ का साहित्यिक जीवन १८९२ ई० से आरम्भ हुआ। इस समय उन्होंने 'विडोअर्स हाउसेज़' प्रकाशित किया था। उनकी रचनाएँ अब तक प्रकाशित होती जाती हैं।

शॉ ने पहले पहल नाट्य साहित्य के आलोचक के रूप में साहित्य जगत में पदार्पण किया। 'अवर थियेटर इन दी नाइन्टीज' नामक पुस्तक में उन्होंने अपनी आलोचना-शक्ति का प्रथम परिचय दिया। उन्होंने समकालीन समाज का गहरा अध्ययन किया था। इब्सेन से उन्हें प्रगाढ़ प्रेम था। इब्सेन के समान ही अपने नाटकों को भी विचारों के वाहक बनाने की उनकी इच्छा थी। यही नाटक का ध्येय भी होना चाहिए। शॉ विद्वान हैं और उन्होंने युरोपीय साहित्य का यथेष्ट अध्ययन किया है। उनकी उत्कट इच्छा ऐसे नाटकों की रचना करने की थी जिससे समाज की नींव हिल उठे और उसके आडम्बर छिन्न भिन्न हो जायें।

उन्होंने स्वतन्त्र तथा प्रत्यक्ष रूप से समाज का अध्ययन किया था। समाज की भित्तियाँ, उसके अवयव, उन अवयवों की असामंजस्यता, उनकी विषमता, इन सब को उन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि से पूर्णतया समझा। इसके साथ ही उनमें एक और विशेषता है। व्यंग और उपहास के साहित्यिक उपयोग में वे निपुण तथा अभ्यस्त हैं। इन्हीं दो गुणों के कारण उन्होंने नाट्य-साहित्य में एक नवीन क्रान्ति उत्पन्न कर दी है।

बीसवीं शताब्दी की अंग्रेज़ी नाट्य-शालाओं से शॉ बहुत असन्तुष्ट थे। वे उनके नाट्य-प्रदर्शन और नाटक-लेखन को तीव्र आलोचक की दृष्टि से देखते थे। उनकी घृणा दिन पर दिन बढ़ती ही गई। इस समय के नाटकों में नाट्य-स्थलों के सामंजस्य की कमी थी। रचनाओं के विधान में इतनी अस्तव्यस्तता थी कि वे दर्शकों पर अपना पूर्ण प्रभाव भी न डाल सकतीं थीं।

एक ओर तो नाटकों की दशा शोचनीय थी और दूसरी ओर दिन प्रतिदिन नवीन आविष्कार हो रहे थे और नए आदर्श, नए

तर्क और नवीन दृष्टिकोण जन्म ले रहे थे। राजनीतिक आदर्शों में साम्यवाद का बोल बाला हो रहा था। सामाजिक आदर्शों की पुरानी रूढ़ियों पर नवयुवक कुठाराघात कर रहे थे। स्त्री-पुरुष के नैतिक तथा अनैतिक सम्बन्ध पर नवीन प्रकाश पड़ रहा था। धर्म की नींव हिल रही थी। ऐसे वातावरण में शॉ का मानसिक पोषण हुआ। अपने नाटकों में बर्नर्ड शॉ ने इस नवीन वातावरण का पूर्ण समावेश किया है। अपने पात्रों में यह नवीनता उन्होंने कूट-कूट कर भर दी है। पुरानी रूढ़ियों के अनुसार पात्र-निर्माण का उन्होंने अन्त और रूढ़िवादी कथा वस्तुओं का तिरस्कार किया। इसमें शॉ की मौलिकता विशेष रूप से प्रदर्शित हुई है।

इब्सेन के समान ही उन्होंने अपने सम्मुख केवल एक आदर्श रखा है। यह आदर्श नाटकों को विचारों का वाहक तथा पोषक बनाना है। इसी कारण प्रत्येक नाटक शॉ के विचार अथवा दृष्टिकोण का प्रतिबिम्ब तथा प्रमाण-पत्र है। इसीलिए पात्रों की गुरुता तथा महत्व की अपेक्षा उनके नाटकों में विचारों का महत्व ही अधिक है।

कुछ नाटकों में तो कोई कथावस्तु ही नहीं है। उनमें उन्होंने केवल अपने विचारों, तर्कों तथा आदर्श-प्रतिपादन को ही कथावस्तु का [illegible] स्थान दिया है। अपने प्रत्येक नाटक के आरम्भ में शॉ एक महत्वपूर्ण प्रस्तावना देते हैं। इनमें वे अपने विचारों तथा आदर्शों का सम्पूर्ण विश्लेषण कर पाठकों को अपने तर्क और विवाद से सन्तुष्ट कर [illegible] प्रवेश कराते हैं।

रचनाएँ—शॉ के नाटकों की संख्या यथेष्ट है। उनके पहले के नाटकों में 'थ्री प्लेज़ फ़ॉर प्यूरिटन्स' तथा 'प्लेज़ प्लेज़ेन्ट एन्ड अन-प्लेज़ेन्ट' में [illegible] तर्क और नवीन आदर्श का प्रतिपादन है। इसके बाद के लिखे नाटकों में कथा-वस्तु तथा वाद-विवाद दोनों का समान स्थान है। '[illegible] बारबरा', 'द शोइंग अप ऑव ब्लैंको पॉस्नेट' '[illegible]' आदि इसी श्रेणी के हैं। 'एन्ड्रॉक्लीज़ एन्ड द लायन' का सम्पूर्ण तर्क केवल प्रस्तावना में ही है। परन्तु युद्ध के बाद लिखे नाटकों में 'हार्टब्रेक हाउस' (१९२०), 'द ऐप्पिल कार्ट' ([illegible]) '[illegible]' (१९३२), 'द मिलीयनेयरेस' ([illegible]) तथा '[illegible]' (१९३८) में तर्क और प्रमाण का आधिक्य

और कथावस्तु की न्यूनता है। 'मैन एन्ड सुपर मैन' और 'बैक टु मेथुज़ीला' उनके सबसे अधिक दार्शनिक नाटक हैं यद्यपि लेखक ने 'सेन्ट जोन' तथा 'पिगमैलियन' में विशेष ख्याति पाई।

शॉ की महत्व पूर्ण विशेषता उनका उपहास और तीक्ष्ण व्यंग है। उनके समस्त नाटक शाब्दिक तथा आर्थिक व्यंग से ओत प्रोत हैं। इस कारण कुछ पाठकों और समालोचकों को यह भ्रम हो जाता है कि शॉ केवल आधुनिक समाज के विदूषक हैं जो अपनी व्यंगोक्ति के सहारे जीवित हैं।

बर्नर्ड शॉ के नाटकों में एक नवीन आदर्श का समावेश है और उनके नाटकों में एक मौलिक दार्शनिक विचार-धारा सन्निहित है। प्रत्येक नाटक में उन्होंने इस धारणा को पुष्ट किया है कि यदि मनुष्य को संसार में जीवित रह कर अपनी सत्ता बनाए रखना है तो उसे प्रगति के रास्ते पर अग्रसर होना पड़ेगा; अन्यथा संसार की 'जीवन-शक्ति' चाहे हम उसे किसी भी नाम से सम्बोधित करें, हमें भी उसी तरह नष्ट कर देगी जिस तरह संसार के प्राचीन युग के मनुष्य नष्ट हो गए हैं। यह विचार उन्होंने अपने समस्त नाटकों द्वारा प्रकट किया है।

शॉ वास्तव में इस युग के महान् कलाकार हैं। वैसे किसी भी सामयिक लेखक के विषय में भविष्य वाणी करना निरर्थक ही नहीं वरन असाहित्यिक है। आगामी युग के पाठकों द्वारा ही उनका महत्व और उनकी साहित्यिक गुरुता समझी जा सकती है।

टी० एस० इलियट—आधुनिक युग में यद्यपि अन्य नाटककार भी हैं तो भी साहित्यिक दृष्टि से उनका अधिक महत्व नहीं है। टी० एस० इलियट लिखित 'मर्डर इन दि कैथीड्रल' (१९३५) काव्य-प्रधान दुःखान्त नाटक है। जिसमें प्राचीन 'मौरेलिटीज़' की छाया है।

ऑडेन तथा आइशर वुड—डब्ल्यू० एच० ऑडेन तथा क्रिस्टोफ़र आइशरवुड लिखित क्रमशः 'दि डान्स ऑव डेथ' तथा 'दि एसेन्ट ऑव एफ सिक्स' (१९३६) में नाटक गद्य शैली तथा तर्क शैली से विमुक्त होकर नृत्य तथा भाव प्रदर्शन से ही अपना कार्य साधन करते हैं।

इस समय इंगलिस्तान का नाट्य-साहित्य केवल व्यापारिक तथा आर्थिक लाभ की वस्तु हो रहा है। परन्तु अब भी ऐसे नाटककार और नाट्यशालाएं विद्यमान हैं जो देश के नाटकों की महान् परम्परा को जीवित रखने के प्रयास में दत्त चित्त हैं।



तीसरा खण्ड

पहला अध्याय

सिड्नी, बनियन, डिफ़ो

कथा-साहित्य का जन्म आदि मनुष्य से कदाचित हुआ होगा परन्तु उपन्यास-साहित्य के जन्म के बहुत दिन नहीं हुए। कथा का अंश तो साहित्य के प्रत्येक अंग में है परन्तु उपन्यास साहित्य का एक प्रमुख अंग है। महाकाव्यों, स्फुट काव्यों, गीतों, रोमैंस, सभी में कथा-साहित्य का प्राण रहता है और हम एक प्रकार से उपन्यास को भी कथा का विशाल-रूप कह सकते हैं।

सर फिलिप सिड्नी-'आरकेडिया'—ऐतिहासिक दृष्टि से, उपन्यास का जन्म सर फिलिप सिड्नी लिखित 'आरकेडिया' (१५८०) में हुआ। समालोचकों की सम्मति में, इसमें उपन्यास के यथेष्ट गुण भी विद्यमान हैं। परन्तु चॉसर के 'केन्टरबेरी टेल्स' तथा 'ट्रायलस ऐन्ड क्रेसिड' भी क्या उपन्यास का स्थान ले सकते हैं, इसमें सन्देह है। इसका कारण यह है कि चासर की कथायें छन्द-बद्ध हैं और उपन्यास का प्रधान गुण है उसका गद्य-माध्यम। प्राचीन युग के अनेक लेखकों ने गाथाएं पद्य में लिखी हैं और इसी कारण उनकी गणना उपन्यास साहित्य में न हो सकी। प्रत्येक युग में कुछ न कुछ लेखक पद्य-मय गाथाएँ लिखते रहे और उन्नीसवीं शताब्दी में सर वॉल्टर स्कॉट तथा बायरन ने इस प्रणाली को लोक प्रिय बनाया परन्तु फिर भी साहित्यिक दृष्टि से ये उपन्यास न कहला सके।

नाटक-साहित्य की चर्चा में हम देख चुके हैं कि नाटक के अंगों में प्रमुख हैं-कथावस्तु, पात्र, संवाद, संघर्ष तथा वातावरण। और ये अंग थोड़े बहुत परिवर्तित रूप में, उपन्यास में भी पाए जाते हैं। उपन्यास वास्तव में 'पाकेट थियेटर' अथवा 'जेबी नाट्यशाला' है जो गद्य में पात्रों द्वारा, जीवन से सम्बन्धित कथावस्तु का संघर्ष पूर्ण वर्णन प्रदर्शित

करता है। नाटक का क्षेत्र संकीर्ण है, कथावस्तु सरल है तथा संवाद के ही द्वारा उसके आदर्श की पूर्ति होती है, परन्तु उपन्यास में इस प्रकार का बन्धन न होने से उसका क्षेत्र विशाल हो सकता है और लेखक के निजी कथन-द्वारा भी उद्देश्य-पूर्ति होती रहती है।

जीवन के किसी भी अंग को लेकर और देश काल का वातावरण ध्यान में रखते हुए उपन्यास रचना की जा सकती है। उसमें व्यक्तिगत मनुष्य अथवा उसके विभिन्न वर्गों के विचार संघर्ष का स्पष्टीकरण होता रहता है, इस कारण इसकी यथोचित परिभाषा कठिन है। राजनीतिक,

रचना था। इन्होंने १५६६ ई० में कुछ इटैलियन लोकप्रिय कथाओं को लेकर 'पैलेस ऑफ प्लेज़र' लिखी। इन लेखों में इटली तथा फ्रांस की संस्कृति और प्रभाव दिखाई देता है।

टॉमस लॉज 'रोज़ेलिण्ड'—लिली का कथा-साहित्य देश में विशेष प्रिय हो चुका था। इसी से टामस लॉज (१५५८-१६२५) ने भी इसे अपनाया। इन्होंने 'रोज़ेलिण्ड' (१५९०) में लिली का अनुकरण किया और अनेक यथार्थ वादी चित्र खींचे। परन्तु लॉज स्वयं लोकप्रिय न हो सके। टॉमस डिलोनी (१५४३-१६००) को ही लोक सम्मान मिला।

टॉमस डिलोनी—टॉमस डिलोनी ने 'जैक ऑफ न्यूबरी' में जुलाहे के जीवन का वर्णन किया, 'जेन्टल क्राफ्ट' में जूते बनाने वाले जन-समुदाय का इन्होंने यथार्थ चित्रण किया। इन कथाओं में सरलता तथा यथार्थ वादिता है। टॉमस [illegible] ने भी लन्दन के निम्न वर्ग का चित्रण '[illegible]' नामक पुस्तक में किया था। परन्तु इन कथाओं में कोई सम्बन्धित विकास नहीं है। घटनाओं के सभी स्थल असम्बन्धित हैं और कहीं कहीं पर भी सामंजस्य नहीं है।

टॉमस नैश 'जैक विल्टन'—टॉमस नैश (१५६७-१६०१) ने कथाओं को स्वाभाविकता प्रदान किया। 'जैक विल्टन' में इन्होंने कुछ वीरों की असाधारण घटनाओं का वर्णन किया और कुछ में अपने निजी अनुभवों को रखा। इस पुस्तक का कुटिल नायक, हेनरी अष्टम के समय का है और अपने प्रवंचना पूर्ण जीवन यापन में वह बहुत से मनुष्यों से मेल जोल बढ़ाता है। यह कथानक विधान कदाचित् उपन्यास की दृष्टि से मान्य है और सोलहवीं शताब्दी की यथार्थ वादी उपन्यास-शैली की यह पहली पुस्तक है।

सामाजिक सुविधाओं तथा अच्छे कलाकारों के होते हुए भी एलिज़बेथ के युग में उपन्यास साहित्य की प्रगति न हो सकी। इसका कारण समाज की नाटक-प्रियता तथा इसके लिये जातीय उत्साह था। परन्तु सत्रहवीं शताब्दी में भी इसकी प्रगति न हुई। इसका कारण था धार्मिक द्वन्द्व, राजनीतिक क्रान्ति तथा गृह-युद्ध। विवाद-पूर्ण लेखों के लिखने में साहित्यकार इतने व्यस्त थे कि कथा साहित्य की ओर न तो उनकी सुरुचि थी और न उत्साह।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सैमुएल पीप्स तथा जॉन एवलिन ने

औपन्यासिक कथा वस्तु को नवीन रूप प्रदान किए। इन लेखकों ने अपनी जीवन चर्चा को पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया। दिन चर्या के इन कथानकों ने कथावस्तु को मौलिक रूप दिया और उन्हें यथार्थवादी बनाया।

जॉन बनियन—सत्रहवीं शताब्दी के सबसे श्रेष्ठ उपन्यासकार जॉन बनियन हैं (१६२८–८८)। बनियन बेडफर्ड-शियर नगर के एक व्यापारी के पुत्र थे। अपनी युवावस्था में उन्होंने सैनिक शिक्षा पाई, सेना में सिपाही हुए, परन्तु सैनिक जीवन शीघ्र ही समाप्त कर वे धर्मोपदेशक बन गए। कुछ दिनों वे बन्दी रहे और अन्त में अध्यात्म वादी बने और साहित्य-रचना आरम्भ की।

रचनाएँ—बनियन का प्रथम ग्रन्थ उनका जीवन चरित्र था जो 'ग्रेस एबाउन्डिंग' के नाम से १६६६ ई० में प्रकाशित हुआ। १६७८ में उनकी दूसरी विख्यात रचना 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' जो उनके बन्दी जीवन के दिनों में लिखी गई थी प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का दूसरा भाग, ६ वर्ष बाद १६८४ ई० में प्रकाशित हुआ। 'दि लाइफ ऐन्ड डेथ ऑव मिस्टर बैडमन' जो १६८० में लिखी गई 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' ही के समान एक दूसरी रचना थी। परन्तु लेखक की सम्पूर्ण प्रतिभा 'होली वार' नामक पुस्तक में प्रकट है। इसकी रचना १६८२ ईसवी में हुई थी।

रूपक लिखने में बनियन सिद्ध हस्त थे और इसी से 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' एक अत्यन्त लोकप्रिय रूपक है। लेखक ने जीवन को एक यात्रा का रूपक मानकर मार्ग की अनेक कठिनाइयों को पार्थिव स्वरूप दिया है। अपनी पुस्तक में उन्होंने बहुत से उपाख्यान तथा कथाएँ सम्मिलित कर प्रत्येक स्थल का विस्तृत वर्णन किया है। उनकी वर्णनात्मक शक्ति अपूर्व थी और उन्होंने अनेक स्थान पर रोचक भाषा में प्रकृति के सुन्दर स्थलों का वर्णन किया है। परन्तु वास्तव में 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' एक रोचक कहानी है जिसमें आध्यात्मिक शिक्षा के साथ साथ समकालीन जीवन की झाँकी मिलती है और जिसमें यथार्थ जीवन का समुचित परिचय है।

उपन्यास को यथोचित रूप देने में बनियन ने अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा का प्रयोग किया परन्तु उनकी बनाई हुई परम्परा को जीवित रखने के लिए अच्छे साहित्यिकों की आवश्यकता थी। ऐसे साहित्यिक उस समय नहीं थे। इसलिए उपन्यास-साहित्य को अठारहवीं शताब्दी के लेखकों की प्रतीक्षा

बसती रहीं, [illegible] पीढ़ियाँ आरम्भ होती हैं। [illegible] साधारण व्यक्तियों के जीवन भी चित्रित होने लग गये हैं।

डेनियल डिफ़ो — अंग्रेज़ी [illegible] (१६६० – १७३१) प्रथम उपन्यासकार थे। इनका जीवन बहुत [illegible] रहा। स्टोक न्यूइंगटन [illegible] के पास प्यूरिटन [illegible] विद्यालय में इन्होंने शिक्षा पाई और [illegible] प्रतिनिधि का कार्य करने लगे। [illegible] पत्रकार और [illegible] में [illegible] तथा [illegible] का कार्य करते थे। [illegible] अपमानित हुए और [illegible] भी हुए, परन्तु उनका साहस न टूटा और ये [illegible] पूर्वक [illegible] का कार्य करते रहे। [illegible] प्यूरिटन आदर्शों के मानने वाले थे और [illegible] आदर्श के प्रतिपादन की चेष्टा करते रहे।

डेनियल डिफ़ो का साहित्यिक जीवन १७०४ ईसवी से आरम्भ होता है। इसी वर्ष इन्होंने 'दि रिव्यू' नामक पत्र निकाला। 'दि रिव्यू' नौ वर्ष तक सफलता पूर्वक प्रकाशित होता रहा और इसी पत्र के कारण समाचारपत्र जगत में [illegible] नवीनता आई।

रचनाएँ — डिफ़ो उच्च कोटि के पत्रकार भी थे। इसी पत्रकारिता कला का सहारा लेकर इन्होंने छोटे छोटे कथा-प्रबन्ध लिखने आरम्भ किए जिनमें सर्वश्रेष्ठ 'दि एपेरिशन ऑव मिसेज़ वील' था। इस कथा-प्रबन्ध में कल्पना तथा मनोविज्ञान का समुचित सामंजस्य है; परन्तु उपन्यास की दृष्टि से 'रॉबिन्सन क्रूसो' (१७१९) ही उनकी सबसे सफल रचना है। 'रॉबिन्सन क्रूसो' के प्रकाशन समय डिफ़ो की अवस्था साठ वर्ष की थी। परन्तु इस पुस्तक की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि डिफ़ो और भी इसी प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करने लगे। 'कैप्टेन सिंगिलटन' (१७२०) ई० में 'मॉल फ्लैन्डर्स', 'कर्नल जैक' तथा 'ए जर्नल ऑव दि प्लेग इयर' १७२२ ई० में और 'रॉक्साना' १७२४ ई० में प्रकाशित हुए।

'रॉबिन्सन क्रूसो' की कथा का आधार नाविक एलेक्ज़ान्डर सेलकर्क का जीवन है। जुआन फ़र्नैनडेज़ द्वीप पर वह बहुत वर्षों पर्यन्त वास

करता रहा और प्रकृति के साधनों से ही उसने अपना जीवन सुव्यवस्थित बनाया। डिफ़ो ने यह कथा प्राचीन यात्राओं के वर्णन में से ढूंढ़ निकाली थी जिसका रूपान्तर उन्होंने 'क्रूसो' में किया। इसके साथ-साथ उन्होंने निजी अनुभवों को भी इस पुस्तक में जहां तहां कथा रूप में रखकर उसकी रोचकता बढ़ाई।

'कैप्टेन सिंगिलटन' सामुद्रिक डाकुओं की कथा है और सम्पूर्ण कथानक में अफ्रीका का वातावरण है। 'मॉल फ्लैन्डर्स' में कुटिल स्त्रियों का जीवन है, परन्तु 'रॉक्साना' इन दोनों रचनाओं से अधिक सौष्ठव-पूर्ण और रोचक है। इतना होते हुए भी 'रॉक्साना' लोकप्रिय न हो पाई परन्तु 'ए जर्नल ऑव दि प्लेग इयर' की ख्याति इतनी बढ़ी कि पाठक रॉक्साना का अस्तित्व ही भूल गए। यह पुस्तक एक प्रकार की दैनिकी अथवा डायरी है और लेखक ने इसमें प्लेग-ग्रसित घरों, सड़कों, तथा गांवों का अत्यन्त यथार्थ-चित्रण किया है। जब इंगलिस्तान में प्लेग फैला तब डिफ़ो बालक थे परन्तु उन्हें उस समय की स्मृति भूली न थी। अपनी अद्भुत कल्पनाशक्ति से उन्होंने अपनी स्मरण शक्ति को जाग्रत कर अत्यन्त चित्ताकर्षक तथा कारुणिक वर्णन किया है। इस डायरी का कथानक वास्तव में नहीं के बराबर है परन्तु लेखक की वर्णन और कल्पना शक्ति के कारण इसकी लोकप्रियता बहुत काल तक बनी रही।

डिफ़ो में उपन्यास कला समुचित रूप में है। पहले तो उन्होंने ऐसा कथानक चुना जो सामाजिक-रुचि के अनुकूल था। तत्पश्चात् उन्होंने ऐसे स्थल निर्मित किए जिन पर कल्पना की पूरी छाप पड़ सकती थी। उन्होंने यथार्थ तथा कल्पना का हृदय ग्राही सामंजस्य स्थापित किया जिसके कारण यह पुस्तक सर्व प्रिय रही। डिफ़ो में कथानक के स्थलों को संगठित करने की शक्ति है और साथ ही साथ उसे रोचक बनाने की कला भी विशेष रूप में है। विस्तृत वर्णन में डिफ़ो की अत्यन्त रुचि थी जिससे उनकी रचनाओं में रोचकता की मात्रा अधिक है और रोचकता उपन्यास कला का प्रधान गुण है। डिफ़ो की रचनाएँ आद्योपान्त रोचकता लिए रहती हैं और जब तक कथा समाप्त नहीं होती पाठकों की उत्सुकता जाग्रत रहती है। परन्तु डिफ़ो केवल कल्पना-प्रधान कलाकार हैं जिन्होंने उपन्यास के केवल दो ही गुण समझे थे—रोचकता तथा काल्पनिक वास्तविकता। अन्य गुणों के लिए हमें दूसरे कलाकारों को देखना है।

एक महिला की रक्षा करते हैं परन्तु विवाह वे दूसरी महिला से करते हैं। इस कार्य से यद्यपि वे समस्त समाज को सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट नहीं कर सके परन्तु उनकी आलोचना नहीं होती।

रिचार्डसन के कथानक मध्यम वर्गीय जीवन के हैं क्योंकि इस जीवन से उनका पूर्ण परिचय था। प्युरिटन सम्प्रदाय में जन्म लेने के कारण उन्होंने अपनी पुस्तकों में नैतिक आदर्श ही प्रमुख रखा। परन्तु आलोचकों ने इन दोनों प्रवृत्तियों की बड़ी कड़ी आलोचना की है और उनको निम्न श्रेणी का ही कलाकार समझा है। इसमें सन्देह नहीं कि रिचार्डसन के पात्र मध्यम-वर्गीय हैं और अन्य वर्गों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ परन्तु केवल इसी कारण उन्हें निम्न कोटि का कलाकार कहना अनुचित है। यद्यपि प्युरिटन आदर्शों का प्रतिपादन उन्होंने सरलता पूर्वक किया है तिस पर भी आलोचकों ने उनके नैतिक आदर्शों को कृत्रिम बतलाया है। बहुत कम आलोचकों ने उनकी कला को समझने का प्रयत्न किया है।

रिचार्डसन उच्चकोटि के कलाकार थे। उनकी कला न तो थी उनके पात्र वर्ग में और न उनके नैतिक आदर्शों में वरन् वह थी उनके कथा-वस्तु-संगठन तथा भावनाओं के संवेग में। पत्र-प्रणाली के आधार पर उपन्यास रचना में वे नितान्त मौलिक कलाकार थे। रिचार्डसन की दृष्टि सूक्ष्म तथा विस्तृत थी। मानव हृदय के संघर्षों का उन्हें यथोचित ज्ञान था; भावद्वंद्व के स्पष्ट करने में उनकी विशेष पटुता थी और मध्यमवर्गीय जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थलों का उन्हें विस्तृत अनुभव था। इसके साथ ही साथ कथोपकथन में भी उनकी विशेष कला थी। यद्यपि लेखक के कथानकों की प्रगति मन्द रहती है परन्तु बीच बीच के सुरुचिपूर्ण स्थलों तथा हास्य युक्त कथोपकथन से रोचकता में बाधा नहीं पड़ती।

हेनरी फील्डिंग—रिचार्डसन की साहित्यिक ख्याति को हानि पहुँचाने में उनके समकालीन हेनरी फील्डिंग (१७०७-५४) का दायित्व अधिक था। फील्डिंग का जन्म एक कुलीन तथा श्रेष्ठ वंश में हुआ था। ईटन तथा लीडन में उन्होंने शिक्षा पाई और यूनान तथा इटली के प्राचीन-साहित्य का अच्छा अध्ययन किया था। फील्डिंग ने बहुत समय तक वकील तथा न्यायाधीश का कार्य किया और कुछ समय तक पत्रकार रहे। इसी बीच में उन्होंने कई नाटक भी लिखे थे जो सरकारी नियमों के विरोध के कारण रंगमंच पर खेले न जा सके।

रचनाएं—फील्डिंग को रिचार्डसन की रचनाओं से घृणा थी। उन्होंने शीघ्र ही उन्हें हास्यास्पद बनाने का निश्चय कर लिया। इसी उद्देश्य से १७४२ ई० में 'जोसेफ एन्ड्रूज़' नामक पुस्तक लिखी गई जिसमें उन्होंने रिचार्डसन की रचना 'पामेला' के कथानक को परिवर्तित कर दिया। जोसेफ, [illegible] के घर का सच्चरित्र विचारों वाला सेवक है। लेडी बूबी अपने सेवक को नैतिक पथ से विलग करने का प्रयास करती है जिसमें असफल होकर जोसेफ पर क्रोध आ जाता है। परन्तु आगे चलकर वे रिचार्डसन का परिहास न कर, कथानक को मौलिक रूप में बढ़ाते हैं। उन्होंने अनेक हास्ययुक्त घटना-खण्डों का निर्माण कर और कई स्थानों पर जोसेफ के साहस तथा दुस्तर कार्यों का वर्णन कर पुस्तक को रोचकता प्रदान की है। 'जोसेफ एन्ड्रूज़' के मुख्य पात्र पार्सन एडम्स भी हैं जो गरीबों का पालक है, सरल चित्त के पादरी हैं और जोसेफ के साहसिक कार्यों में सहयोग देते हैं।

व्यंगात्मक उपन्यास ने फील्डिंग को अत्यन्त आकर्षित किया और उन्होंने 'दि हिस्ट्री आफ जोनेथन वाइल्ड दि ग्रेट' (१७४३) में एक साहसिक डाकू तथा चोर का जीवन चरित्र लिखा। इस पुस्तक में लेखक ने यह सत्य स्थापित करने का प्रयत्न किया कि डाकू तथा योद्धा और राजनीतिज्ञ में बहुत ही कम भेद है; वास्तव में इन तीनों के कर्म समान हैं।

फील्डिंग की सर्वश्रेष्ठ कृति 'टॉम जोन्स' (१७४९) है और उनके आदर्शवादी 'अमीलिया' (१७५१)। 'टॉम जोन्स' उपन्यास साहित्य का श्रेष्ठ नायक है और यद्यपि इस पुस्तक में वातावरण की कमी है फिर भी नायक के चरित्र की महानता प्रशंसनीय है। अमीलिया आदर्श नारी का चित्रण है परन्तु करुण रस के बाहुल्य से चित्रण में स्पष्टता नहीं आ सकी है।

इसमें सन्देह नहीं कि फील्डिंग श्रेष्ठ उपन्यास-कार थे। हर्ष पूर्ण, व्यंगात्मक तथा सामाजिक उपन्यास, तीनों के लिखने में उन्हें अपूर्व सफलता मिली। उन्होंने समकालीन जीवन का अच्छा अनुभव किया था और अपने ग्रन्थों में गाँवों के सरल तथा शहरों के कृत्रिम जीवन के बहुत से चित्र उन्होंने चित्रित किये। फील्डिंग ने उपन्यास की नई परिभाषा भी बनाई और इसे 'हर्ष-प्रधान व्यंगात्मक गद्य महा-काव्य' नाम दिया।

फ़ील्डिंग की रचनाओं में कुछ अस्पष्ट आदर्श निहित हैं। त्याग, सहानुभूति, सरल प्रेम तथा निष्कपट व्यवहार के आदर्श हमारे सम्मुख आते हैं। रिचार्डसन का नैतिक आदर्श सामाजिक रूढ़िवाद से दबा हुआ है परन्तु फ़ील्डिंग की नैतिकता रूढ़ि से विलग, मानवता की पूर्ण परिचायक तथा स्वतन्त्र है। भले बुरे का संघर्ष चित्रित करने में उन्हें विशेष आनन्द आता था और सामाजिक दृष्टि से बुरे लोगों में आत्मीयता, प्रेम, सहानुभूति तथा त्याग की छटा प्रदर्शित करने में उन्हें अत्यधिक रुचि थी।

टोबिया स्मॉलेट्—फ़ील्डिंग के समकालीन लेखकों में टोबिया स्मॉलेट् (१७२१-७१) ने भी ख्याति पाई। स्मॉलेट् का जन्म स्कॉटलैन्ड में हुआ था। उन्होंने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन कर नाविक सेना के जहाज़ों पर चिकित्सक का कार्य आरम्भ किया। 'रॉडरिक रैन्डम' (१७४८) उनकी प्रथम पुस्तक है। इस पुस्तक का नायक दुष्ट तथा लम्पट है परन्तु अन्त में एक श्रेष्ठ पतिपरायणा सुन्दरी से उसका विवाह होता है। 'पेरीग्रीन पिकिल' (१७५१) का भी नायक कुटिल तथा दुष्ट है और उसका भी विवाह एक कर्त्तव्य-निष्ठ सुन्दरी से होता है। 'फ़र्डिनेन्ड काउन्ट फ़ैदम' (१७५३) नामक पुस्तक में उन्होंने पुनः एक अद्भुत तथा साहसिक लम्पट को नायक बनाया। स्मॉलेट की अन्य रचनाएँ लोकप्रिय नहीं थीं। 'सर लॉन्सलॉट ग्रीव्ज़' (१७६२) स्पैनिश भाषा में रचित 'डॉन क्विक्ज़ोट' का रूपान्तर मात्र है और 'हम्फ़्री क्लिंकर' में रिचार्डसन की पत्र-प्रणाली की पुनरावृत्ति है। स्मॉलेट के नायकों की एक विशेषता है—विवाह के पश्चात् वे सज्जन तथा आदर्शवादी बन जाते हैं।

स्मॉलेट की रचनाओं की श्रेष्ठता केवल वातावरण से है। उनकी मुख्य रचनाएँ नाविकों के जीवन से सम्बन्ध रखती हैं। इस जीवन का साहस, क्रूरता, दुष्टता, लम्पटता, ग्रामीण हास्य प्रवृत्ति का इनमें पूर्ण परिचय मिलता है। कहीं-कहीं लेखक ने अपने निजी अनुभवों को भी कथानकों में रखा है परन्तु यत्र-तत्र हमारे सम्मुख अठारहवीं शताब्दी के शाही बेड़ों के जीवन की झाँकी आती है और इस झाँकी के पीछे समुद्र की उत्ताल तरंगों तथा तूफ़ान का आन्दोलन रहता है। इसी वातावरण के चित्रण में स्मॉलेट् की विशेषता है। यद्यपि न तो उन्होंने उपन्यास

को नवीन रूप ही दिया, न नवीन नायक और न नवीन कथानक परन्तु उनकी साहसिक कहानियाँ तथा उनके निर्भीक नायक बहुत काल तक लोक-प्रिय रहे।

लॉरेन्स स्टर्न—अठारहवीं शताब्दी के लेखकों में लॉरेन्स स्टर्न (१७१३-६८) का स्थान विशिष्ट है। लॉरेन्स के पिता सिपाही तथा प्रपितामह पादरी थे। यद्यपि उनकी प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हुई परन्तु अपने अध्यवसाय से वे कैम्ब्रिज गये और एम० ए० की उपाधि लाये। उन्हें यार्कशियर के गिरजे में पादरी का स्थान मिला था और अपने अवकाश में उन्होंने ग्रन्थ रचना आरम्भ किया। (१७६० ई) में 'लाइफ़ ऐन्ड ओपिनियन्स ऑव ट्रिस्ट्रम शैन्डी-जेन्ट' लिखी गई और १७६१ में 'सेन्टीमेन्टल जर्नी' प्रकाशित हुई।

लॉरेन्स स्टर्न में अपूर्व प्रतिभा थी और उन्होंने फ्रांसीसी लेखक रिबेलेस की व्यंगात्मक रचनाओं तथा स्पेन के लेखक सरवान्टिज़ की पुस्तकों का विस्तृत अध्ययन किया था। इन्हीं दोनों लेखकों की आत्मा तथा शैली से विशेष रूप से वे प्रभावित हुए थे। फिर भी वे अत्यन्त मौलिक और उच्च श्रेणी के कलाकार हैं। यदि साधारण नियमों से देखा जाय तो उनके उपन्यास असंगठित तथा अरोचक प्रतीत होंगे परन्तु साहित्यिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उनमें श्रेष्ठ कला है। 'ट्रिस्ट्रम शैन्डी' में नायक का जन्म पुस्तक के तीसरे खण्ड में होता है और अन्त तक उसका जीवन स्पष्ट नहीं होता। प्रत्येक अध्याय में, अनेक कथानक खण्ड, असम्बन्धित कथोपकथन, अन्यान्य विषयों पर दार्शनिक विचार, अधूरे वाक्य, विशेष चिन्ह, रिक्त पृष्ठ, हास्य-युक्त अश्लील भाव तथा भावुक विचार मिलते हैं जिसके कारण पुस्तक का मर्म समझना अत्यन्त कठिन हो जाता है। परन्तु इस पहेली के पीछे लेखक का साहित्यिक आदर्श है। स्टर्न का विश्वास था कि मनुष्य का मस्तिष्क क्रमबद्ध विचार नहीं करता और न उसके अनेक विचार-धाराओं में सामंजस्य ही रहता है। जिन रचनाओं में मनुष्य मस्तिष्क की क्रम-पूर्ण विचार धारा रखता है उनमें कृत्रिमता और अस्वाभाविकता होती है। इसी लिए स्टर्न ने अपनी रचनाओं में मनोवैज्ञानिक सत्य का प्रति पालन किया। जीवन की अस्तव्यस्तता, उसकी निस्सारता, उसकी प्रवंचना, उसकी मृग तृष्णा उनके ग्रन्थ में हमें हर स्थान पर मिलती है। यदि हम केवल सूक्ष्म दृष्टि से तथा निर्लिप्त होकर

देखें तो मानव जीवन से बढ़ कर हास्य युक्त कोई और वस्तु न प्रतीत होगी। यह सत्य स्टर्न ने पूर्णरूप से समझ लिया था। यद्यपि स्टर्न मानव जीवन की प्रवंचना पर व्यंग बाण छोड़ते रहते हैं फिर भी दुखी मानव के प्रति उनकी सहानुभूति सदैव रहती है। अपने हास्य से वे मानव को उठाते, गिराते तथा संभालते रहते हैं। इसी में उनकी कला है।

जॉनसन—'रैसेलस'—रिचार्डसन, फ़ील्डिंग, स्मॉलेट तथा स्टर्न की रचनाओं ने उपन्यास-साहित्य की विशेष प्रगति की। इन चारों कलाकारों ने जो जो धाराएँ निकालीं उन्हीं के अन्तर्गत अन्य लेखक रचना करते रहे। कुछ लेखक स्वतन्त्र-रूप से इन कलाकारों से बिना प्रभावित हुए उपन्यास लिखते रहे। इन लेखकों में सेमुयेल जोनसन प्रथम हैं। १७५६ ईसवी में उन्होंने 'रैसेलस' की रचना की जिसमें अबिसिनिया के राजकुमार को नायक बनाया और एक दार्शनिक सिद्धान्त की स्थापना की। जॉनसन ने इस पुस्तक में अठारहवीं शताब्दी के आशा-वाद को हास्यास्पद बनाया था।

गोल्डस्मिथ—'विकर ऑव वेकफ़ील्ड'—ऑलिवर गोल्डस्मिथ का 'विकर ऑव वेकफ़ील्ड' भी स्वतन्त्र रचना है जिसमें चरित्र चित्रण तथा हर्ष युक्त भावनाओं की प्रचुरता है। गोल्डस्मिथ हर्ष पूर्ण परिस्थितियों के निर्माण में कुशल थे और दुःखी मानव के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी।

फ़ैनी बर्नी—इस युग के कलाकारों में फ़ैनी बर्नी (१७५२-१८४०) की रचनाएँ बहुत काल तक लोक प्रिय रहीं। फ़ैनी, चार्ल्स बर्नी नामक गायक की सुपुत्री थीं और महारानी कैरोलीन के साथ रहती थीं। उनकी प्रथम रचना 'इवलीना' १७७८ ई० में प्रकाशित होते ही सर्वप्रिय हुई। लेखिका की नायिका ईवलीना ग्रामीण घर से निकल कर लन्दन के नागरिक समाज में आकर साहस पूर्ण कार्य करती है। अनेक स्थलों के वर्णन में लेखिका ने पूर्ण सफलता पाई है। परन्तु उनकी अन्य रचनाएं इतनी सफल न हुईं। 'सिसीलिया' १७८२ ई० में, 'कैमिला' १७९६ ई० तथा 'दि वान्डरर' १८१४ ई० में रचे गए। लेखिका की अन्तिम रचना—'डायरी' तथा लेटर्स' थी जिसमें उनकी आकर्षक विवरण तथा वर्णन कला है। जॉनसन ने अपने पत्रों में फ़ैनी की बड़ी प्रशंसा की थी जो

मानसिक [illegible] में प्रकाशित था [illegible] इसलिए [illegible] थी।

हेनरी मैकेन्ज़ी—इस शताब्दी में [illegible] की रचनाएँ भाव-प्रधान थीं। स्टर्न ने इसे विशेष रूप से अपनाया था। इसी की छाया हेनरी मैकेन्ज़ी पर भी पड़ी। इनकी प्रमुख रचना 'दि मैन ऑफ फीलिंग' १७७१ ई० में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का नायक इतना भावुक है कि [illegible] प्रत्येक [illegible] सहानुभूति का [illegible] इस रचना में विशेष प्रदर्शन मिलता है।

इस समय फ्रांसीसी लेखकों का प्रभाव अंग्रेजी साहित्य पर पड़ रहा था। [illegible] अंग्रेजी में अनूदित हुए। विशेषकर [illegible] टामस डे ने 'सैंडफोर्ड ऐंड मर्टन' (१७८३-८९) में रूसो के उपदेश दिये गए हैं तथा [illegible] 'नेचर ऐंड आर्ट' में भी इन उपदेशों का समावेश हुआ है।

हॉरेस वालपोल—अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उपन्यास साहित्य में एक नया भाव विकसित हुआ जिसका प्रभाव आधुनिक काल तक पूर्ण रूप से विदित है। यह 'गॉथिक' उपन्यास कहा गया। हॉरेस वालपोल (१७१७-९७) ने पहले-पहल इस भाव का निर्माण किया था। [illegible] तत्कालीन समाज की [illegible] का [illegible] अनुभव था। [illegible] में औद्योगिक [illegible] और मशीनवाद से समाज अलग हो रहा था। [illegible] की प्रगति से सामाजिक तथा राजनीतिक निष्ठुरता को मनुष्य समझ रहा था। मानव जीवन की अवहेलना तथा यथार्थ प्रकृति से मनुष्य उदास होकर अन्य मार्ग ढूँढ़ रहा था। इस समय के धनी-मानी पुरुष जिनके पास अधिक अवकाश था अपना अलग कल्पना जगत निर्माण कर रहे थे। कल्पनावाद रूप में उस जगत का पुनः निर्माण चाहते थे जो मध्य-युग के वीरों का जगत था। इस प्रवृत्ति की जागृति में अनेक समृद्धिशाली पुरुषों ने [illegible], प्राचीन काल की कलाओं और पुरातत्त्व में विशेष रुचि रखना आरम्भ किया। इन लोगों ने प्राचीन शिल्पकला के अनुसार मकान तथा कोठे बनवाने आरम्भ किए, जिस [illegible] में मध्ययुग की वीरता, सहानुभूति, मानवता, प्रेम तथा आदर्शवादी जीवन का ध्यान

भर सकते थे। वॉलपोल के रचित 'कासिल ऑव ओट्रेन्टो' का जन्म भी इन्हीं काल्पनिक विचार धाराओं के अन्तर्गत हुआ।

'कासिल ऑव ओट्रेन्टो' १७६२ ई० में प्रकाशित हुआ और शीघ्र ही पाठकों ने उसे अपनाया। पुस्तक का कथानक मध्ययुग के इटली में लिखा गया है और स्थल-स्थल पर भयावह घटनाएँ घटित होती हैं। कभी दैवी प्रकोप, कभी मनुष्य कृत भयावह घटनाओं, कभी गुप्त स्थानों से मृत्यु का सन्देश आता है। यह रचना लोकप्रिय थी। यद्यपि हॉरेस वॉलपोल के रचित पत्रों की संख्या बहुत है और उनमें समकालीन जीवन का स्पष्ट प्रतिबिम्ब मिलता है परन्तु 'कासिल ऑव ओट्रेन्टो' की प्रियता के कारण अनेक लेखकों ने केवल उसका ही अनुकरण किया।

विलियम बेकफर्ड—भयावह उपन्यास शैली के प्रथम अनुकर्त्ता विलियम बेकफर्ड थे। वे भी पुरातत्व में रुचि रखते थे और उन्होंने भी [illegible] के समान [illegible] के लिए अपना अलग गृह निर्माण [illegible] किया था। यहीं पर 'वाथेक' की भी रचना हुई। वाथेक का कथानक [illegible] है। उसमें प्राचीन काल के एक खलीफा अपनी माता [illegible] के [illegible] में [illegible] तथा [illegible] दृश्य

गई। इनमें से उनके प्रथम [illegible] के आधार पर 'पेरेग्रीन पिकिल' (१७५१) तथा 'हम्फ्री क्लिंकर' १७७१ ई० में प्रकाशित हुए।

सैद्धान्तिक तथा विलक्षण शैली—[illegible] (१७१३-१७६८) [illegible] की 'ट्रिस्ट्रम शैण्डी' तथा [illegible] लिखित 'सेन्टिमेन्टल जर्नी' [illegible]। [illegible] के बाद इस [illegible] का [illegible] हो गया।

जेन ऑस्टिन—ऑस्टिन उपन्यासों के इतिहास में एक नया [illegible] जेन ऑस्टिन (१७७५-१८१७) [illegible] जा सकता है। [illegible] उपन्यास [illegible] था। इनकी प्रथम पुस्तक 'सेन्स एण्ड सेन्सिबिलिटी' १८११ ई० में और दूसरी 'प्राइड एण्ड प्रेजुडिस' १८१३ ई० में प्रकाशित हुई। [illegible] १८१४ में [illegible] का प्रकाशन हुआ। इन्होंने 'एमा' १८१६ में तथा 'पर्सुएशन' १८१७ में [illegible]। १८१७ में इनकी अन्तिम पुस्तक प्रकाशित हुई [illegible] 'नॉर्थेंगर एबे' था जिसमें लेखिका ने [illegible] के [illegible] उपन्यास की उपहासात्मक प्रस्तुत किया।

जेन ऑस्टिन का साहित्य पर [illegible] के आलोचकों का [illegible]। [illegible] तथा [illegible] ऐतिहासिक [illegible] उनकी प्रतिभा पर [illegible]। उनके विचार में उपन्यास रचना एक विशिष्ट कला थी। इसके लिए बौद्धिक अनुशासन तथा कल्पना के संयोजन की आवश्यकता थी। इसी नियम के अनुसार इन्होंने यथार्थवाद की रचना कर तत्कालीन समाज का विस्तृत पर्यवेक्षण तथा गंभीर अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने केवल मध्य वर्ग तक ही अपना ध्यान सीमित रखा और अपने कला सिद्धान्त के अनुसार अपनी रचनाओं को बारम्बार परिमार्जित तथा संशोधित करती रहीं। इनके प्रत्येक उपन्यास में एक ही वर्ग के दो विरोधी भावों से प्रेरित पात्रों का चित्रण है। 'प्राइड एण्ड प्रेजुडिस' इसका सबसे सफल उदाहरण है जिसमें एलिज़ाबेथ नायिका के अविवेक तथा डार्सी के गर्व में द्वन्द्व होता है। उनकी समस्त रचनाओं में हास्य, व्यंग्य, उपहास तथा यथार्थ जीवन के दृश्य ही चित्र हैं परन्तु उनकी कला

अपनी आय से दूना व्यय करते थे इसलिए उन्हें धन की सदैव आवश्यकता रहती थी। इसी आवश्यकता के कारण उन्होंने काव्य सेवा छोड़ कर उपन्यास रचना आरम्भ किया जिसके कारण उनके पास विशेष धन आया परन्तु अपने बढ़ते हुए व्यय को वे घटा न सके। इस प्रकरण का ब्योरा उनके लिखे हुए 'जर्नल' में है जिसमें उन्होंने अपना हृदय खोल कर रख दिया है।

रचनाएँ—स्कॉट ने बहुत से उपन्यास लिखे और एक नवीन शैली की नींव डाली। यह ऐतिहासिक उपन्यास लिखने की शैली थी। पहाड़-भ्रमण के समय उन्होंने अपने मस्तिष्क में लोक-गाथाओं तथा प्राचीन वृत्तान्तों की निर्मल स्मृति रख छोड़ी थी और अब उसके साहित्यिक प्रयोग का समय आगया था। १८१४ ई० में उनका पहला उपन्यास 'वेवर्ली' प्रकाशित हुआ जिसमें स्कॉट ने जेम्स के समय के राजनीतिक आन्दोलन का कथानक लिया। इस आन्दोलन तथा युरोप के अन्य आन्दोलनों का कथानक वे बराबर चुनते रहे और उन्हीं के आधार पर कई ग्रन्थ लिखे। 'गाई मैनेरिंग' १८१५ ई० में, 'ओल्ड मोरेलिटी' तथा 'दि एन्टीकेरी' १८१६ ई० में और 'राब रॉय' तथा 'दि हार्ट ऑव मिडलोदियन' १८१८ में प्रकाशित हुए। ये उपन्यास स्कॉटलैन्ड के हृदय से सम्बन्धित हैं और इनमें उस प्रदेश के प्रत्येक वर्ग का हमें यथार्थ परिचय मिलता है।

परन्तु मध्य युग के जीवन तथा उसके काल्पनिक इतिहास ने स्कॉट को विशेष रूप से आकर्षित कर रखा था। यद्यपि वे इस जीवन और इस वातावरण को पूर्णरूप से अपने उपन्यासों में प्रयुक्त न कर सके तिस पर भी अपनी नवीन और आकर्षक शैली के कारण वे लोकप्रिय हुए। इस श्रेणी के उपन्यास दो हैं—'आइवनहो' जो १८२० ई० में प्रकाशित हुआ और 'दि टॅलिसमन' जो १८२५ ई० में लिखा गया। उन्होंने 'हिस्टरी ऑव दि क्रूसेड्स' भी लिखा परन्तु उसमें उपन्यास तत्व कम और नाटकीय-तत्व अधिक है।

इस इतिहास के लिखने के पश्चात् उन्होंने अन्य ऐसे कथानक ढूंढ़ना आरम्भ किया जिससे जनता आकर्षित होती। युरोप के नरेशों की ओर उनका ध्यान गया और 'क्वेन्टिन डरवर्ड' (१८२३) में उन्होंने फ्रांस के राजा लुई ग्यारहवें का चरित्र-चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया। यह

तीसरा अध्याय

डिकेन्स, ब्रान्टी, हार्डी, किपलिंग, वेल्स

चार्ल्स डिकेन्स—इंग्लैण्ड के महान् उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स (१८१२-१८७०) [illegible] अपने जीवन पथ में कभी और [illegible] से ही [illegible] होना पड़ा। १८३६ ई० [illegible] में डिकेन्स के [illegible] से परिपूर्ण लेख जिनके [illegible] की ओर जनता ने उन्हें [illegible]। इसी वर्ष के [illegible] 'स्केचेज बाई बोज' [illegible] में प्रकाशित हुए। [illegible] इसके पश्चात् उनकी सर्व[illegible] 'पिकविक पेपर्स' (१८३७) प्रकाशित हुई। [illegible] परिवर्तित होती गई।

उपन्यास—डिकेन्स के उपन्यास [illegible] भागों में विभाजित कर सकते हैं। हास्यात्मक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक। हास्यात्मक रचनाएं [illegible] 'स्केचेज बाई बोज' (१८३६) तथा 'पिकविक पेपर्स' (१८३७)।

सामाजिक—रचनाओं में निम्नलिखित विख्यात हैं। 'ऑलिवर ट्विस्ट' (१८३८), 'निकोलस निकलबी' (१८३९), 'दि ओल्ड क्यूरियोसिटी शॉप' (१८४१), 'मार्टिन चज़लविट' (१८४४), 'क्रिसमस बुक्स' (१८४३-१८४८) 'डोम्बी एण्ड सन' (१८४८), 'डेविड कॉपर-फील्ड' (१८५०), 'ब्लीक हाउस' (१८५३), 'हार्ड टाइम्स' (१८५४), 'लिटिल डॉरिट' (१८५७), 'ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स' (१८६१) तथा 'अवर म्यूचुअल फ्रेंड' (१८६४)।

ऐतिहासिक रचनाओं में केवल दो निम्नलिखित ग्रन्थों की गणना है—'बार्नबी रज'—(१८४१), 'दि टेल आव टू सिटीज़' (१८५९)।

डिकेन्स का साहित्यिक जीवन व्यंग्यात्मक रचनाओं से ही आरम्भ होता है। वास्तव में वे अंग्रेजी भाषा के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यपूर्ण कलाकार हैं। उनका दृष्टिकोण [illegible] ही [illegible] था और वे जीवन को भी [illegible] समझते थे। उन्होंने अपनी कला से अमर पात्र निर्मित किए

[illegible] उपन्यास क्षेत्र में [illegible] स्थान हो।

थैकरे—डिकेन्स के समकालीन लेखकों में, विलियम मेकपीस थैकरे (१८११-१८६३) का प्रमुख स्थान है। [illegible]

[illegible]

थैकरे की सबसे सफल रचना 'वैनिटी फेयर' है जिसमें इन्होंने सामाजिक त्रुटियों का यथार्थ प्रदर्शन किया है। [illegible] चरित्र चित्रण अधिक सूक्ष्म तथा विश्लेषणपूर्ण है और उनके उपन्यासों में चित्रित जीवन यथार्थपूर्ण तथा स्वाभाविक है। कला की दृष्टि से यह पुस्तक सर्वश्रेष्ठ है। इस पुस्तक की नायिका 'बेकी शार्प' उपन्यास साहित्य में अमर है। परन्तु अन्य पुस्तकों में थैकरे की कला में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई। 'पेन्डेनिस' तथा 'न्यूकम्स' में उपदेश की मात्रा अधिक है और कथावस्तु असंगठित है। इनके स्फुट चरित्र में ही इनकी प्रतिभा है और भावनाओं के विश्लेषण में वे डिकेन्स से श्रेष्ठ हैं। उन्होंने केवल एक ही ऐतिहासिक उपन्यास 'हेनरी एसमण्ड' लिखा था जिसकी लोकप्रियता बहुत काल तक रही। इसमें महारानी ऐन के समय का समाज तथा

उसका यथार्थ वातावरण उन्होंने चित्रित किया है। इसकी कथावस्तु सुगठित, चरित्र-चित्रण पुष्ट तथा वातावरण पूर्णतयः ऐतिहासिक है।

वॉल्टर स्कॉट के समान थैकरे भी अतिव्ययी थे। अपने पास धन न होते हुए भी उन्होंने केन्सिंगटन नगर में एक विशाल कोठी बनवाई और धन एकत्र करने के लिए डिकेन्स के समान इंगलिस्तान तथा अमरिका में अपनी पुस्तकों को नाटकीय ढंग से पढ़ने के लिए भ्रमण किया। इससे उनकी वार्षिक आय १००० पौण्ड तक होगई थी परन्तु उनके बढ़ते हुए व्यय के लिए यह भी कम था। इन साहित्यिक भ्रमणों का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा और १८६३ ई० में जब उनकी अवस्था केवल बावन वर्ष की थी वे परलोकवासी हुए।

यद्यपि इस शताब्दी में डिकेन्स तथा थैकरे के समान अन्य श्रेष्ठ उपन्यासकार नहीं हुए परन्तु बहुत से कलाकारों ने अन्यान्य शैलियाँ उपन्यास रचना में प्रयुक्त कीं। कुछ लेखकों ने प्रचलित कथानकों तथा शैलियों को परिवर्तित कर नवीनता लाने का प्रयास किया। इस समय जनता की रुचि में परिवर्तन हो रहा था और ये लेखक कदाचित् इसी रुचि को समझने का प्रयत्न कर रहे थे।

बुलवर लिटन—बुलवर लिटन (१८०३-७३) की रचनाओं में यह प्रयास स्पष्ट है। स्कॉट के समान उन्होंने दो ऐतिहासिक उपन्यास 'दि लास्ट डेज़ ऑव पॉम्पिआई' (१८३४) तथा 'रेन्ज़ी' (१८३५) लिखे। हॉरेस वॉलपोल के समान उन्होंने एक भयावह उपन्यास 'ज़नोनी' (१८४४) भी लिखा। 'पॉल क्लिफ़र्ड' (१८३०) तथा 'यूजीन एरम' (१८३२) में उन्होंने भयावह तथा सामाजिक कथानक का सम्मिश्रण किया। यथार्थवादी उपन्यास भी उन्होंने प्रकाशित किए जिनमें 'दि कैक्सटन्स' (१८४८) तथा 'माई नॉवेल' (१८५३) श्रेष्ठ थे। उनका सबसे सुव्यवस्थित उपन्यास 'पेलहम' था जो उनकी पहली कृति थी। अपनी अंतिम कृति 'दि कमिंग रेस' में उन्होंने मौलिक कथानक चुना और कल्पित-देश-काल के उपन्यास की नवीन शैली प्रचलित की।

चार्ल्स किंग्सले—इसी प्रकार की विभिन्नता चार्ल्स किंग्सले (१८१९-७५) की रचनाओं में भी है। उन्होंने मत प्रचारक दो उपन्यास 'यीस्ट' (१८४८) तथा 'एल्टन लॉक' लिखे जिसमें साम्यवादी ईसाई धर्म की ओर संकेत किया। दो ऐतिहासिक उपन्यास भी उन्होंने

उन्होंने मशीन-युग की क्रूरता तथा विषमता की कटु आलोचना की। मिसेज़ गैस्केल की प्रतिभा बहुमुखी थी। इसका प्रमाण 'क्रैनफ़र्ड' (१८५३) है जिसमें लेखिका ने प्रान्तीय जीवन का मधुर हास्य-युक्त वर्णन रोचक ढंग से किया है। अद्भुत रस में पूर्ण उपन्यास विल्की कॉलिन्स (१८२४-८९) ने लिखे। 'दि वुमन इन व्हाइट' (१८६०) तथा 'दि मूनस्टोन' (१८६८) में उन्होंने काव्यात्मक ढंग से अद्भुत कथानक को लेकर अपनी बहुमुखी कला प्रदर्शित की। परन्तु यह समस्त लेखक वर्ग मौलिक नहीं है।

शार्लट तथा एमिली ब्रॉन्टी—ये दोनों लेखिकाएं मौलिकता में श्रेष्ठ हैं। इन दोनों बहनों के कला के उद्गम की कहानी अत्यन्त गुप्त है। यार्कशियर के नगर से दूर हॉवर्थ गाँव में दोनों ने जन्म लिया। उन्हें न तो कोई साधन मिला और न कोई विशेष साहित्यिक शिक्षा किन्तु उन्होंने न जाने किस दैवी कृपा से प्रेरित हो ऐसे कलापूर्ण उपन्यासों की रचना की जिनका महत्व आधुनिक काल तक विदित है। एमिली ब्रान्टी (१८१४-४८) ने केवल एक ही उपन्यास लिखकर अमर ख्याति पाई है। उन्होंने 'वुदरिंग हाइट्स' १८४७ ई० में प्रकाशित की और अपनी अपूर्व कल्पना से ऐसे जगत का निर्माण किया जिसमें पात्रों की यथार्थता, भावों का आवेशमय द्वन्द्व तथा कथानक इतना सत्य प्रतीत होता है कि कुछ लेखकों ने इसकी तुलना शेक्सपियर लिखित 'किंग लियर' के कुछ अंकों से की है। कदाचित इस काल का यह सर्वश्रेष्ठ मौलिक उपन्यास है।

शॉर्लट ब्रॉन्टी—शार्लट ब्रॉन्टी (१८१६-५५) की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने कई ग्रन्थ लिखे थे। 'जेन आयर' १८४७ ई० में, 'शर्ले' १८४९, 'विले' १८५३ तथा 'दि प्रोफ़ेसर' १८५७ ई० में प्रकाशित हुए। इन पुस्तकों में उन्होंने अपने जीवन से सम्बन्धित अनुभवों तथा घटनाओं का भी समावेश किया। इनमें यथार्थ जीवन के बड़े सरल, सुबोध तथा करुण चित्र हैं। इन रचनाओं में मानव जीवन की गहरी अनुभूति है परन्तु यह जीवन मध्यम वर्ग का जीवन है और इसी के वातावरण को प्रदर्शित करने में लेखिका की श्रेष्ठ कला है।

जॉर्ज इलियट—यद्यपि एमिली तथा शार्लट ब्रॉन्टी की श्रेष्ठता अब भी समालोचक मानते हैं परन्तु जॉर्ज इलियट (१८१९-८०) की महत्ता

अनुभव का प्रयोग उन्होंने 'दि [illegible]' ([illegible]) [illegible] में किया। [illegible] प्रौढ़ता में है; परन्तु वे [illegible] । [illegible] की दृष्टि से जॉर्ज मेरेडिथ तथा टामस हार्डी [illegible] है।

जॉर्ज मेरेडिथ- जॉर्ज मेरेडिथ (१८२८) ने [illegible] रचे और उनका रचना क्षेत्र भी विस्तृत था। वे [illegible] का कार्य करते रहे और उनकी अनेक रचनाएँ सामयिक पत्रों में छपीं। 'रिचर्ड फ़ेवरल', 'इवान हैरिंगटन' तथा '[illegible]' इत्यादि में उन्होंने अपने सिद्धान्तों के अनुसार जीवन चित्रण किया परन्तु उन्हें ख्याति न मिली। 'सैन्ड्रा बलोनिया' (१८६४) 'विटोरिया' (१८६७) तथा 'डायना ऑव दि क्रॉसवेज' (१८८५) के प्रकाशन के बाद उनकी ख्याति बढ़ी। 'एगोइस्ट' जो उनकी सर्वोत्तम कृति है १८७९ में प्रकाशित हुई। उनकी सबसे दुरूह रचना 'वन ऑव अवर कॉन्करर्स' १८९१ में लिखी गई परन्तु इसके पहले ही उनकी श्रेष्ठता समालोचकों ने स्थापित कर दी थी।

वास्तव में मेरेडिथ की रचनाएँ क्लिष्ट तथा दुरूह हैं। उनका चरित्र-चित्रण जटिल तथा उनके सिद्धान्त दुर्बोध हैं। उनकी रचनाओं के पहले प्रकरण कदाचित् वे जान बूझकर दुरूह रखते थे जिसके कारण साधारण पाठकों का धैर्य छूट जाता था। इसी कारण उनकी रचनाएँ लोकप्रिय न हो सकीं। मेरेडिथ का विश्वास था कि उपन्यास केवल रोचक कहानी ही नहीं वरन मानव आत्मा को संशोधित करने का साधन भी है। मनुष्य का शरीर, मस्तिष्क तथा उसका हृदय उसकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधक हैं और इस अवरोध को हटाने में मेरेडिथ की कला संलग्न रहती है। शरीर का स्वार्थ, मस्तिष्क का गर्व तथा हृदय की भावुकता प्रगति के प्रबल शत्रु हैं। मन, वचन, कर्म से इनके दमन करने में ही कल्याण है। कपटी तथा गर्वपूर्ण जीवन के मेरेडिथ घोर विरोधी थे और अपने विरोध को वे कलापूर्ण हास्य से प्रगट करते हैं। मानव-आत्मा की दुर्बलता तथा उसके छल का प्रतिकार उन्होंने अपनी प्रत्येक रचना में किया। आदर्श जीवन की ओर संकेत उनका ध्येय था और उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में इस ध्येय की सार्थकता प्रदर्शित की है।

हेनरी जेम्स—साधारणतयः लेखकों ने हार्डी तथा मेरिडिथ की साहित्यिक तुलना की है परन्तु मेरिडिथ की तुलना हार्डी से नहीं वरन् हेनरी जेम्स से समीचीन है। हेनरी जेम्स ने अमरीका में जन्म लिया, वहीं शिक्षा पाई परन्तु युरोप को ही उन्होंने अपना घर समझा। उन्हें अमरीकी जीवन का विशाल अनुभव था और उन्होंने पहले पहल अमरीकी तथा यूरोपीय जीवन के कथानकों पर उपन्यास रचना की। उसके पश्चात् उन्होंने इंगलिस्तान के सामाजिक तथा आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित कथानक चुन कर कई सफल रचनाएँ की। 'डेज़ी मिलर' अमरीकी तथा युरोपीय जीवन के संसर्ग की कथा है जो १८७६ में प्रकाशित हुई। अंग्रेज़ी जीवन की छाया से पूर्ण 'दि ट्रैजिक म्यूज' (१८९०), 'दि विंग्स ऑव डव', (१९०२) 'दि एमबैसेडर्स' (१९०३) तथा 'दि गोल्डेन बोल' (१९०४) नामक रचनाएँ हैं।

इन उपन्यासों में हेनरी जेम्स ने प्राचीन दुनियाँ, मध्ययुग के वातावरण, उसकी अविरल परम्परा, उसके प्रेम-पूर्ण जीवन का पुनः निर्माण करने का आदर्श अपने सम्मुख रखा था। अपने समकालीन जीवन में उस युग का प्रतिरूप वे देखना चाहते थे और जब उन्हें उसमें सफलता न मिली तो उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति से उस संसार का निर्माण किया। मेरिडिथ के ही समान उनका चरित्र-चित्रण दुरूह तथा जटिल है। भावनाओं के सूक्ष्म स्थलों का प्रदर्शन और वर्ग संघर्ष का प्रौढ़ चित्रण उनकी विशेषता है। हेनरी जेम्स की भाषा अत्यन्त परिमार्जित है तथा उनके भाव पूर्णतयः नैतिक हैं। उन्हें असंस्कृत भावों तथा असभ्य वातावरण से घृणा थी और इसी कारण उनकी भाषा, भावों के नग्न चित्रण तथा आवेश से दूर रहती है।

टॉमस हार्डी—हेनरी जेम्स के विपरीत टॉमस हार्डी इंगलिस्तान के कलाकार हैं। हार्डी (१८४०-१९२८) का जन्म वेसेक्स प्रान्त में डॉरचेस्टर नगर में हुआ था। वे एक शिल्पी के घर में जन्मे और कुछ काल पैतृक व्यवसाय करते रहे। हार्डी की रचनाएँ दो भागों में विभाजित की जा सकती हैः चरित्र-प्रधान तथा कल्पना-प्रधान। चरित्र-प्रधान रचनाओं में 'अन्डर दि ग्रीनवुड ट्री' १८७२, 'फ़ार फ्रॉम दि मैडिंग क्राउड' १८७४; 'दि रिटर्न ऑव दि नेटिव' (१८७८), 'दि मेयर ऑव कैस्टरब्रिज (१८८६), 'दि वुडलैन्डर्स' (१८८७), 'टेस ऑव

डर्बीविल, १८९१, 'लाइफ़स लिटिल आयर्नीज़' तथा 'जूड दि अब्सक्योर' श्रेष्ठ हैं। कल्पना प्रधान उपन्यासों में 'ए पेयर ऑव ब्लू आईज़' (१८७३), 'दि ट्रम्पेट मेजर' (१८८०), 'टू ऑन ए टावर' (१८८२), 'ए ग्रुप ऑव नोबिल डेम्स' (१८९१) तथा 'दि वेल बिलव्ड' (१८९२) की गणना है।

हार्डी की रचनाओं में शिल्पी की कला विदित है। उनके कथानकों के प्रत्येक स्थल में वही दृढ़ता तथा वही सामञ्जस्य है। चरित्र-चित्रण वे घटनाओं तथा पात्रों के संघर्ष से करते हैं और अन्यान्य घटनाओं के निर्माण तथा उनके प्रौढ़ औपन्यासिक प्रयोगों में वे सिद्धहस्त हैं। ग्रामीण जीवन का उन्हें निजी अनुभव था और वे अपने पात्र विशेष इसी जीवन क्षेत्र से चुनते थे। उनके पात्र प्रकृति के विशाल प्रांगण में विचरते हैं, घटनाओं के जटिल पाश में बद्ध होकर स्वतन्त्र होने के प्रयास में वे और भी जकड़ते जाते हैं और केवल मृत्यु से ही उन्हें छुटकारा मिलता है। हार्डी के पात्रों में प्रकृति भी एक पात्र विशेष है जो कुटिल, छली, क्रूर तथा घातक है। लेखक की सभी रचनाएँ दुःखान्त हैं। इसका कारण हार्डी का साहित्यिक तथा दार्शनिक सिद्धान्त है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आशावाद की लहर उठी थी। मनुष्य को दुर्गम से दुर्गम स्थानों में तथा कठिन से कठिन समय में आशा की ज्योति दिखलाई देती थी। इस सिद्धान्त के हार्डी घोर विरोधी थे और इसी के प्रतिरोध में उन्होंने रचनाएँ की थीं। उनका विश्वास था कि मनुष्य भाग्य का शिकार है। भाग्य मनुष्य को घटनाओं के जटिल पाश में बांध कर आनन्दित होता है और उसको इसीलिये जन्म देता है कि वह यह वीभत्स आनन्द प्रदान करे। जन्म से प्रथम ही मनुष्य को अपने दुर्भाग्य की तालिका मिलती है और जो शक्ति मनुष्य को जन्म देती है वह अनैतिक, क्रूर तथा कुटिल है। हार्डी की समस्त रचनाओं में यही सिद्धान्त विदित है। ईसाई धर्म सिद्धान्तों में भी लेखक को शान्ति नहीं मिलती है और वे नई शक्ति से ईश्वरीय सिंहासन हिलाने का प्रयत्न कर अनीश्वरवाद की घोषणा करते हैं। उन्होंने जीवन को दुःखी, अकारण तथा निष्फल समझ कर ऐसे पात्रों का निर्माण किया है जो इस नियम को सिद्ध करते हैं। हार्डी के ग्रामीण जीवन के पात्रों में यूनान के दुःखान्त नाटकों की शक्ति है। उनमें साहस, गर्व, आवेश, मानवता, सभी कुछ है

उपन्यास रचे जिनमें 'न्यु एरेबियन नाइट्स' (१८८२), 'किडनैप्ड' (१८८६), 'दि ब्लैक ऐरो' (१८८८), 'दि मास्टर ऑव बेलैन्ट्रे' (१८८९) तथा 'दि रॉग बॉक्स' (१८८९) अति शीघ्र लोकप्रिय हुए।

स्टीविन्सन का जन्म सम्भ्रान्त वंश में हुआ था। वे आजन्म रोग ग्रस्त रहे परन्तु इस अवस्था में भी वे निरन्तर साहित्य रचना करते थे। रचनाओं में कलापूर्ण वर्णन अथवा चित्रण उनका ध्येय था। शब्द चयन, वाक्य सामंजस्य, वातावरण का यथार्थ चित्रण उनकी कला के कुछ विशेष अंग हैं। स्टीविन्सन के पत्रों, लेखों, उपन्यासों, सभी में उनकी वर्णन कला है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक कहानियाँ भी लिखी थीं जिनमें आत्मा तथा लोभ का संघर्ष और भले तथा बुरे का द्वन्द्व प्रदर्शित किया था। इस कला में उनकी श्रेष्ठता प्रमाणित है।

स्टीविन्सन के समय में ही गल्प रचना की ओर पाठकों और लेखकों का अनुराग बढ़ रहा था। उपन्यास क्षेत्र में अनेक सफल कलाकार [illegible] हो रहे थे। इनमें राइडर हैगार्ड, कोनन डॉयल, मिसेज़ हम्फ्री वार्ड, [illegible] मैरी कौरेली, [illegible] तथा [illegible] लोकप्रिय हुए। इस [illegible] में [illegible] की लोकप्रियता अधिक रही। [illegible] भाषा में [illegible] रचनाएँ कीं और [illegible] अनेक शब्दों से परिपूर्ण किया।

[illegible] गिसिंग [illegible] होते हुए भी जॉर्ज गिसिंग ([illegible]) [illegible]। उन्होंने तत्कालीन समाज के [illegible] और उन्होंने समाज के रोगों की [illegible] है। [illegible] में उनके जैसी [illegible] ([illegible]), [illegible] (१८८६) [illegible] ([illegible]) तथा [illegible] ([illegible]) में समाज की [illegible] है। [illegible] उनकी [illegible]। [illegible] प्रिय है और [illegible] आपका [illegible]।

[illegible] लोकप्रियता

अंग्रेजी समाज में बहुत थी। उन्होंने समाज की नाड़ी को पहचान कर रचनाएँ आरम्भ की थीं। उनके युग का समाज साम्राज्यवाद की ओर अग्रसर हो रहा था और साम्राज्यवादी विचार उसकी उन्नति चाहता था। किपलिंग का जन्म भी हिन्दुस्तान में हुआ था और हिन्दुस्तान अंग्रेजों के लिए बड़े गर्व का विषय था। वे छोटी कहानियाँ तथा छोटे उपन्यास प्रकाशित करते रहे थे और इस कारण वे और भी अधिक पाठकों के कृपापात्र हुए। किपलिंग की प्रथम रचना 'प्लेन टेल्स फ्रॉम दि हिल्स' १८८८ ई० में प्रकाशित हुई। इसके पश्चात उन्होंने अनेक उपन्यास तथा कहानियों के संग्रह प्रकाशित किए। 'दि लाइट दैट फेल्ड' १८९१ ई० में तथा 'किम' १९०१ ई० में छपे गए। पाठशालाओं के जीवन से सम्बन्धित उनकी मौलिक रचना 'स्टॉकी एंड को' १८९९ ई० में, तथा मुक्तकाव्य 'जंगल बुक्स' १८९४-९५ ईसवी में छपी। अनिश्चित प्रान्त का कल्पना संसार उन्होंने 'पक ऑफ पुक्स हिल' में चित्रित किया।

किपलिंग के कथानक भारतीय जीवन से सम्बन्धित हैं। उन्हें इस जीवन का सर्वाधिक अनुभव था और भारत की पौराणिक गाथाओं को लेकर उन्होंने कुछ कविताएँ भी लिखी थीं। अंग्रेजी समाज के लिये भारतीय जीवन के विषय मौलिक तथा रोचक थे और किपलिंग ने अपनी अपूर्व वर्णन शैली में भारत के अनेक सामाजिक स्थलों का परिचय अपने देशवासियों को दिया। उन्होंने साम्राज्यवादी प्रचार के रूप प्रचारात्मक रचनाओं में ऐसे कथानक चुन कर दिए जो भारतवासियों की निर्बलता, मूर्खता, सेवा भक्ति तथा लोभ का परिचय देते थे। उन्होंने भारत को 'गोरे लोगों का भार' के रूप में चित्रित किया और साम्राज्यवाद की नींव दृढ़ करने का साहित्यिक प्रयत्न किया। सैनिक युग से उन्हें बड़ा प्रेम था और उनकी रचनाओं में इस स्थल से अनेक उपमाएँ ली गई हैं। किपलिंग की शैली में बाइबिल की सरलता है परन्तु उनके भाव तीक्ष्ण, उनका वर्णन स्पष्ट तथा वस्तु सामंजस्य अपूर्व है। यद्यपि वे सफल चरित्र-चित्रण नहीं कर सकते थे फिर भी उनकी रचनाओं में रोचकता विशेष है। उनकी श्रेष्ठता साम्राज्यवादी दुन्दुभि बजाने में है और यह दुन्दुभि उन्होंने अपनी कविताओं में अधिक परन्तु अपनी गद्य रचनाओं में कम बजाई।

गॉल्सवर्दी—किपलिंग के जन्म के दो वर्ष पश्चात् १८६७ ई० में

इंगलिस्तान में एक श्रेष्ठ कलाकार का जन्म हुआ। ये थे जॉन गॉल्स-वर्दी (१८६७-१९३३)। गॉल्सवर्दी ने १९०४ ई० में अपनी रचना 'आइलैन्ड फ़ैरिसीज़' प्रकाशित की। तत्पश्चात् उन्होंने एक गद्य महा-काव्य की रचना अनेक पुस्तक खण्डों में की। यह रचना 'फ़ोरसाइट सागा" नाम से प्रकाशित हुई। उन्होंने अनेक कहानी संग्रह भी प्रकाशित किये परन्तु सागा की समता कोई अन्य कृति नहीं कर सकती है।

गॉल्सवर्दी ने इस रचना में श्रेष्ठ मध्यम वर्ग का जीवन इस क्षमता से चित्रित किया है कि समालोचकों ने इसे विक्टोरिया के समय के अंग्रेज़ी समाज का आध्यात्मिक इतिहास मान लिया है। फ़ोरसाइट का वंश समाज का विस्तृत प्रतिबिम्ब है। इस वंश के पात्रों में सौन्दर्य तथा लक्ष्मी का द्वन्द्व निहित है। यही द्वन्द्व विक्टोरिया के समय के समाज का द्वन्द्व है। सोम्स, सम्पत्ति-लिप्सा का प्रतीक है तथा आइरीन सौन्दर्य की। इन दोनों का आध्यात्मिक संघर्ष इस रचना का प्राण है। गॉल्सवर्दी श्रेष्ठ कलाकार थे। उन्होंने इस संघर्ष को निष्पक्ष रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास किया है और इसी निष्पक्ष शैली में उनकी महानता है। परन्तु यह साहित्यिक सत्य है कि निरपेक्षिता तथा कलाकार में आत्मिक सम्बन्ध अवश्य होता है, इसी कारण हम कहीं-कहीं गॉल्सवर्दी का पक्षपात देख लेते हैं। विक्टोरिया के समय के पचास वर्ष का समाज गॉल्सवर्दी ने चित्रित किया है और इस चित्रण कला में कदाचित ही कोई अन्य लेखक उनकी समता कर सकता है।

जब गॉल्सवर्दी विक्टोरिया के समय के श्रेष्ठ समाज का चित्रण कर रहे थे उसी समय आरनल्ड बेनेट (१८६६-१९३१) इंगलिस्तान के एक विशेष प्रान्तीय जीवन का चित्र खींच रहे थे। व्यापारी वर्ग ने शिल्प को विशेष प्रोत्साहन दिया था जिसके कारण प्रत्येक प्रान्त में कुछ न कुछ शिल्पकला के कारखाने स्थापित हो रहे थे। 'फ़ाइव टाउन्स' में भी चीनी तथा मिट्टी के बर्तनों का व्यापार था और इसके साथ ही साथ एक नया शिल्प समाज निर्मित हो रहा था। इसी समाज का सफल चित्रण उन्होंने 'एना ऑव दि फ़ाइव टाउन्स' में किया है। 'दि ओल्ड वाइव्ज़ टेल्स' उनकी सबसे सुविख्यात रचना है जिसमें उन्होंने दो बहनों के विरोधी चरित्रों का अत्यन्त यथार्थ पूर्ण चित्रण किया है। तीन खण्डों की विस्तृत रचना में उन्होंने 'क्लेहैंगर' (१९१०), 'हिल्डा लेसवेज़'

मधुर तथा लय पूर्ण गाथा म करते है। जिस प्रकार चित्रकार ों के सामंजस्य से हृदयग्राही चित्र बना लेते हैं उसी प्रकार थॉमस चित्रण करते हैं। मानव चित्त-वृत्ति के उत्थान और पतन उनके उपन्यासों में चित्रित हैं। उनकी गद्य शैली में का धुरिमा तथा उनकी कला में अपूर्व विश्लेषणशक्ति है।

जॉर्ज मूर—इस समय अन्य युरोपीय लेखकों की छाया हित्य पर पड़ रही थी। इन प्रभावों से कदाचित् ही कोई लेखक र्ज मूर (१८५२-१९३३) पर फ्रांसीसी लेखकों का गम्भीर प्रभा । जोला, मोपांसा तथा गानकोर्ट्स की रचनाओं का उन्होंने ध्ययन किया था। उनका जन्म आयरलैन्ड में हुआ परन्तु उनकी रेग में हुई और अनेक उपन्यासों की कथावस्तु उन्हीं के जीवन सम्बन्धित हैं। 'कनफेशन्स ऑव ए यंग मैन' (१८८८), 'हेल परवेल' (१९११), 'साल्व' (१९१२), 'वेल' (१९१४), इन हैं। उनकी सुविख्यात तथा लोकप्रिय रचनाएँ केवल 'एस्थर (१८९४) तथा 'एलोईस एन्ड एबिलार्ड' (१९२१) ही हैं। उन्हों धार्मिक उपन्यास 'दि ब्रुक केरिथ' १९१६ में प्रकाशित किया जिस शैली सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण है।

डब्ल्यू० सॉमरसेट मॉम—डब्लू सॉमरसेट मॉम (१८ ना फ्रांसीसी लेखकों विशेषतः मोपासा से प्रभावित हैं। उनकी रच में लन्दन के सामाजिक जीवन के चित्र हैं जिनमें पहला 'लिज़ा लैम्बेथ' है जो (१८९७) ई० में प्रकाशित हुई। उन्होंने चीन मलाया के वातावरण और पृष्ठ भूमि को लेकर कई उपन्यास लि जिनमें 'दि ट्रेम्बलिंग लीफ़' (१९२१) तथा 'दि पेन्टेड वेल' (१९ सुविख्यात हुए। अनेक कहानी संग्रह तथा उपन्यास उन्होंने लि परन्तु समालोचकों ने उन्हें समुचित सम्मान नहीं प्रदान किया उनकी वर्णन शैली भावुकता से दूर है और उनका शब्द चयन पूर्ण है। उनकी श्रेष्ठता वास्तव में स्त्री पुरुष के प्रेम सम्बन्धी सं यथार्थ तथा नग्न चित्रण में है। कदाचित् इसी कारण वे अंग्रेज़ में लोकप्रिय नहीं हुए। मॉम अपनी रचनाओं में सुधार सन्देश नहीं परन्तु वे केवल जीवन के कटु से कटु अनुभवों को चित्रित करते हैं।

ई० एम० फ़ॉर्स्टर—समालोचकों ने ई० एम० फ़ॉर्स्टर

यथोचित सम्मान नहीं दिया है। यद्यपि उनकी रचना 'हॉवर्ड्स एन्ड' (१६११) लोक प्रिय थी परन्तु 'ए पैसेज टु इन्डिया' (१६२४) लिखने के पश्चात् ही उन्हें ख्याति मिली। उन्होंने भारतीय जीवन के सरल तथा रुचिकर स्थलों का चित्रण कर किपलिंग की साम्राज्यवादी रचनाओं की असत्यता प्रमाणित की है। फ़ॉर्सटर में अनुपम वर्णन कला है परन्तु वातावरण के प्रदर्शन में ही उनकी विशेषता है। यह सहानुभूति मूलक रचना शैली अन्य लेखकों ने भी ग्रहण की। इसी के आधार पर डा० एफ़० पॉविस ने अपनी रचना 'मिस्टर वेस्टन्स गुड वाइन' १६२८ ई० में तथा मिस रोज़ मैकाले ने 'आर्फ़न आइलैन्ड' १६२४ ई० में प्रकाशित की।

सर ह्यू वॉलपोल—इस समय के उपन्यासकारों की संख्या बहुत बड़ी है। कुछ अब भी लिख रहे हैं और उनकी ऐतिहासिक समीक्षा असम्भव है। इन लेखकों में शक्ति है और कला है परन्तु उनका साहित्यिक स्थान-निर्देश कठिन है। सर ह्यू वॉलपोल रचित 'दि वुडेन हॉर्स' तथा 'दि कैथीड्रल' (१६२२) में अंग्रेज़ी समाज के चित्र हैं और उनमें यथार्थ वादिता के साथ-साथ आदर्शवादिता भी है। १६३० ई० में उन्होंने एक ऐतिहासिक उपन्यास 'रोग हेरिस' की रचना की। वॉलपोल का ज्ञान विस्तृत है तथा उनकी वर्णन शैली आकर्षक है।

प्रीस्टली—१६२६ ईसवी में मिस्टर प्रीस्टली ने 'दि गुड कम्पैनियन्स' नामक ग्रन्थ से लोकप्रियता पाई। एक ही वर्ष पश्चात्, 'एन्जिल पेवमेन्ट' (१६३०) के प्रकाशित होते ही वे सर्वप्रिय लेखक हो गए। उन्होंने समकालीन जीवन के हृदयग्राही चित्र खींचे हैं। अपनी मानवता तथा राष्ट्रीयता के कारण उनकी रचनाएँ सर्वप्रिय हुईं। इस युग के पाठकों को प्रीस्टली ने बहुत साहित्यिक आनन्द प्रदान किया है।

डी० एच० लॉरेन्स—जिन लेखकों ने उपन्यास के कथानक को नवीनता प्रदान की उनमें सुविख्यात डी० एच० लॉरेन्स १८८५-१६३० हैं। उनका जन्म नॉटिंघम के खान खोदने वालों के घर में हुआ था और बाल्यावस्था से ही उनका जीवन त्रस्त रहा जिसका परिचय उन्होंने अपने ग्रन्थों में विशेष रूप से दिया है। उनके प्रकाशित तथा प्रतिबन्धित उपन्यासों में 'दि रेन-बो' (१६१५), 'विमेन इन लव' (१६२१), 'एरॉन्स रॉड १६२२, 'कंगैरू' १६२३, 'दि प्लूम्ड सरपेन्ट' १६२६ तथा 'लेडी चैटर्लीज़ लवर' १६२८ विख्यात हैं।

डी० एच० लॉरेन्स को खदानों में काम करने वालों के जीवन का विशाल अनुभव था। उनकी स्त्रियों, उनके बालकों, उनकी नारकीय अवस्था, उनकी क्रूरता तथा उनके पतित जीवन से वे भली-भांति परिचित थे। आधुनिक सभ्यता के पाखण्ड पूर्ण तथा कृत्रिम जीवन से उन्हें घृणा थी। वे इस सभ्यता को मानव पतन का कारण समझते थे। मनुष्यों की क्रूरता, कुटिलता तथा विषमता का कारण भी वे आधुनिक वातावरण को ही मानते थे। वे इस जीवन से उदासीन होते गये और प्रथम युरोपीय युद्ध में जब वे लड़ाई पर न जा सके तो और भी निराश हुए। उन्होंने रूढ़िवाद को निकाल फेंका और असमर्यादित प्रेम की सराहना की। अपनी सभी रचनाओं में उन्होंने शारीरिक सौन्दर्य तथा दैहिक प्रेम का विस्तार पूर्ण वर्णन किया है। प्रेम के अविरल प्रवाह में, स्वाभाविक रूप से डूबते तिरते स्त्री पुरुषों की भावनाओं को प्रदर्शित करने में उनकी विशेषता है। इस जीवन की विशालता तथा इसकी अपूर्व आध्यात्मिकता को उन्होंने दार्शनिक सिद्धान्त का रूप दिया। कदाचित ही किसी और लेखक ने शारीरिक सम्बन्धों का इतना नग्न चित्रण किया हो परन्तु इस नग्न तथा यथार्थ जीवन के चित्रण में उन्होंने दार्शनिकता तथा रहस्यवाद का पुट देकर अपने वर्णन को उच्च स्थान दे रखा है। यद्यपि लॉरेन्स ने अनेक उपन्यास लिखे परन्तु उनके उपन्यासों का ढांचा तथा उनके रूप में कोई मौलिकता नहीं है। उन्होंने बुद्धि तथा तर्क को स्वाभाविक प्रेम का शत्रु समझ कर दूर निकाल दिया और स्वाभाविक तथा शारीरिक प्रेम के भावस्थलों को स्पष्ट रूप में प्रकट किया। इन्हीं शारीरिक प्रेम स्थलों को स्पष्ट करने के कारण उनकी अनेक रचनाओं पर सरकारी प्रतिबन्ध लगाए गए। लॉरेन्स का प्रभाव अन्यान्य लेखकों पर दार्शनिक रूप से पड़ा है।

आल्डस हक्सले—आल्डस हक्सले भी डी० एच० लॉरेन्स की रचना से प्रभावित हुए हैं। इनकी बुद्धि अत्यन्त परिमार्जित थी तथा इनकी शिक्षा देश के श्रेष्ठ विद्यालयों में हुई थी। विक्टोरिया के काल के अनेक परिवर्तनों से प्रभावित होकर इन्होंने उपन्यास रचना आरम्भ किया। विज्ञान में इनको विशिष्ट विशेषज्ञ का सा ज्ञान प्राप्त था और एक सामाजिक व्यंग्यकार के रूप में इन्होंने इस ज्ञान को प्रस्तुत किया। इनकी रचनाओं में 'क्रोम यलो' (१९२१), 'एन्टिक हे' (१९२३),

श्रेष्ठता है।

ऑल्डस हक्सले के साथ-साथ [illegible] भी मुक्त हो गये थे। वे मानव [illegible] और उन भावना [illegible] प्रयत्न करते थे। मानव मस्तिष्क में [illegible] था। डॉरोथी रिचार्डसन ने 'प्वाइन्टेड रूफ्स' (१९१५) में यही शैली अपनाई। परन्तु उन्हें इतनी ख्याति नहीं मिली जितनी मिसेज वर्जिनिया वुल्फ को मिली। मिसेज वर्जिनिया की वर्णनात्मक कला उच्च कोटि की है। उन्होंने अपनी पुस्तकों में सरल कथानक चुना है और भावात्मक विश्लेषण अपूर्व रूप से किया है। उनकी श्रेष्ठ पुस्तकों में 'दि वॉयज आउट' (१९२५), 'नाइट ऐन्ड डे' (१९१९), 'जैकब्स रूम' (१९२२), 'मिसेज डैलोवे' (१९२५), 'टु दि लाइट हाउस' (१९२७) 'ओरलैन्डो' (१९२८), 'दि वेव्ज' (१९३१) तथा 'दि इयर्स' की गणना है।

मिसेज वुल्फ की विशेषता स्वाभाविक चरित्र-चित्रण है। वे चरित्र-चित्रण विस्तार तथा अपूर्व विश्लेषण से करती हैं। भावों के सूक्ष्म से

सूक्ष्म भागों पर उनकी बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि थी। उनके पात्रों का भाव विश्लेषण नाटकीय रूप से न होकर अत्यन्त स्वच्छन्द होता है। उनकी बुद्धि अत्यन्त सोद्देश्य थी तथा उनका वर्णन प्रभावोत्पादक होता था। उनकी कला में तल्लीन उपन्यास ऐसा था उन्होंने हुए। हास्य और भावुकता दोनों ही उनकी साहित्यिक कला में प्रचुर रूप में हैं। उनकी कला की समानता केवल जेम्स ज्वायस में ही सम्भावित है।

जेम्स ज्वायस—जेम्स ज्वायस कदाचित् इस शताब्दी के सबसे मौलिक कलाकार हैं। अपने साहित्यिक जीवन के पहले भाग में उन्होंने फ्रांसीसी लेखक मोपासाँ के समान छोटी-छोटी कहानियाँ प्रकाशित कीं। 'डबलिनर्स' उनका पहला संग्रह था जिसमें जीवन की प्रभावपूर्ण व्यंजना थी। उनकी कला विशेष की व्यंजना 'ए पोर्ट्रेट ऑव दि आर्टिस्ट ऐज़ ए यंग मैन' (१९१६), तथा 'यूलीसीज़' (१९२२), नामक ग्रन्थों में हुई है। सत्रह वर्ष पश्चात् उनकी वृहद् रचना 'फिनिगान्स वेक' १९३९ ई० में प्रकाशित हुई।

चौथा खण्ड

गद्य

पहला अध्याय

केक्सटन, टिन्डेल, बेकन, ब्राउन, ड्राइडेन

साधारणतयः समालोचकों ने साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब बतलाया है। यदि हम यह परिभाषा मान लें तो हमें गद्य को साहित्य में उच्च स्थान देना पड़ेगा। कविता में युग का प्राण, नाटक में युग का दायित्व तथा गद्य में जीवन के दिन प्रति दिन की चर्चा निहित रहती है। गद्य ही में हमारे राजनीतिक आदर्श, सामाजिक नियम, इतिहास और दर्शन रचे जाते हैं।

साहित्यिक कलाकारों ने गद्य को अनेक प्रकार से साहित्य रचना में प्रयुक्त किया है। गद्य में ही उपन्यास, नाटक तथा लेख लिखे गए हैं। अपनी विशेष प्रतिभा के अनुसार कलाकारों ने गद्य ही का माध्यम चुन कर रचनाएँ की हैं। कुछ लेखकों की गद्य शैली अलंकारपूर्ण, कुछ की सरल तथा अन्य लेखकों की विशेष प्रकार की शब्दावली से आभूषित रहती है। गद्य के विभिन्न साहित्यिक प्रयोगों के ही कारण उसकी प्रगति का ऐतिहासिक ब्योरा कठिन है। नाटक तथा उपन्यास खण्ड में हम गद्य की उपयोगिता की कहानी पढ़ चुके हैं। इस अध्याय में हम उन लेखकों तथा ग्रन्थों की समालोचना देखेंगे जिनसे गद्य शैली की प्रगति का आभास मिलेगा।

अनुवाद युग—ऐंग्लो सैक्सन काल से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध तक के लेखकों ने लैटिन भाषा के ही आधार पर रचनाएँ कीं। इस युग में कुछ लैटिन पुस्तकों की लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि उनका अनुवाद अनेक लेखकों ने किया। बोईथियस रचित 'कन्सोलेशन ऑफ फिलासफी' जो छठी शताब्दी में लिखी गई अल्फ्रेड को बहुत प्रिय थी। उन्होंने उसका अनुवाद भी किया था। कवि चॉसर ने भी इसी का अनुवाद किया था। महारानी एलिज़बेथ भी इस पुस्तक से अधिक [illegible]

से प्रभावित हुए थे और उन्होंने [illegible] । [illegible] की गयीं तक इस प्रकार की [illegible] लैटिन भाषा [illegible] कर साहित्य रचना करते थे। [illegible] मनुष्यों की भाषा [illegible] और साहित्य [illegible] अनुपयोगी तथा असंस्कृत समझते थे। [illegible] केवल अंग्रेज़ी भाषा की [illegible] रचना करते थे और [illegible] साहित्यिक रचनाएँ केवल लैटिन भाषा में ही सुरक्षित [illegible] हैं।

इस साहित्यिक प्रवृत्ति के कारण लैटिन भाषा ने [illegible] तक अपना प्रभुत्व स्थापित रखा। धीरे धीरे जब लोगों ने अंग्रेजी भाषा में रचनाएँ आरम्भ कीं तो आधार लैटिन हो गया। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुछ लेखकों ने अंग्रेजी गद्य शैली का बीज इंगलिस्तान विजय के पहले ही बो रखा था। नॉरमन तथा रोमन जाति के अधिकार जमाने के पहले भी दो प्रकार की गद्य शैली प्रचलित थी। एक थी एलफ्रिक की अलंकारिक शैली और दूसरी आल्फ्रेड की सरल शैली। आल्फ्रेड के समय में लिखित 'क्रॉनिकिल' की शैली सरल तथा सुबोध थी। यद्यपि 'क्रॉनिकिल' की रचना आल्फ्रेड के समय से आरम्भ हुई परन्तु आल्फ्रेड की मृत्यु के ढाई सौ वर्ष पश्चात् भी लेखकों ने अपनी रचनाएँ इसमें संकलित कीं। कुछ इतिहास लेखकों का मत है कि रोमन तथा नॉरमन अधिकार के पश्चात् अंग्रेजी गद्य शैली का अन्त हो गया। परन्तु साहित्यिक अन्वेषकों ने पता चलाया है कि उस समय भी अंग्रेजी की सरल गद्य शैली जीवित थी और केवल एलफ्रिक की अलंकारिक शैली ही का अन्त हुआ था। पीटरबरो के भिक्षुओं की सरल रचनाएँ इस धारणा की प्रमाण स्वरूप हैं।

सन्त जीवन चरित्रों की अनुवाद—लैटिन भाषा की लोकप्रियता का के साथ साथ फ्रेंच भाषा का भी आकर्षण लेखकों के लिए बहुत काल तक रहा। क्रमशः अंग्रेज़ी भाषा अपनाई जाने लगी यद्यपि उच्चकोटि की रचनाएँ इस अपरिमार्जित दशा में असंभव थीं। इस काल के लेखक इतिहास, शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें तथा नैतिक ग्रन्थ गद्य में ही लिखते रहे। तेरहवीं शताब्दी के 'क्रानिकिल' की रचना के बाद सन्तों का

जीवन-चरित्र गद्य में लिखा जाने लगा। सेन्ट कैथराइन, सेन्ट मार्गरेट तथा सेन्ट जूलियाना का जीवन चरित्र पहले पहल गद्य में लिखा गया ईसाई धर्म की भिक्षुणियों की शिक्षा के लिए 'ऐनक्रेन रिवूल' की रचना गद्य में हुई।

रेजिनाल्ड पीकॉक—पन्द्रहवीं शताब्दी में यह गद्य शैली प्रचलित रही और अनेक लेखकों ने गद्य को साहित्यिक माध्यम बनाया। रेजिनाल्ड पीकॉक ने १४५५ ई० में 'दि रिप्रेसर' की रचना सरल, सीधी भाषा में की और इसमें पादरियों के आत्म-रक्षण का प्रयास किया।

विलियम कैक्सटन—परन्तु इस शताब्दी की सबसे महत्व-पूर्ण घटना मुद्रण कला का आविष्कार था। १४७६ ईसवी में विलियम कैक्सटन ने मुद्रण कारखाना इंगलिस्तान में खोला। कैक्सटन मुद्रक ही नहीं वरन अनुवादक भी थे। उन्होंने अपने अनुवादों में अंग्रेज़ी भाषा की शब्दावली को बढ़ाने का प्रयत्न किया। उनके समय में अंग्रेज़ी भाषा की अनेक बोलियां प्रचलित थीं परन्तु साहित्यिक रूप किसी को नहीं मिल पाया था। कैक्सटन के अनुवादों तथा मुद्रण यन्त्र की उपयोगिता के कारण एक नवीन बोली का प्रचार बढ़ा जिसे हम शुद्ध अंग्रेज़ी भाषा अथवा सुसंस्कृत भाषा का नाम दे सकते हैं।

लॉर्ड बर्नर्स—कैक्सटन की प्रकाशित पुस्तकों में सर टामस मैलरी रचित मॉर्ट द आर्थर नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ था। मैलरी ने यह पुस्तक १४७० ई० में लिखी थी। इसकी शैली अत्यन्त सरल तथा आधुनिक पाठकों के लिए अत्यन्त सुगम है। मैलरी की भाषा तथा वाक्यों में गति है और उन्होंने मूल से इस पुस्तक का अनुवाद किया था। मूल ग्रंथ में मध्ययुग का प्रेम तथा आदर्शिक जीवन प्रतिबिम्बित है। लार्ड बर्नर्स ने भी इसी युग का चित्रण फ्रॉयसार्ट लिखित 'क्रानिकिल' के अनुवाद में किया। फ्रॉयसार्ट ने यह पुस्तक १५२० ईसवी में लिखी थी और चौदहवीं शताब्दी के सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन के अनेक स्थलों का यथार्थपूर्ण वर्णन किया था। मूल रूप में यह पुस्तक फ्रेंच भाषा में थी परन्तु बर्नर्स का अनुवाद सरल, सौन्दर्य-पूर्ण तथा सुसंगठित भाषा में है। यह अनुवाद साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है और हम इस पुस्तक से ही आधुनिक गद्य शैली का जन्म मानते हैं। इसी बीच में ईसाई धर्म पुस्तक बाइबिल का महत्वपूर्ण अनुवाद अनेक बोलियों में हो रहा था

और क्रमशः लेखक उस भाषा के समीप पहुँच रहे थे जिसमें इस पुस्तक की ख्याति शताब्दियों तक रही।

बाइबिल का अनुवाद-टिन्डेल तथा कवर्डेल—आधुनिक बाइबिल को सुसंस्कृत रूप देने का श्रेय दो लेखकों को है। ये थे विलियम टिन्डेल (१४९०-१५३६) तथा माइल्स कवर्डेल (१४८८-१५६८)। यद्यपि चौदहवीं शताब्दी में जॉन विक्लिफ़ ने बाइबिल का अँग्रेज़ी संस्करण निकाला था परन्तु उनका अनुवाद शब्दानुवाद था और उनकी भाषा कठिन तथा नीरस थी। कुछ साहित्यकारों ने विक्लिफ़ के अनुवाद की प्रशंसा कर उसे अँग्रेज़ी गद्य साहित्य के विकास में उच्चस्थल दिया है। परन्तु यह स्थान टिन्डेल तथा कवर्डेल को ही मिलना चाहिए था। टिन्डेल को धर्म विरोध के कारण १५५६ ईसवी में विलवोर्ड के समीप फाँसी दी गई और उनका शरीर अग्नि की शय्या पर सुलाया गया परन्तु उनकी साहित्यिक सेवा अमर है। १६११ ईसवी में जो बाइबिल का विश्वस्त संस्करण निकला उसका सारा श्रेय टिन्डेल को प्राप्त है। इस संस्करण की भाषा अत्यन्त परिमार्जित है और इसके वाक्यांश समन्वित तथा लयपूर्ण हैं। इस ग्रन्थ की शब्दावली लेखकों के आध्यात्मिक ज्ञान का पूरा परिचय देती है। माइल्स कवर्डेल ने टिन्डेल के अनुवाद कार्य को अपने सहयोग से पूर्ण किया और कदाचित् ही कोई अन्य पुस्तक हो जिसने अँग्रेज़ जाति पर इससे अधिक साहित्यिक प्रभाव डाला हो। इस पुस्तक से अँग्रेज़ जाति के सभी वर्गों के मनुष्य प्रभावित हुए हैं और इस [illegible] की सरल तथा ओजपूर्ण भाषा को साहित्यिकों ने मानव [illegible] के लिए प्रयुक्त किया है। अशिक्षितों को इस पुस्तक ने [illegible] विनिमय का सरल साधन दिया और साहित्यिकों ने [illegible] सुन्दर साहित्य सर्जना की है। कवियों के गीतों [illegible] इस पुस्तक ने अपूर्व रूप [illegible] है। [illegible] इतिहास में [illegible] स्थान है।

[illegible] साहित्य [illegible] में भाग लेकर धार्मिक [illegible] थी। [illegible] शताब्दी में [illegible] प्रचलित रही। इन

लेखों, विवादपूर्ण टिप्पणियों तथा आलोचनाओं से पुस्तकालय भरे पड़े हैं। परन्तु इन में केवल कुछ ही रचनाओं को साहित्यिक स्थान प्राप्त हुआ है।

फॉक्स—सोलहवीं शताब्दी की सबसे विख्यात रचना फॉक्स रचित 'बुक ऑव मार्टर्स' बहुत समय तक लोक प्रिय रही। इस रचना में फॉक्स ने प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के शहीदों की मृत्यु का अत्यन्त आवेशपूर्ण वर्णन किया है और कुछ वर्णनों में करुण रस का यथेष्ट प्रतिपादन हुआ है। प्रायः एक शताब्दी तक फॉक्स की यह पुस्तक प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय की मुख्य धर्मपुस्तक रही।

रिचर्ड हूकर—धार्मिक वितर्कों में भाग लेने वाले लेखकों में रिचर्ड हूकर की महत्ता अधिक है। रिचर्ड हूकर (१५५४-१६००) की प्रख्यात रचना 'लॉज़ ऑव इक्लीज़ियास्टिकल पॉलिटी' १५९४ ई० में प्रकाशित हुई। हूकर ने अपनी रचना में भावावेश दूर रखकर तार्किक रीति से अंग्रेज़ी गिरजाघरों के नियंत्रण तथा उनके सुचारु संगठन के सिद्धान्त बतलाए। उन्होंने अपने तर्कों में वादाविवाद के स्थान पर समझौते का दृष्टि कोण रखा और इसी धार्मिक समझौते में ही सम्प्रदायों का कल्याण बतलाया। जिस प्रकार उन्होंने धर्म में मध्य मार्ग ढूँढ़ निकाला उसी प्रकार शैली में भी मध्य मार्ग चुना। अपनी शैली में उन्होंने अंग्रेज़ी तथा लैटिन भाषाओं की केवल अच्छाइयों को अपनाया और उसे स्वाभाविक शक्ति प्रदान की। अंग्रेज़ी की सरलता तथा लैटिन भाषा के ओज को सम्मिश्रित कर उन्होंने एक प्रभावपूर्ण शैली बनाई। हूकर महान विद्वान तथा शान्ति पुरुष थे और स्वार्थहीन तथा सन्तोष प्रिय जीवन व्यतीत करते थे। यदि उनके आदर्शों को इंगलिस्तान ने अपनाया होता तो देश को उस समय आन्तरिक शान्ति मिलती और सम्प्रदायों में वैमनस्य के स्थान पर प्रेम और भ्रातृत्व की मर्यादा स्थापित होती। Sir Roger Ascham

सर रोजर ऐसकम—सोलहवीं शताब्दी वास्तव में नाटक का युग था। नाटक रचना तथा नाट्य कला इस युग में चरम सीमा पर थी। परन्तु कुछ साहित्यिक अंग्रेज़ी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाकर एक सुसगठित बोली की नींव डालने में दत्तचित्त थे। लेडी जेन ग्रे के शिक्षक सर रोजर ऐसकम की इच्छा थी कि इंगलिस्तान विद्या तथा ज्ञान के लिए समस्त यूरोप में आदर्श-रूप बन जाय और इसी ध्येय को सम्मुख रख कर उन्होंने

१५४५ ईसवी में 'टॉक्सोफ़ाइलस' की रचना की। इस पुस्तक में उन्होंने धनुर्विद्या पर कथोपकथन रूप में अपने विचार प्रगट किए। १५७० ईसवी में उन्होंने दूसरी पुस्तक 'दि स्कूलमास्टर' शिक्षण कला पर लिखी। यद्यपि ग्रीन, डेकर तथा अन्याय नाट्यकार तथा अन्यान्य लेखक गद्य का उपयोग करते रहे परन्तु गद्य में सार्वजनिक जीवन की अभिव्यक्ति अब तक न हो सकी थी। केवल इतिहास तथा अनुवाद ही गद्य के माध्यम से लिखे जाते थे।

Sir Thomas North

सर टॉमस नॉर्थ—ट्यूडर काल की सुविख्यात प्लूटार्क रचित पुस्तक 'लाइव्ज़ ऑव दि नोबिल ग्रीशन्स ऐन्ड रोमन्स' का अनुवाद १५७९ ईसवी में सर टॉमस नॉर्थ ने किया। शेक्सपियर ने अपने अनेक नाटकों के कथानक इसी अनुवाद से लिए हैं। फ़िलेमन हॉलैन्ड ने प्लिनी लिखित 'नैचुरल हिस्टरी' का अत्यन्त रोचक अनुवाद किया था और

फ्रैंसिस बेकन—सत्रहवीं शताब्दी के सुविख्यात गद्य लेखक फ्रैंसिस बेकन हैं। बेकन (१५६१-१६२६) वैज्ञानिक अन्वेषक थे और उनकी रचनाओं से धार्मिक रूढ़िवाद में विशेष परिवर्तन हुआ। परन्तु अपने निजी जीवन में बेकन स्वयं रूढ़िवादी थे। उनकी रचनाएँ मुख्यतः लैटिन भाषा में हैं परन्तु उनकी ख्याति विशेष उनके अंग्रेज़ी भाषा के लेखों में ही है। बेकन लैटिन को ही अमर भाषा मानते थे और इसी भाषा में अपनी रचनाओं के अमर होने का स्वप्न देखा करते थे। परन्तु अंग्रेज़ी भाषा ने ही उनकी कीर्ति को बढ़ाकर उन्हें गद्य साहित्य का महान कलाकार बनाया।

इंगलिस्तान के पुनर्जागरण काल के बेकन प्रतिनिधि स्वरूप हैं। वे विद्वान्, पदार्थवादी, षड्यन्त्रकारी तथा उच्चाभिलाषी के मनुष्य थे। उनकी लिखी हुई 'हिस्टरी ऑव हेनरी दि सेवन्थ' ने ऐतिहासिक रचना शैली को प्रभावित कर, सुगठित कथानक शैली का प्रचार किया। उनकी 'न्यू एटलान्टिस' पुस्तक अधूरी है जहाँ लेखक ने ज्ञानोपार्जन के सरल साधन पर विचार प्रकट किए हैं, परन्तु उनकी सबसे मानवता-पूर्ण रचना उनके लेखों का संग्रह है। उनकी शैली में अद्भुत कला है। संक्षेप में प्रचुर भावों तथा विचारों के प्रदर्शन में वे अद्वितीय थे। उनके प्रत्येक वाक्यांश तथा वाक्य विचार समूह हैं। उनके वाक्यांशों में आकर्षक समन्वय है और उनकी उपमाएँ अत्यन्त हृदयग्राही होती हैं।

सत्रहवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध का इतिहास, कैथलिक सम्प्रदाय पर प्यूरिटन सम्प्रदाय की विजय प्राप्ति का इतिहास है। इस समय देश में अनेक धार्मिक तर्क-वितर्क चल रहे थे, गृह-युद्ध हो रहा था और क्रमशः प्यूरिटन सम्प्रदाय शक्तिशाली होता जा रहा था। इस समय के गद्य लेखों तथा पुस्तकों में एक नवीन शैली की पराकाष्ठा पहुँच रही थी। इस शैली में स्वाभाविक सरलता के साथ ओज, धार्मिक नैतिकता के साथ गाम्भीर्य, तथा प्रभावात्मक गुरुता थी। इस गद्य की शालीनता तथा गम्भीरता कदाचित् किसी युग में पुनः नहीं आई। इस शैली के महान् कलाकार थे सर टॉमस ब्राउन, जेरमी टेलर तथा जॉन मिल्टन। Browne, J.

सर टॉमस ब्राउन—सर टॉमस ब्राउन (१६०५-८२) चिकित्सक थे और उनका निवासस्थान नॉरविच था। यद्यपि वे गृह-युद्ध के समय में युवा थे परन्तु वे उससे बिलकुल अप्रभावित रहे। उन्हें यथेष्ट

वैज्ञानिक ज्ञान था और वे बेकन की अन्वेषक विचार धारा से प्रभावित हुए थे। धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में उनकी विशेष रुचि थी और उन्होंने प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थों का समुचित अध्ययन भी किया था। सत्रहवीं शताब्दी के अन्य लेखकों की विचार धारा के समान ही ब्राउन की भी विचार धारा थी। वे सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तथा आधुनिक काल के आरम्भ की विचार धाराओं के संगम के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। यद्यपि उन्हें विज्ञान से प्रेम था तिस पर भी अन्धविश्वासों में उनकी रुचि थी। धर्म में वे सहनशीलता के प्रतिपादक थे परन्तु उन्हीं की गवाही के कारण अनेक असहाय बुड्ढी स्त्रियों को जादूगरनी समझकर अग्नि में भस्म कर दिया गया था। इसी द्वैत की उनके विचारों में प्रचुरता है परन्तु मृत्यु की अनिवार्य तथा विषाद-युक्त भावना उनके सम्मुख सदैव रहती है। यही विचार समूह उनके 'हाइड्रिओटैफ़िया आर अर्न बेरियल' के आधार हैं। अपना आध्यात्मिक जीवन चरित्र उन्होंने 'रिलिजिओ मेडिकाई' (१६४२) में प्रदर्शित किया है। ब्राउन की शैली में गाम्भीर्य तथा वाक्य सामंजस्य की अनुपम कला है। उनका शब्द चयन तथा वाक्यांश समन्वय लैटिन भाषा शैली के आधार पर है इसी से उसमें आत्मिक शालीनता तथा शाब्दिक गुरुता की मात्रा विशेष रूप से है। ब्राउन की कल्पना-पूर्ण तथा गम्भीर शैली की तुलना कदाचित् ही किसी अन्य लेखक से हो सके।

जेरेमी टेलर—जेरेमी टेलर भी ब्राउन के युग के ही लेखक तथा धर्म प्रचारक थे। उनके ओजपूर्ण धार्मिक भाषणों को जनता मन्त्र-मुग्ध होकर सुनती थी। उनकी ख्याति विशेष 'होली लिविंग' (१६५०) तथा 'होली डाइंग' (१६५१) नामक रचनाओं से है और इन दोनों पुस्तकों की सुबोध तथा मार्मिक शैली अनेक लेखकों के सम्मुख आदर्श रूप रही है। भाषा के मर्म को ये भली-भांति जानते थे और इसी मार्मिक तथा हृदयग्राही उपयोग के कारण उनके धार्मिक भाषणों तथा रचनाओं को अपूर्व ख्याति मिली।

जॉन मिल्टन—धार्मिक आकर्षण के कारण जेरेमी टेलर ने अपनी लेखनी उठाई थी परन्तु जॉन मिल्टन को गद्य-लेखन के लिए राजनीति ने उत्साहित किया। मिल्टन, ऑलिवर क्रॉमवेल के लैटिन मन्त्री थे और राजनीतिक विवादों का उत्तर देना ही उनका दायित्व था। उनके बहुत

से लेख केवल लैटिन भाषा ही में हैं, परन्तु उनके कुछ लोकप्रिय लेख शिक्षा तथा तलाक विषयों पर अंग्रेज़ी भाषा में भी हैं। उनके बहुत से लेखों की लोकप्रियता इस कारण लुप्त हो गई कि इन लेखों के विषय केवल समकालीन पाठकों को ही रुचिकर थे। १६४४ ई० में प्रकाशित 'एरियोपेजिटिका' में प्रतिबन्धरहित रचना तथा भाषण की व्यवस्था के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण लेख लिखा। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि मानव आत्मा पर से अनावश्यक प्रतिबन्ध हटा दिये जांय तो उसकी स्वाभाविक तथा आदर्श-पूर्ण प्रगति होगी। अनेक रचनाओं में अपना देश प्रेम उन्होंने प्रदर्शित किया है। उनकी भविष्यवाणी थी कि इंगलिस्तान का भविष्य में उत्थान होगा और वह राष्ट्रों में शिर मौर बनेगा। उनकी भाषा में सरलता कम है और उनके वाक्य समूहों में सौष्ठव नहीं है। इसका कारण लेटिन भाषा शैली का आधार था जो उन्होंने अंग्रेज़ी में प्रयोग किया परन्तु जब वे सामाजिक तथा धार्मिक वितर्कों पर अपने विचार प्रकट करते हैं तो उनकी शैली में अद्भुत शक्ति तथा उनके विचारों में अपूर्व नैतिकता प्रतीत होती है। Issac Walton

आइज़क वॉल्टन—'कम्प्लीट ऐंग्लर'—इन धार्मिक तथा नैतिक विचार धारा से पृथक् गद्य लेखकों में आइज़क वॉल्टन (१५९३-१६८३) अत्यन्त लोकप्रिय हुए। उन्होंने १६५३ ई० में 'कम्प्लीट ऐंग्लर' प्रकाशित कर मछली पकड़ने तथा उसके पकाने के कौशल के साथ-साथ इंगलिस्तान के ग्रामीण दृश्यों का वर्णन किया। उन्होंने डन, हूकर, जॉर्ज हरबर्ट जैसे लेखकों की जीवनी भी प्रकाशित की परन्तु उनके 'कम्प्लीट ऐंग्लर' की लोकप्रियता अद्वितीय रही और आधुनिक काल के भी पाठक उसके अध्ययन में सुरुचि रखते हैं।

१६६० ईसवी में, रेस्टोरेशन काल के आरम्भ से, अंग्रेज़ी भाषा में नवीन शैली का विकास तथा पोषण होता है। इस समय फ़्रांसीसी राज दर्बार से अंग्रेज़ी समाज प्रभावित था। इसी कारण फ़्रांसीसी लेखकों की सरल शैली का प्रभाव अंग्रेज़ी गद्य साहित्य पर पड़ा। यद्यपि अंग्रेज़ी गद्य में सरलता यथेष्ट थी जैसा कि बाइबिल से विदित है परन्तु इस काल के सभी लेखक प्रभावोत्पादन के लिए भाषा प्रयोग अधिक करते हैं और सुबोधता के लिए कम। टेलर, ब्राउन तथा मिल्टन की गद्य शैली दैनिक कार्य सम्पादन के लिए अनुपयुक्त थी और अब समय ऐसा

जॉन लॉक—हॉब्स के विपरीत सिद्धान्तों के मानने वाले जॉन लॉक थे। जॉन लॉक (१६३२-१७०४) की धारणा थी कि ज्ञान का मूलाधार अनुभव है और इस अनुभव और हॉब्स के निर्धारित शारीरिक प्रतिक्रियाओं में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। लॉक रचित 'ऐन एसे कनसर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैन्डिंग' का प्रभाव इंगलिस्तान तथा अमरीका दोनों पर पड़ा। यह ग्रन्थ दर्शन-शास्त्र के इतिहास में अत्यन्त महत्व-पूर्ण है और अँग्रेज़ी समाज की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का प्रति रूप है। हॉब्स तथा लॉक दोनों ही की भाषा सुगम है। हॉब्स की भाषा में अपूर्व सौष्ठव है और लॉक में केवल सरलता।

सैम्युएल पीप्स—इस समय का विज्ञान तथा दर्शन मानव-मस्तिष्क क्षेत्र का अन्वेषण कर रहा था। कुछ लेखकों ने अपने निजी जीवन पर दृष्टिपात कर अपने विचार की प्रगति का इतिहास लिखना आरम्भ किया। अनेक लेखकों के पत्रों तथा डायरियों से इस धारणा की पुष्टि होती है। कदाचित पहले-पहल यह साहित्यिक प्रवृत्ति अँग्रेज़ी भाषा में विदित हुई। इन लेखकों में सैम्युएल पीप्स महत्व-पूर्ण हैं। सैम्युएल पीप्स (१६३३-१७०३) की रचनाएँ स्वान्तः सुखाय थीं परन्तु वे सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के अत्यन्त महत्व-पूर्ण ग्रन्थकार हैं। यदि पीप्स लेखक न होते तिस पर भी उनका नाम अँग्रेज़ी साहित्य में प्रसिद्ध रहता। वे शाही नौ-सेना के प्रवर्त्तक तथा रॉयल सोसायटी के सभापति थे। उन्होंने अपनी डायरी में अपनी दिन चर्य्या, अपनी जीवन कहानी तथा अपने विचारों का स्पष्ट तथा नग्न प्रदर्शन अत्यन्त अकृत्रिम ढंग से किया है। पीप्स ने इस डायरी में अपने हृदय के अन्तर तम भावों का विश्लेषण किया है।

पीप्स के अतिरिक्त डायरी लेखक अन्य साहित्यकार भी थे जिन्होंने स्वान्तः सुखाय अपने जीवन-अनुभव पाठकों को दिये। पीप्स के अनन्य मित्र जॉन एवलिन (१६२०-१७०६) रॉयल सोसायटी के सदस्य, दरबारी तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनकी रुचि उद्यान तथा पुष्प वाटिकाएँ लगाने, भ्रमण करने तथा सभ्य समाज निर्माण करने में थी। उन्होंने भी अपनी जीवन चर्य्या का यथार्थ वर्णन अपनी डायरी में किया है।

एडवर्ड हाइड—१७०२ ईसवी में, एडवर्ड हाइड ने जो आगे चलकर अर्ल ऑव क्लैरेन्डन के नाम से विख्यात हुए, 'हिस्टरी ऑव

दूसरा अध्याय

जॉनसन, कोलरिज, डार्विन, रस्किन, चेस्टरटन

अठारहवीं शताब्दी में मनुष्यों का अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया था और जीवन और संसार के अनेक विषयों पर वे चिन्तन-शील हो रहे थे। साहित्य के सौभाग्य से एक सरल, सुबोध तथा प्रभावपूर्ण शैली का निर्माण हो चुका था जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय दे सकता था। दर्शन विचार में इंगलिस्तान के दार्शनिक अग्रगण्य हो रहे थे और मानव अनुभूति की धुरी पर नवीन दर्शन शास्त्र निर्माण भी कर रहे थे। साहित्य में रिचार्डसन तथा फ़ील्डिंग मानव अनुभूतियों का विवेचन उपन्यास में कर रहे थे। इतिहास-लेखक जाति की प्राचीन प्रतिष्ठा को इतिहास में जीवित कर रहे थे। दार्शनिक यथार्थ चिन्तन में तल्लीन थे। यह स्वाभाविक ही था कि धर्म ग्रन्थों तथा धार्मिक सम्प्रदायों पर लेखकों की तर्कपूर्ण दृष्टि पड़ती।

जोज़ेफ़ बटलर—ईसाई धर्म के लिए जोज़ेफ़ बटलर की रचनाएँ महत्वपूर्ण हुईं। जोज़ेफ़ बटलर (१६६२-१७५२) ने अपने धर्म ग्रन्थ 'दि एनैलजी ऑव रिलिजन' (१७३६) में धर्म की स्वाभाविक मर्यादा की रक्षा की।

बर्नार्ड मैन्डविल—नैतिक विषयों पर सबसे मौलिक रचना बर्नार्ड मैन्डविल (१६७०-१७३३) की थी। 'फ़ेबिल ऑव दि बीज़' (१७१४) ग्रन्थ में उन्होंने निजी जीवन की नैतिकता तथा जातीय जीवन की नैतिकता की विभिन्नताओं की कटु तथा व्यंगपूर्ण आलोचना की है।

जॉर्ज बर्कले—मैन्डविल के समान ही जॉर्ज बर्कले (१६८५-१७५३) ने भी जीवन की अनैतिकता से असन्तुष्ट होकर समाज सुधार की चेष्टा अपनी रचनाओं में की। वे आदर्शवादी थे और उन्होंने अमरीकी उपनिवेशों की अनैतिकता की भर्त्सना की। उन्होंने १७०९ में प्रकाशित अपनी सुविख्यात रचना 'ऐन एसे टुवर्ड्स ए न्यू थियरी ऑव विज़न' में यह सिद्ध किया कि पदार्थ संसार निस्सार है और मानव ज्ञान का मूलाधार केवल मानसिक विचार है। पदार्थवादी युग में बर्कले ने आदर्शवाद की महत्ता सिद्ध की। डेविड ह्यूम ने मनुष्य का मानसिक विश्लेषण किया और विशेष समय लगाकर 'एसेज़ कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डर

नवीन सिद्धान्त दिए। परन्तु उनका मुख्य ग्रन्थ अंग्रेज़ी भाषा का प्रथम कोष था जो 'डिक्शनरी' के नाम से विख्यात है। यह 'डिक्शनरी' उन्होंने आठ वर्ष के घोर परिश्रम से लिखी और यह ग्रन्थ आगामी युग के शब्द-कोष लेखकों के लिए आधार रूप रहा। शाब्दिक परिभाषा अत्यन्त दुस्तर कार्य है परन्तु जॉनसन की मानसिक शक्ति अपार थी। उन्होंने यह कोष अत्यन्त सफलता पूर्वक तैयार किया और अंग्रेजी भाषा के अनेक शब्दों की बड़ी स्पष्ट परिभाषाएँ बनाईं। १७८१ ईसवी में जॉनसन की तीसरी रचना 'दि लाइव्ज ऑव पोयेट्स' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में उन्होंने बोल चाल की भाषा में काउली से लेकर ग्रे के समय तक के कवियों का जीवन चरित्र लिखा। 'रैसेलस' नामक रचना का स्थान औपन्यासिक साहित्य में है परन्तु 'दि रैम्बलर' तथा 'दि आइड्लर' सामयिक पत्रों में उन्होंने सामाजिक, नैतिक तथा साहित्यिक लेख लिख कर गद्य साहित्य को प्रोत्साहन दिया। इन सामयिक लेखों में उन्होंने विशेषतः नैतिक विषय चुने और समाज सुधार की ओर संकेत किया। जॉनसन की विद्वता, उनकी पक्षपात विमुखता तथा उनकी शैली का अपूर्व उदाहरण उनकी रचना 'ए जर्नी टु दि वेस्टर्न आइलैन्ड्स ऑव स्कॉटलैन्ड' में है। यह रचना १७७५ ईसवी में प्रकाशित हुई थी।

जॉनसन की साहित्यिक प्रतिभा तथा उनकी अन्य श्रेष्ठ रचनाओं की इतिहासकारों ने यथोचित प्रशंसा नहीं की है। बॉसवेल की पुस्तक में हम केवल एक कटु तथा अव्यवहारिक मनुष्य का चित्र देखते हैं और उसके इस चरित्र ने उनके साहित्यिक महत्व को बहुत कुछ कम कर दिया है। उनकी शैली गौरवपूर्ण तथा वाक्यों में एक सार्थक सन्तुलन होता है जिसके कारण उनके गद्य में नवीनता निहित होती है। समालोचकों ने कुछ आडम्बर पूर्ण तथा कुतर्क पूर्ण वाक्यों को चुनकर उनकी आलोचना की है। जॉनसन अंग्रेज़ी साहित्य के एक स्तम्भ हैं। उनमें सामाजिक भावना, स्वाभाविक स्नेह, [illegible], धर्म तथा [illegible] गुणों का सम्मिश्रण है। कला में उनका आदर्श [illegible] था तथा साहित्य में नैतिकता। वे निष्पक्ष समालोचक थे और निर्भीकतापूर्वक उन्होंने साहित्यिक समालोचनाएँ लिखी थीं। शेक्सपियर की कला [illegible] के [illegible] किन्तु उनके [illegible] का आदर किया।

को ही वे मानव विचार का आधार मानते थे। मनुष्य और ईश्वर का सम्बन्ध उनकी दृष्टि में समाज का प्रथम नियम था और इस नियम का दिग्दर्शन अमूर्त सिद्धान्तों में न होकर सामाजिक रूढ़ि तथा आचार-विचार में होता है। समाज-शास्त्र में बर्क रूढ़िवाद के पक्षपाती थे। उनके विचारों में तर्क और अनुभव का सामंजस्य है परन्तु अनुभव को ही वे श्रेष्ठ समझते हैं। बर्क की शैली में बोल-चाल की भाषा का प्रवाह है और उनकी तर्क शक्ति में अद्भुत प्रौढ़ता है। पाठकों की ग्राह्यशक्ति पर वे अपनी रचनाओं में विशेष ध्यान रखते हैं और इसी कारण उनकी वक्तृताओं में आवेश तथा तर्क का सम्मिश्रण रहता है। जॉनसन तथा गिबन के विपरीत बर्क की शैली अधिक सुबोध तथा उनके शब्दचयन में साधारणतया लोकप्रिय शब्दों तथा विचारों का प्रभाव रहता है।

ग्रे, कूपर, जॉन वेज़ली, हॉरेस वॉलपोल—इस शताब्दी के गद्य साहित्य में साहित्यिकों के पत्र-व्यवहार तथा सामयिक मासिक तथा द्विमासिक पत्रों का श्रेष्ठ स्थान है। इन पत्रों में हमें समकालीन जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है और उनके आधार पर हम इस युग जीवन का अनुभव सरलता-पूर्वक कर सकते हैं। इस युग के लेखक अवकाश तथा विचार प्रेमी थे और अपने विचारों का आदान-प्रदान मित्र मण्डली अथवा पत्रों के माध्यम से करते थे। इस दृष्टि से यद्यपि टॉमस ग्रे ने कविताएँ कम रचीं परन्तु पत्र अनेक लिखे जिनमें हमें उनके मानसिक विषाद का विश्लेषण तथा उनकी अपार विद्वत्ता का परिचय मिलता है। विलियम कूपर के पत्र बड़े सजीव हैं तथा दिन प्रतिदिन के जीवन के अनेक अनोखे स्थलों का परिचय वे पाठकों को देते हैं। मेथडिस्ट आन्दोलन के प्रवर्तक जॉन वेज़ली ने अपनी 'डायरी' में अपने आन्दोलन का अत्यन्त मार्मिक विवरण दिया तथा हॉरेस वॉलपोल (१७१७-९७) ने अपने पत्रों में अठारहवीं शताब्दी के सम्पूर्ण जीवन का विस्तृत चित्रण किया है। उनके पत्रों में हास्य, व्यंग तथा सजीव निरीक्षण की श्रेष्ठ कला है।

लॉर्ड चेस्टरफ़ील्ड—हॉरेस वॉलपोल की तुलना में लार्ड चेस्टरफ़ील्ड के पत्र अधिक लोकप्रिय हुए। उनकी शैली परिमार्जित तथा अठारहवीं शताब्दी की नागरिकता के आदर्श हैं। वे पत्र उन्होंने अपने पुत्र को लिखे थे और उनमें श्रेष्ठ तथा सभ्य पुरुषों के आचार-विचार

के नियम प्रदर्शित किये हैं। युवाओं की शिक्षा के लिये शिष्टाचार तथा लोक-प्रियता के साधन तथा नियम उन्होंने रुचिकर भाषा में प्रस्तुत किये हैं।

जेम्स मैकफर्सन—'ऑसियन'—इस युग के साहित्य के पठन-पाठन से विदित होता है कि मनुष्यों में प्राचीन-काल के प्रति बड़ी श्रद्धा तथा काव्य-भावना थी। इसी भावना को साहित्य बद्ध करने के लिए जेम्स मैकफर्सन (१७३६-९६) ने 'दि वर्क्स ऑव ऑसियन' की रचना की। मैकफर्सन का 'ऑसियन' केवल कल्पित पुरुष था और लेखक ने अपनी अपूर्व कल्पना के आधार पर लय-पूर्ण गद्य में कथा खण्डों का वर्णन किया है। उन्होंने अपनी रचना को प्राचीन गॉल जाति की कविताओं का भावानुवाद प्रकाशित किया और इसके प्रमाण में मूल ग्रन्थ की भी कल्पना कर एक पुस्तक रची। मैकफर्सन की यह रचना केवल इंगलिस्तान में ही नहीं वरन् युरोप में भी लोकप्रिय हुई और फ्रांसीसी सेना नायक नेपोलियन बोनापार्ट तथा श्रेष्ठ जर्मन कवि गटे ने इसकी प्रशंसा की है। यह रचना गद्य-साहित्य की श्रेष्ठ निधि है और [illegible] में इसका निश्चित स्थान है।

कोलरिज—'बायोग्रेफिया लिटरेरिया'—रोमान्टिक काल की प्राण [illegible] में हुई इस युग के लेखकों ने श्रेष्ठ गद्य रचना [illegible] की। सैमुएल टेलर कोलरिज ने साहित्यिक समालोचना में [illegible] दार्शनिक विचार धारा का निर्माण किया। उनकी 'बायोग्रेफिया लिटरेरिया' दो भागों में प्रकाशित हुई और कोलरिज ने इस पुस्तक में [illegible] प्रकार पूर्ण शब्दों का निर्माण तथा [illegible] किया। [illegible] दार्शनिक सिद्धान्तों की व्याख्या उन्होंने सुव्यवस्थित [illegible] अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिक सिद्धान्तों पर [illegible]। उनका यह दार्शनिक निश्चय था कि [illegible] की क्रियात्मक-सृजन-शक्ति है। [illegible] था।

की अपूर्व शक्ति है परन्तु बायरन कीट्स से भी श्रेष्ठ हैं। बायरन के पत्रों में मानवता का कारुण्य, जीवन का ह्रास तथा उनके समाज-द्रोह की हृदयग्राही कथा है। कदाचित् निजी जीवन की मधुर व्याख्या में बायरन चार्ल्स लैम्ब से पीछे हैं। चार्ल्स लैम्ब (१७७५-१८३४) की कृतियां 'एसेज ऑव इलिया' (१८२३) तथा 'लास्ट एसेज़' (१८३३) अंग्रेजी पाठकों को विशेष प्रिय हैं।

निजी जीवन के वर्णन में चार्ल्स लैम्ब की अपूर्व रुचि थी। जो शैली मॉन्टेन ने फ्रांस में प्रचलित की थी उसी के आधार पर काउली ने इंगलिस्तान में रचना की और लैम्ब ने इस शैली की पराकाष्ठा दिखलाई। लैम्ब की लेख-शैली में अन्यान्य प्राचीन लेखकों की प्रतिच्छाया है और उन्होंने अत्यन्त सरल, सुगम, मानवी तथा कोमल भावों का चित्रण अपने लेखों में एक स्वाभाविक हास्यप्रियता से किया है। लैम्ब श्रेष्ठ समालोचक थे और उनमें काव्यालोचन की अनुपम शक्ति थी परन्तु वे गार्हस्थ्य जीवन में भाग्यहीन तथा दुःखी थे। उनकी बहन मेरी लैम्ब को उन्माद रोग था और उन्मादित अवस्था में उन्होंने माता की हत्या कर डाली थी और पिता पर भी आघात किया था। इस घटना ने लैम्ब के जीवन पर प्रगाढ़ विषाद की छाया डाल दी थी। वे अविवाहित रहे और अपना सम्पूर्ण जीवन बहन की सेवा सुश्रूषा ही में व्यतीत किया।

विलियम हैज़लिट—चार्ल्स लैम्ब की मित्र मण्डली में विलियम हैज़लिट गद्य के श्रेष्ठ लेखक हुए। हैज़लिट चित्रकार थे और उनकी रचनाओं पर चित्रकला का प्रभाव है। अपने लेखों में उन्होंने स्पष्टवादी तथा विचारपूर्ण शैली ग्रहण की। उनके जीवन में न तो लैम्ब की मानवता है और उनकी सुकुमार भावुकता। उनके विचारों में दृढ़ता और उनकी शैली में तीव्रता तथा तीक्ष्णता है। यद्यपि अपने राजनीतिक सिद्धान्तों में वे चरमकोटि के प्रजातन्त्रवादी थे परन्तु नेपोलियन का जीवन उनको प्रिय था और उन्हें उसमें विश्वास था। उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट चित्रण हमें उनकी रचना 'लिबर एमोरिस' (१८२३) में मिलता है। उनके लेखों के दो संग्रह 'दि स्पिरिट ऑव दि एज' (१८२५) तथा 'कैरेक्टर्स ऑव शेक्सपियर्स प्लेज़' उनकी आलोचक तथा विश्लेषण-शक्ति का पूर्ण परिचय देते हैं।

टॉमस डि क्विन्सी—हैज़लिट की तुलना में टॉमस डि क्विन्सी

संस्करण में प्रकाशित हुई और इसका विशेष प्रचार रहा। तत्पश्चात् 'ब्लैकवुड्स एडिनबरो मैगेजीन' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इन पत्रिकाओं ने गद्य साहित्य के श्रेष्ठ लेख प्रकाशित किए थे। राजनीतिक-दलों के मुख्य पत्र होते हुए भी इन पत्रों में जीवन के अनेक विषयों पर लेखक अपने विचार प्रगट करते रहे। सिडनी स्मिथ के व्यंगपूर्ण लेख 'एडिनबरो-रिव्यू' तथा सर वॉल्टर स्कॉट के जामाता जे० जी० लॉकहार्ट की उपहासपूर्ण आलोचनाएँ 'ब्लैकवुड' में प्रकाशित होती रहीं। इन पत्रों की सफलता के पीछे हमें उस समय के अंग्रेजी समाज की शिक्षा तथा आचार-विचार का चित्र मिलता है।

चार्ल्स - डार्विन—इस युग के साहित्यिक लेखकों की संख्या बहुत बड़ी है परन्तु उनमें युग प्रवर्तक रचनाएँ कुछ ही लेखकों की हैं। युग प्रवर्तक श्रेणी के लेखक चार्ल्स डार्विन थे। उनकी प्रतिभा न्यूटन तथा बर्क के समान थी और यद्यपि उनकी ख्याति विज्ञान क्षेत्र में अधिक है परन्तु अपनी सहज तथा सजीव शैली के कारण उनकी गणना श्रेष्ठ गद्य लेखकों में भी है। डार्विन (१८०६-८२) साहित्य के श्रेष्ठ कलाकार हैं। उनकी शैली में वैज्ञानिक स्पष्टता के साथ स्वाभाविक तर्क की सरलता है जिसमें वे अपने गम्भीर वैज्ञानिक अन्वेषण का साहित्य रचते हैं। 'दि ऑरिजिन ऑव स्पीशीज़' (१८५६) तथा 'दि डिसेन्ट ऑव मैन' (१८७१) नामक रचनाओं में उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों को ध्वस्त कर नवीन जीव-शास्त्र का निर्माण किया जिसका प्रभाव सम्पूर्ण युग के जीवन पर पड़ा है। इधर टी० एच० हक्सले (१८२५-९५) ने डार्विन की रचनाओं पर लिखी टिप्पणियों में उनके वैज्ञानिक मत का प्रतिपादन कर उनके तर्क को और भी ग्राह्य बनाया और उनके लोक प्रचार में सहयोग दिया। इस युग के विचार-शील शास्त्रियों में जेरेमी बेन्थम, टी० आर० मॉल्थस, जेम्स मिल, जॉन स्टुअर्ट मिल की रचनाएँ विख्यात हुईं परन्तु गद्य साहित्य की कला पर कदाचित् ही इन लेखकों ने ध्यान दिया हो। इनकी रचनाओं में सरलता तथा सुगमता है और इसी ध्येय को लेकर इन लेखकों ने रचनाएँ की थीं। इनमें जॉन स्टुअर्ट मिल की रचनाएँ शैली की दृष्टि से उत्तम हैं।

मेकॉले—श्रेष्ठ शैली की दृष्टि से टॉमस बैबिंगटन मेकॉले (१८००-५६) की रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। मेकॉले विद्वान पुरुष थे। उन्होंने

की ओर अग्रसर करा रहे थे उस समय ईसाई धर्म में भी नवीन जागृति हो रही थी। 'आक्सफ़र्ड मूवमेन्ट' की रूप रेखा इसी समय बन रही थी और जॉन हेनरी न्यूमन (१८०१-९०) उसका नेतृत्व ग्रहण कर रहे थे। हेनरी न्यूमन ने अपना आध्यात्मिक इतिहास 'एपोलोजिया प्रो वीटा सुआ' (१८६४) में बड़ी रोचकता से चित्रित किया है। न्यूमन, सुन्दर तथा कोमल शैली में अपनी रचना करते थे। उनकी भाषा में लोच तथा गुरुत्व दोनों का मनोहर सम्मिश्रण है और उनकी शैली में भावावेश तथा तर्क का अपूर्व सामंजस्य है।

जॉन रस्किन—उन्नीसवीं शताब्दी की आध्यात्मिक अपूर्णता के अनुभव करने वाले लेखकों में जॉन रस्किन (१८१९-१९००) इस शताब्दी की कला तथा साहित्य में श्रेष्ठ थे। उन्होंने 'मॉडर्न पेन्टर्स' (१८४३-६०) नामक ग्रन्थ में चित्रकार टर्नर के आदर्श समाज के सम्मुख रखे और सौन्दर्य की आत्मा को परखने की कसौटी प्रदान की। 'दि सेविन लैम्प्स ऑव आर्किटेक्चर' (१८४९) तथा 'दि स्टोन्स ऑव वेनिस' (१८५१-३) नामक पुस्तकों में शिल्प कला तथा मूर्ति कला पर उन्होंने अपने विचार प्रगट किये हैं। 'अन्टू दिस लास्ट' में उन्होंने व्यापारी समाज के पदार्थवादी सिद्धान्तों की कटु आलोचना कर अर्थ शास्त्र के कुछ नवीन तथा मानवी आदर्शों को स्थिर किया। रस्किन ने मजदूरों के लिये कुछ पत्र लिखे जिनका संग्रह 'फ़ार्स क्लविगेरा' में प्रकाशित हुआ और उनकी आत्म कथा 'प्रेटेरिटा' नाम से १८८९ ई० में प्रकाशित हुई।

यद्यपि रस्किन की लोकप्रियता कम हो गई है परन्तु अपने समय के वे श्रेष्ठ लेखक तथा कलाकार थे। मशीन तथा व्यापारी युग की कुरूपता, अमानुषिकता तथा स्वार्थ परायणता से विमुख होकर उन्होंने उत्तम कला, आध्यात्मिक तथा नैतिक जीवन के आदर्श, अँग्रेज़ी समाज को दिये। उनकी शैली सुन्दर शब्दों से आभूषित है, उनके वाक्यांश कला-पूर्ण तथा उनके वाक्य प्रभावपूर्ण हैं। उनकी शैली की गुरुता तथा विभव का कारण उनकी आदर्शवादी आध्यात्मिकता है।

मैथ्यू आरनल्ड—इंगलिस्तान के समालोचना साहित्य को मैथ्यू आरनल्ड (१८२२-८८) ने नये साहित्यिक आदर्श दिये। आर्नल्ड प्राचीन साहित्य के विद्वान थे और उन्होंने अँग्रेज़ी समाज की अनैतिकता तथा संकुचित धार्मिक सिद्धान्तों का घोर विरोध किया। अँग्रेज़ी समाज

को वे असभ्य समझते थे और जीवन में मधुरता तथा ज्योति का प्रचार करने में वे चिन्तन-शील रहे। साहित्यिक समालोचना पर आरनल्ड ने अनेक प्रभावपूर्ण लेख लिखे थे। उन्होंने नवीन कलादर्श निर्मित किये और साहित्य में पहले-पहल आलोचना की कला के सिद्धान्त निर्धारित किये। उनकी प्रतिभा साधारण अंग्रेज़ की तरह संकुचित नहीं थी वरन् उनका विचार क्षेत्र यूरोपीय था। उनकी शैली सुसंस्कृत तथा परिमार्जित है और परिभाषा निर्माण करने में वे श्रेष्ठ हैं।

वॉल्टर पेटर—आरनल्ड के ही समान वॉल्टर पेटर भी श्रेष्ठ आलोचक थे परन्तु उनकी प्रतिभा तथा शैली आरनल्ड से भिन्न है। उन्होंने कला के उच्च आदर्श की व्याख्या की और कला को समाज तथा नैतिक क्षेत्र से उठाकर उसका एक नया लोक निर्माण किया। उनके लिये जीवन की महत्ता सौन्दर्यानुभव में है और इसी में वे जीवन की पूर्णता तथा सफलता समझते हैं। 'कनक्लूज़न टु स्टडीज़ इन दि हिस्टरी ऑव दि रेनेसान्स' (१८७३) में पेटर ने अत्यन्त सौन्दर्य-पूर्ण शैली का निर्माण किया और शब्द तथा भाव चयन में उत्तम श्रेणी की सौन्दर्योपासना का प्रमाण दिया। 'मेरियस दि एपिक्यूरियन' (१८८५) नामक उपन्यास में उन्होंने अत्यन्त लाभप्रद अनुभवों की खोज की। साहित्य समालोचना के लिये उन्होंने अनेक लेख लिखे थे और कला को नैतिकता तथा समाज से मुक्त करने की चेष्टा की थी। जिस विषय पर इस युग की महान आत्माओं ने अपने दार्शनिक विचार प्रगट किये उसी विषय को पेटर ने तिलांजलि दे दी।

जी० के० चेस्टरटन—बीसवीं शताब्दी के गद्य साहित्य में बर्नार्ड शा तथा जेम्स ज्वायस का महत्व-पूर्ण स्थान है। इन लेखकों का गद्य उनके नाटकों तथा उपन्यासों में है। शेष गद्य लेखक या तो नवीन प्रभावों की खोज में हैं या पुराने कलाकारों के छाया मात्र हैं। जी० के० चेस्टरटन के समान लेखक कम हैं जिनमें साहित्यिक नूतनता तथा प्रभाव-पूर्ण प्रतिभा हो। चेस्टरटन १८७४ ईसवी में जन्मे और उनका प्रभाव गद्य शैली पर महत्वपूर्ण रहा है। वे आशावादी, प्रजातन्त्रवादी, कैथलिक सम्प्रदायवादी थे। यही आदर्श लिये वे साहित्य क्षेत्र में आये। उनकी शैली में विरोधी भावों के वाक्यांशों की प्रचुरता रहती है और

दृष्टि के आधार पर वे अपने पाठकों को आकर्षित करते हैं। उनकी रचनाओं में अनेक परिभाषाएँ तथा विचार स्थल हैं जिनमें असत्याभास के कारण हास्य प्रस्फुटित होता है। चेस्टरटन ने इस युग की गद्य शैली को बहुत अंशों में प्रभावित किया है। उनमें काव्य-प्रियता है परन्तु साहित्यिक हास्य के सम्बन्ध में चेस्टरटन का उल्लेख अनिवार्य है। यद्यपि हिलेयर बेलॉक, मैक्स बीर बाम, ई० वी० लूकस, एडवर्ड टामस, टॉमलिन्सन, ए० ए० मिल्ने, राबर्ट लिन्ड, ए० जी० गार्डिनर, ऐसे प्रतिभापूर्ण लेखक गद्य साहित्य को सुसज्जित कर रहे हैं परन्तु कदाचित् ही किसी में मौलिकता हो। जॉनसन तथा गोल्डस्मिथ, डिफ़ो तथा स्विफ्ट, स्टीविन्सन, लैम्ब, डि क्विन्सी, शा, ज्वायस तथा चेस्टरटन की रचनाओं से आधुनिक गद्य लेखक वर्ग प्रभावित है।

लिटन स्ट्रेची—यदि किसी गद्य लेखक ने मौलिक रचना शैली इस युग में निर्मित की तो वे थे लिटन स्ट्रेची (१८८०-१९३२)। उन्होंने जीवन चरित्र रचना में नवीन दृष्टिकोण रखा। 'एमिनेन्ट विक्टोरियन्स' (१९१८), 'क्वीन विक्टोरिया' (१९२१) तथा 'एलिज़बेथ ऐन्ड एसेक्स' (१९२८) में मौलिक रूप से वस्तु चयन कर उन्होंने आकर्षक शैली में रचनाएँ की हैं। उन्होंने पहले पहल जीवन चरित-लेखन में स्पष्टवादिता का उद्देश्य रखा और व्यंग का प्रचुर प्रयोग किया। उनके नायक, नायिका हमारे सम्मुख राजा, रानी तथा श्रेष्ठ व्यक्ति के विशेषणों से संयुक्त होकर नहीं आते वरन् वे आते हैं मनुष्य अथवा स्त्री रूप में। यही दृष्टिकोण इनकी युग प्रवर्तक विशेषता है।

आधुनिक साहित्य में क्रमशः प्राचीन पद्धतियाँ कुछ-लुप्त प्राय और कुछ पुनर्जीवित हो रही हैं। वक्तृताओं में बर्क, फ़ाक्स तथा शेरिडन की आवेशपूर्ण शैली लुप्त होकर पत्रकारों की सुलभ, सुगम तथा हास्ययुक्त शैली पुनर्जीवित हो रही है। समाचारपत्र तथा रेडियो ने गद्य शैली को पूर्णरूप से प्रभावित किया है। इस समय रूसी साहित्यकारों का प्रभाव अंग्रेजी कलाकारों पर विदित है। चेखव की शैली, जिसकी अनुवीक्षण शक्ति अपार प्रतीत होती है, अंग्रेजी लेखक हर्षपूर्वक अपना रहे हैं। क्रमशः अंग्रेजी साहित्याकाश विस्तीर्ण हो रहा है। रूस, फ्रांस, स्कैन्डिनेविया स्वीडेन, पोलैन्ड, जर्मनी के लेखकों ने अपनी ज्योतिर्मयी किरणें इस आकाश

पर फेंका है। सम्भव है किसी आगामी युग में अब सीमित राष्ट्रों की कल्पना समय के गर्त में खो जायगी और नवीन आदर्शों का जब निर्माण होगा तो साहित्य राष्ट्रीय न होकर अन्तर्राष्ट्रीय हो जायगा और मनुष्य जातीय न होकर अन्तर्जातीयता के विशाल वंश में नया जन्म लेगा।